Chapter-3

तृतीय-अध्याय

कृति -परिचय

"गोस्वामी हरिराय जी बहुमुखी काव्य-प्रतिभा के धनी थे। उनके काव्य में भक्ति तथा श्रृंगार के विविध आयाम विविध रूपों में विकसित हुए थे। - - - - गोस्वामी हरिराय जी जितने कुशल गद्यकार थे, उतने ही भावुक कवि भी थे"।

गोस्वामी हरिराय जी ने व्रजभाषा गद्य व पद्य में अनेक अनुपम कृतियों का सृजन किया है। गोस्वामी हरिराय जी की कुछ-क रचनाएँ ही प्रकाशित हैं। इसके अतिरिक्त जिन विद्वानों ने गोस्वामी हरिराय जी की रचनाओं के उल्लेख किये हैं, वे मात्र उल्लेख ही हैं, उन्होंने गोस्वामी हरिराय जी की उल्लिखित - रचनाओं के पूर्ण विवरण नहीं दिये। नागरी-प्रचारिणी सभा की शोध-पत्रिकाओं में अवश्य ही उनकी रचनाओं के विवरण दिए हैं, किन्तु सभा की शोध यात्रा में गो० हरिराय जी के समग्र ग्रन्थ नहीं आ पाये हैं। प्रस्तुत अध्याय में गोस्वामी हरिराय जी के प्राप्य सभी ग्रन्थों का पूर्ण विवरण दिया जारहा है।

गोस्वामी हरिराय जी के अधिकांश ग्रन्थ प्राप्त होते हैं, जिनमें बहुत से ग्रन्थ ऐसे हैं, जिनका विद्वानों ने यत्र-तत्र उल्लेख किया है। फिर भी कुछ ग्रन्थ ऐसे हैं, जिनका उल्लेख अन्यत्र देखने को तो मिलता है किन्तु वे ग्रन्थ या तो अप्राप्त हैं अथवा किन्हीं दूसरे ग्रन्थकारों के नाम से प्राप्त होते हैं। इस सन्दर्भ में विशेष महत्वपूर्ण बात यह है कि गो० हरिराय जी के कुछ और ग्रन्थ भी शोध में प्राप्त हुए हैं, जिनका इस शोध-प्रबन्ध से पूर्व कहीं भी उल्लेख देखने को नहीं मिलता।

इस प्रकार गोस्वामी हरिराय जी के समग्र ग्रन्थों का परिचय निम्नलिखित विभाजन के अनुसार प्रस्तुत किया जारहा है।

प्रथम-- वे ग्रन्थ जो उपलब्ध हैं और जिनका विद्वानों ने यत्र-तत्र उल्लेख भी किया है।

द्वितीय- वे ग्रन्थ जो शोध करते समय प्रथमबार प्राप्त हुए हैं, जिनका कहीं भी उल्लेख नहीं मिलता।

तृतीय-- वे ग्रन्थ जिनका मात्र उल्लेख ही प्राप्त होता है, किन्तु उपलब्ध नहीं हैं।

गोस्वामी हरिराय जी ने व्रजभाषा में गद्य एवं पद्य दोनों प्रकार के ग्रन्थों का सृजन किया है। सर्व-प्रथम उनके गद्य ग्रन्थों का परिचय प्रस्तुत किया जारहा है।

गद्य-ग्रन्थ:-

गो० हरिराय जी के हस्तलिखित ग्रन्थों की मूल-प्रतियां प्राप्त नहीं होतीं और न किसी ग्रन्थ में प्रतिलिपिकारों ने रचनाकाल का ही निर्देश किया है।

कुछ हस्तलिखित प्रतियों में तो प्रति का लिपिकाल भी ज्ञात नहीं होता। इस अवस्था में गोस्वामी हरिराय जी की रचनाओं का अकारादि-क्रम से ही विवरण देना अधिक समीचीन प्रतीत होता है।

विषय-वस्तु के आधार पर गोस्वामी हरिराय जी के प्राप्त ग्रन्थों को तीन रूप में विभाजित किया जासकता है।

-- भावना - प्रधान ग्रन्थ,
-- सिद्धान्त- प्रधान ग्रन्थ
-- तथा टीका - ग्रन्थ।

भावना प्रधान ग्रन्थों में विभिन्न विषयों की भावात्मक परिकल्पनाएँ की गई हैं। प्रत्येक लौकिक विषय को अलौकिक बनाए रखने के लिए प्रतीक - योजना का निर्वाह इन ग्रन्थों में प्रारम्भ से अन्त तक पाया जाता है। इनमें विवेच्य विषय को सांगरूपक, अन्योक्ति आदि अलंकारों द्वारा प्रभावक बनाए रखने का प्रयास किया गया है। वल्लभ -सम्प्रदाय में अन्य अनेक आचार्यों ने भी इस प्रकार के ग्रन्थ लिखे हैं, जिनमें गोस्वामी गोकुलनाथ जी, पुरुषोत्तम जी,(भावना वाले) श्री द्वारकेश जी, श्री गिरधर लाल जी आदि विद्वानों के विभिन्न ग्रन्थ हस्तलिखित रूप में उपलब्ध होते हैं।

भावना-प्रधान कृतियों का विवरण:- (प्राप्तोल्लिखित)

१- उत्सवभावना

यह ग्रन्थ प्रकाशित है।१ प्रकाशित संस्करण में यह ग्रन्थ एक संग्रह ग्रन्थ में समाविष्ट है। इस संकलन-ग्रन्थ में सर्व प्रथम व्रजभूषन कृत

---

(१) श्री वल्लभ विलास-(भाग-३।४) सम्पा० बाबू व्रजभूषन दास दीसावाल प्रका० बनारस सं० १९४५

'अलौकिक-पंचतत्व' नामक एक पद है, तत्पश्चात् गोस्वामी हरिराय जी कृत 'नित्य सेवा की रीति' नामक ग्रन्थ दिया गया है, तदनन्तर ब्रजभूषन दास विरचित 'वर्षोत्सव कौ प्रकार' अंकित है, इसके पश्चात् पृष्ठ ६२ से 'हरिराय जी कृत भावना' में 'उत्सव-भावना' नामक ग्रन्थ प्रारम्भ हुआ है। इसके अन्त में 'इति उत्सव-भावना श्री हरिराय जी कृत सम्पूर्ण' लिखा हुआ है। ग्रन्थ पृष्ठ ६२ से प्रारम्भ होकर पृष्ठ ८६ पर समाप्त होता है।

इस ग्रन्थ की अनेक हस्तलिखित प्रतियाँ भी देखने में आई हैं।[१] हस्तलिखित प्रतियों में स्पष्ट रूप से गोस्वामी हरिराय जी का रचयिता के रूप में उल्लेख हुआ है। इस ग्रन्थ की प्राचीनतम प्रति संवत् १८४० की प्राप्त हुई है, जिसमें गोस्वामी हरिराय जी का रचयिता के रूप में उल्लेख भी हुआ है।[२] श्री प्रभु-दयाल मीतल,[३] मिश्रबन्धु,[४] नागरी प्रचारिणी सभा की खोज रिपोर्ट[५] आदि में भी यह ग्रन्थ गोस्वामी हरिराय जी कृत माना गया है। मीतल जी तथा मिश्रबन्धुओं ने ग्रन्थ का उल्लेख मात्र ही किया है, जबकि खोज रिपोर्ट में ग्रन्थ का विवरण भी प्रस्तुत किया गया है।

---

(१) निजी पुस्तकालय, नाथद्वारा - वंध सं० ४६ पुस्तक सं० ४ ।
- सरस्वती भंडार, कांकरोली, - वंध सं० ९९ पुस्तक सं० १४ ।

(२) "'इति श्री' उत्सव-भावना' श्री हरिराय जी कृत सम्पूर्ण ।। शुभमस्तु कल्याणमस्तु । श्रीकृष्ण प्रशन्नोस्तु । संवत् १८४० मिति चैत्र सुदी १ काश्यांमध्ये"। -- निजी पुस्तकालय नाथद्वारा, वंध ४६ पुस्तक- ९

(३) गो० हरिराय जी का पद साहित्य, (प्रकाशित)- पृष्ठ- १७

(४) मिश्रबन्धु विनोद- (भाग-१) नाम सं० १०६ पृष्ठ-३४२

(५) हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण (भाग-२) पृष्ठ-६२९

गोस्वामी हरिराय जी के इस प्रकार के ग्रन्थ दो रूपों में प्राप्त होते हैं, प्रथम 'सेवा-प्रकार' तथा द्वितीय 'सेवा-भावना'। यह ग्रन्थ सेवा-भावना से सम्बन्धित है। इसमें वर्षोत्सव के प्रत्येक विषय की भावनाएँ समझाई गई हैं। इस ग्रन्थ में व्रजभाषा का परिष्कृत रूप प्रयुक्त हुआ है तथा शैली विवेचनात्मक है। कुछ अंश द्रष्टव्य हैं :-

> " और केसरी साड़ी स्याम कंचुकी को अभिप्राय यह जो केसरी साड़ी सो तो आप ही को अंग को वर्ण। और स्याम कंचुकी जो श्री ठाकुर जी को वर्ण। या ते यह जान्यो पड़त है सो ए दोऊ स्वरूप एक क्षण न्यारे नहीं। जन्म समय गूढ़ रीति सों प्राकट्य एक ठौ है। ताहाँ केसरी साड़ी रूप सो तो प्रसिद्ध। और स्याम चोली रूप श्री स्वामिनी जी के हृदय स्थायी श्री ठाकुर जी। सो तो गुप्त रीति सों विचारियो। १

ग्रन्थ में सम्प्रदाय के सिद्धान्तों का भावात्मक वर्णन किया गया है। वर्ष के सभी प्रमुख उत्सवों के भाव समान रूप से प्रस्तुत किये गये हैं।

२- <u>होल उत्सव की भावना</u>

यह ग्रन्थ वस्तुत: वर्षोत्सव ग्रन्थ का ही एक अंश है। वर्षोत्सव की प्राय: अधिकांश प्रतियों में यह ग्रन्थ समाविष्ट है। अन्य उत्सवों की अपेक्षा इस उत्सव का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। इसी कारण इस ग्रन्थ की पृथक् प्रतिलिपियाँ भी प्राप्त होती हैं।२ 'वसंत होरी की-

---

(१) निजी पुस्तकालय, नाथद्वारा -- वंध ४६ पुस्तक-४ पत्रा- ८

(२) लाला भगवान दास जी (नाथद्वारा वाले) का संग्रह-'गोकुलनाथ जी कृत 'रहस्य-भावना' के अन्तर्गत - पत्रा- ९६ से १०४ तक।

भावना' नामक प्रकाशित ग्रन्थ में भी यह सन्निहित है ।१ इसका प्रकाशित रूप अन्यत्र पृथक् रूप से प्राप्त नहीं होता । ग्रन्थ प्रामाणिक है । हस्त-लिखित प्रतियों में रचयिता के रूप में गो० हरिराय जी का उल्लेख मिलता है ।२ नागरी प्रचारिणी सभा की 'खोज में उपलब्ध हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों' के विवरण में 'भाव-भावना', गोकुल निवासी हरिराय कृत ग्रन्थ में 'होल उत्सव की भावना' की भी चर्चा की गई है । ३

ग्रन्थ में 'होल-उत्सव' नामक उत्सव के वर्णन में गिरिराज के आस-पास की प्रकृति का मनोरम चित्र प्रस्तुत किया गया है । भावात्मक कथनों का बाहुल्य है । भाषा परिष्कृत व्रजभाषा है ।

३- द्वादस निकुंज की भावना

इस ग्रन्थ का रचयिता गो० हरिरायजी को माना जाता है, किन्तु किसी भी हस्त-लिखित प्रति में ग्रन्थ-कर्ता के रूप में गोस्वामी हरिराय जी का उल्लेख नहीं मिलता । इसकी अनेक हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त हुई हैं ।४ श्री प्रभुदयाल मीतल ने अपने ग्रन्थ में इसका उल्लेख किया है ।५ मिश्रबन्धुओं ने

---

(१) 'वसंत होरी की भावना' सम्पादक निरंजन देव शर्मा, मथुरा - प्रका० संवत् २०२५, पृष्ठ- ११७ से १३४ तक ।

(२) 'इति श्री हरिराय जी कृत होल उत्सव की भावना सम्पूर्णम्' - -- सरस्वती भंडार, कांकरोली- बंध ६८, पु० ४, पत्रा- ६७

(३) पन्द्रहवां त्रै-वार्षिक विवरण सन् १९३२ से -३४ ई० पृष्ठ- १६६

(४) सरस्वती भंडार, कांकरोली - बंध सं० ६४, पुस्तक सं० ३ लाला भगवान् दास जी (नाथद्वारा वाले) के निजी संग्रह में भी ।

(५) गो० हरिराय जी का पद साहित्य, (प्रकाशित) पृष्ठ- १७

'आचार्य महाप्रभून की द्वादस वार्ता' नामक एक ग्रन्थ का उल्लेख किया है;[1] किन्तु इस नाम को उक्त ग्रन्थ के नाम से नहीं जोड़ा जासकता। इसके अतिरिक्त महाप्रभु जी की द्वादस वार्ता नाम से कोई अन्य ग्रन्थ देखने में नहीं आता।

ग्रन्थ में सम्प्रदाय के व्यवहृत वातावरण का तथा सिद्धान्तों का वर्णन है। कृष्णदास अधिकारी और गुसाईं जी के प्रसंग से वर्णन प्रारम्भ हुआ है। आचार्य महाप्रभु जी के सम्बन्ध में भी कुछ प्रभावक विचार प्रस्तुत किए गए हैं। सृष्टि संबंधी दार्शनिक विचार दिए गए हैं। इसे 'गुसाईं जी और दामोदर दास जी का संवाद' भी कहा गया है। ग्रन्थ संदिग्ध है।

४- <u>द्विदलात्मक स्वरूप विचार</u>

यह ग्रन्थ अभी तक अप्रकाशित है। इसकी अनेक हस्तलिखित प्रतियाँ प्राप्त हैं।[2] संवत् १८२९ की लिखी हुई इसकी प्राचीनतम प्रति प्राप्त हुई है, किन्तु उसमें रचयिता का कुछ भी उल्लेख नहीं मिलता, तथापि अन्यान्य हस्तलिखित प्रतियों में गोस्वामी हरिराय जी का उल्लेख किया गया है।[3] एक हस्तलिखित प्रति का विवरण द्रष्टव्य है :-

---

(१) मिश्रबन्धु विनोद- (भाग-१), नाम १०६, पृष्ठ-३४२

(२) सरस्वती भंडार, कांकरौली, वंध संख्या-१००, पुस्तक सं० १५
-वही, -- वंध संख्या-१०७, पुस्तक सं० १५
-गो० रतनलाल जी(वृन्दावन वाले) से प्राप्त 'संग्रह ग्रन्थ' के प्रारम्भिक पृष्ठों से।

(३) 'इति श्री हरिराय जी विरचितम् द्विदलात्मक को विचार समाप्तम्'।
- गो० रतनलाल जी की प्रति से ---।

द्विदलात्मक स्वरूप विचार । गो० हरिराय जी कृत, संग्रह ग्रन्थ में पत्रा ३१ से प्रारम्भ, कुल ८ पृष्ठों पर लिपिबद्ध, आकार ९।।।" + ६।", १३ पंक्तियाँ प्रति पृष्ठ, लिपिकाल संवत् १९१०, कागज देशी, लिपि पठनीय, व्रजभाषा ।

प्रारम्भ:- "कोटि कंदर्प लावण्य साक्षात्कार रसात्मक स्वरूपा आनंद मात्रकर पाद मुखोदरादि ऐसे जो पूरन पुरुषोत्तम जो प्रथम रसरूप आप ही हते, और श्री स्वामिनी जी के संग अन्तर लीला को अनुभव करते परि बाहर प्रगट न हते । सो एक समय वो पुरुषोत्तम के स्वरूप ने अपनो श्री मुख दरपन में देख्यो सो कोई एक अद्भुद् स्वरूप गर्वित नायक को सो देखि अत्यन्त अनिवर्तनीय लावण्यता और शोभा युक्त देखिकें अपने स्वरूप पें आप मोहित होइकें अपने हृदय में ते भाश्य अपने मुख द्वारा प्रगट कियो ।"

अन्तिम-अंश:- "लीला मध्य पाती सामग्री दासत्व रूप है । या हीं तें तादृशी वैष्णव को भगवद् रूप कहत हैं । इति श्री हरिराय जी विरचितं द्विदलात्मक स्वरूप विचार विवर्ण सम्पूर्ण ।"[1]

श्री प्रभुदयाल जी मीतल,[2] श्री द्वारकादास परिख[3] तथा मिश्रबन्धुओं[4] ने इस ग्रन्थ का

---

(१) सरस्वती भंडार, कांकरोली, वंध १०७, पुस्तक- १५ ।
(२) गो० हरिराय जी का पदसाहित्य(प्रकाशित) पृष्ठ- १७ ।
(३) महाप्रभु हरिराय जी नूं जीवन-चरित्र(गुजराती) पृष्ठ-११५ ।
(४) मिश्रबन्धु विनोद (भाग-१), नाम १०६, पृष्ठ-३४२ ।

उल्लेख किया है । इस ग्रन्थ का पूर्ण विवरण अन्यत्र नहीं मिलता ।

इस ग्रन्थ की भाषा संस्कृत - गर्भित है । यथा-- 'यह नून-भाव सर्वथैव संभवे नाँही ।' लेखक का अध्ययन-गाम्भीर्य स्थान-स्थान पर व्यक्त हुआ है, 'जो कीट - भ्रमर न्यायेन, अरु श्याम कटाक्ष के अखण्ड ध्यान में आपहू तद्रूपा स्याम स्वरूप होइ गए । अतएव श्री महाप्रभु जी ने प्रभु के आगे नमन समैं विज्ञप्ति कीनी है । - - - - यह विचार करनो ।'

ग्रन्थ में भगवान कृष्ण और स्वामिनी जी (राधा) के स्वरूप की शास्त्र सम्मत व्याख्या की गई है । लेखक ने दार्शनिक विवेचना से स्वमार्गीय सिद्धान्तों को पुष्ट किया है ।

५- <u>नवग्रह-आकार</u>

इसकी एक मात्र प्रामाणिक प्रतिलिपि प्राप्त हुई है ।१ आकार में यह ग्रन्थ छोटा है, विवरण इस प्रकार है :-

'नवग्रह आकार । गोस्वामी हरिराय जी कृत । संग्रह ग्रन्थ में पत्रा-१७ से प्रारम्भ होकर पत्रा २२ तक, कुल पृष्ठ- २२ । आकार ५।।"+ ६।।।" ।१४ पंक्ति प्रति पृष्ठ । कागज देसी-जीर्ण । लेखन अशुद्ध, किन्तु पठनीय । व्रजभाषा ।

प्रारम्भ:- 'श्रीकृष्णायनम: । अथ नव ग्रह लिख्यते । अथ पुष्टि मार्गीय वैष्णव को नव-ग्रह पूजन करिवे को प्रकार भगवदीयन को लौकिकन विग्रह कहा करि सके । भगवदीय तो श्री ठाकुर जी अंस हैं । श्री महाप्रभु जी जाके हर दसा में विराजत होंय

---

(१) सरस्वती भंडार, कांकरौली, वंध सं० ६१, पुस्तक-२ ।

तिनकौं अन्य सम्बन्ध कछू नाँय होय सो अपरस काहू वस्तु की न राखैं ।

अन्त में गोस्वामी हीरराय जी का उल्लेख इस प्रकार हुआ है, इती श्री हरिराय जी त्रत्य नवग्रहे के प्ररकार सामपुरण । श्री रस्तु श्री श्री` ।१ अन्य विद्वानों ने भी इस ग्रन्थ का उल्लेख किया है ।२

६- नित्यभावना

इस ग्रन्थ की एक प्रकाशित प्रति भी प्राप्त हुई है ।३ किन्तु इसमें विषय सामग्री नित्य-भावना से मेल नहीं खाती । प्रकाशित प्रति में अन्त में लिखा है `इति श्री हरिराय जी कृत नित्य सेवा भाव विज्ञप्ति संक्षेप करी लिख्यौ है ।` इससे आभाव होता है कि गोस्वामी हरिराय जी द्वारा लिखित नित्य सेवा विज्ञप्ति संस्कृत ग्रन्थ का संक्षिप्त व्याख्यानु-रूप ही है, यह ग्रन्थ किसी अन्य व्यक्ति द्वारा लिखा गया है ।

इस ग्रन्थ की कोई प्रमाणित प्रति प्राप्त नहीं हुई, जो प्रतियाँ प्राप्त भी हुई हैं उनमें लेखक का उल्लेख नहीं किया गया ।४

श्री प्रभुदयाल मीतल ने इसका `नित्य-लीला की भावना`

---

(१) सरस्वती भण्डार, कांकरोली, बंध सं० ९१ पुस्तक सं०- २

(२) -- गो० हरिराय जी का पद साहित्य- सम्पा० श्री प्रभुदयाल मीतल (प्रकाशित) पृ० १७

-- श्री महाप्रभु जी हरिराय जी नूं जीवन-चरित्र- द्वारकादास परिख पृ० ११५

-- हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण-(भाग-२),, ६२९

(३) वल्लभ-विलास (भाग-३।४), सम्पा० बाबू ब्रजभूषनदास दीसावाल, (प्रकाशन) बनारस, सं० १९४५ पृ० ४,से २८

(४) सरस्वती भंडार, कांकरोली, बंध सं० ९३, पुस्तक सं० ५ ।

नामसे उल्लेख किया है ।१ नागरी प्रचारिणी सभा की खोज रिपोर्ट में भी 'भाव-भावना' नामक ग्रन्थ के प्रसंग में 'नित्यसेवा-भावना' की भी चर्चा की गई है, किन्तु पूर्ण विवरण नहीं दिया गया । खोजकार ने इस ग्रन्थ का रचयिता गो० हरिराय जी को माना है ।२

नित्य-भावना के अन्तर्गत राधा-कृष्ण अर्थात् स्वामिनी जी तथा श्री जी के युगल स्वरूप का वर्णन किया गया है । इन स्वरूप की नित्य लीलाओं की भावमयी कल्पनाएँ की गई हैं । भाषा परिष्कृत है ।

७- भावना अथवा भाव-भावना

इस नाम से गोस्वामी हरिराय जी का कोई पृथक् ग्रन्थ नहीं मिलता । लिपिकारों ने उनके कुछ ग्रन्थों का एक ही ग्रन्थ में सम्पादन करके इस ग्रन्थ का नाम 'भावना' या 'भाव-भावना' रख दिया है । इस प्रकार के कुछ संग्रह ग्रन्थ दृष्टिगत हुए हैं, जिनमें 'स्वामिनी जी के चरण चिन्ह की भावना', वस्त्र आभरण को भाव, सामग्री करन की विधि, जप प्रकार आदि ग्रन्थों को सन्निहित किया गया है ।३ नागरी प्रचारिणी सभा की खोज रिपोर्ट में भी इसी प्रकार के संग्रह ग्रन्थ का विवरण दिया गया है ।४

यह ग्रन्थ स्वतंत्र ग्रन्थ न होकर संग्रह ग्रन्थ का एक अंश है । अत: इसका पृथक् विवरण देना आवश्यक नहीं है ।

---

(१) गो० हरिराय जी का पद साहित्य (प्रकाशित) पृष्ठ- १७
(२) हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों का पन्द्रहवाँ विवरण- सन् १९३२-३४ ई० पृ०१६७
(३) सरस्वती भंडार, कांकरोली, बंध सं० १५९, पुस्तक सं० ५ ।
(४) हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों का पन्द्रहवाँ त्रै-वार्षिक विवरण- पृ०१६७

८- भावना - त्रय

यह ग्रन्थ 'त्रिविध-भावना' नाम से भी प्रसिद्ध है। इसकी एक हस्त-लिखित प्रति देखने में आई है।१ ग्रन्थ में कहीं भी गो० हरिराय जी का उल्लेख नहीं हैं। ग्रन्थ के अन्त में लिपिकार ने दो दोहे दिये हैं, जिनमें लेखक की काव्य-व्यवहृत-छाप 'रसिक' सन्निहित है। प्राप्त हस्तलिखित प्रति का विवरण इस प्रकार है :-

त्रिविध भावना। कुल पत्रा ५२ (पृष्ठ- १०४), आकार ४।।"+ ८"। १७ पंक्ति प्रतिपृष्ठ। लिपि प्राचीन किन्तु पठनीय। यह एक वृहद् ग्रन्थ है, इसमें लेखक का कोई उल्लेख नहीं मिलता।

प्रारम्भ :- 'अथ त्रिविध भावना लिख्यते। श्री वल्लभ पद कमल वर कोमल कर मकरंद। जो से-व्है यह सबै, ब्रज मंडल आनन्द। श्री विट्ठलवर नाथ के चरण कमल की रेनु, ठेल है ब्रजनाथ की अधरामृत रस बेनु। अथ श्री मद्वल्लभाचार्य प्रकटित शुद्ध पुष्टि मार्ग की भावना प्रकटित करियतु हैं। तहां भावना तीन प्रकार की एक रूप की भावना। दूसरी लीला भावना। तामें स्वरूप भावना की स्वरूप विधि तो। प्रथम दसाविषयक। प्रभु के स्वरूप को प्रत्यक्ष नाहीं। केवल प्रभु के स्वरूप को श्रवण मात्र होत है।'

---

(१) सरस्वती भंडार, कांकरोली, बंध संख्या- ६३, पुस्तक सं० ८ ।

अन्त में:-

'त्रिविध भाव की भावना,
त्रिविध भाव फल रूप,
'रसिक' त्रिभंगी लाल के,
सुललित भाव - अनूप ।।

इति श्री आचार्य जी कृता त्रिविध भावना सम्पूर्णम् ।।१

वल्लभ सम्प्रदाय में 'आचार्य जी' का संबोधन सामान्यत: महाप्रभु बल्लभाचार्य जी के लिये ही प्रयुक्त होता रहा है, किन्तु व्रजभाषा का यह ग्रन्थ वल्लभाचार्य रचयित नहीं हो सकता । एक मात्र 'रसिक' शब्द को गोस्वामी हरिराय जी की 'छाप' स्वीकार करके ही इस ग्रन्थ को गोस्वामी हरिराय जी कृत नहीं कहा जासकता । अत: प्रमाणाभाव में ग्रन्थ को असंदिग्ध नहीं कहा जा सकता । श्री द्वारकादास परिख एवं श्री प्रभुदयाल मीतल ने अपने ग्रन्थों में दी गई गोस्वामी हरिराय जी के ग्रन्थों की सूची में भावना-त्रय नामक ग्रन्थ का भी उल्लेख किया है । २

जैसा कि प्रारम्भिक अंश से ही स्पष्ट है, ग्रन्थ में भावनाओं का वर्गीकृत रूप प्रस्तुत किया गया है ।

९- श्री यमुना जी की भावना

यह ग्रन्थ आकार में बहुत छोटा है । इसे ग्रन्थ की अपेक्षा लेख कहना ही अधिक समीचीन प्रतीत होता है । इस लघु ग्रन्थ की एक ही

---

(१) सरस्वती भंडार, कांकरोली, बंध संख्या- ९३ पुस्तक सं० ८ ।
(२) महाप्रभु हरिराय जी नूं जीवन-चरित्र - (गुजराती) पृष्ठ- ११५
-- गो० हरिराय जी का पत्र साहित्य (प्रकाशित) पृष्ठ १७

प्रति देखने में आई है। अन्त में 'श्री यमुनाजी की भावना श्री हरिराय जी कृत सम्पूर्ण समाप्त'।१ लिखा हुआ है। यह ग्रन्थ एक संग्रह ग्रन्थ में पिछले पृष्ठों पर लिपिबद्ध है। स्व० द्वारकादास परिख ने 'यमुना जीना धोल' नाम से इस ग्रन्थ का समर्थन किया है। २ खोज रिपोर्ट में यमुना जी के नाम शीर्षक-ग्रन्थ का उल्लेख हुआ है।३ मिश्रबन्धु विनोद में भी 'यमुनाजी के नाम 'ही नाम दिया गया है।४ वस्तुत: यह सभी नाम एक ही ग्रन्थ से संबंधित हैं।

जैसा कि नाम से स्पष्ट है, इसमें यमुना जी के सम्बन्ध में लेखक ने अपनी पावन-भावनाएँ व्यक्त की गई हैं।

१०- बसंत होरी की भावना

यह ग्रन्थ प्रकाशित है।५ इस ग्रन्थ की अनेक हस्तलिखित प्रतियाँ भी दृष्टिगत हुई हैं।६ यह गोस्वामी हरिराय जी की प्रामाणिक रचना है। सभी हस्तलिखित प्रतियों में रचयिता के रूप में गोस्वामी हरिराय जी का उल्लेख हुआ है।

---

(१) लाला भगवान् दास जी (नाथद्वारा वाले) के निजी संग्रह में।
(२) महाप्रभु हरिराय जी नुं जीवन-चरित्र-(गुजराती) पृष्ठ- ११६
(३) हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों का संक्षिप्त विवरण (भाग-२) पृष्ठ- ६२६
(४) मिश्रबन्धु विनोद (भाग-१) नाम १०६, पृष्ठ- ३४२
(५) प्रकाशन- बजरंग पुस्तकालय गोवर्धन ग्रन्थ माला, (मथुरा) संवत्- २०२२
(६) -- सरस्वती भंडार, कांकरोली, (बंध-संख्या- १०६) पुस्तक सं० ३
-- हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों का पन्द्रहवाँ त्रै-वार्षिक विवरण-१६६
-- लाला भगवान् दास जी के निजी संग्रह से (नाथद्वारा वाले)।
-- सरस्वती भंडार, कांकरोली, बंध संख्या- ६८, पुस्तक-४, पत्रा- ५४।

अन्य भावना ग्रन्थों की भाँति गोस्वामी हरिराय जी ने इस ग्रन्थ में भी भावात्मक कल्पनाओं के माध्यम से साम्यभावों की सुन्दर योजना की है।

श्री द्वारकादास परिख ने होरी भावना नाम से इसका उल्लेख किया है।१ श्री प्रभूदयाल मीतल ने इसका उल्लेख `बसंत होरी की भावना` नाम से ही किया है।२ खोज रिपोर्ट में भी इसका समर्थन किया गया है।३

ग्रन्थ में वसंत एवं होरी त्योहार का सांस्कृतिक वर्णन किया गया है। स्थान-स्थान पर वल्लभ सम्प्रदाय के सिद्धान्तों की भी विवेचना की गई है। ग्रन्थ आकार में बड़ा है।

११- वर्षोत्सव की भावना

यह ग्रन्थ सर्वथा अप्रकाशित है। इसकी अनेक हस्तलिखित प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं।४

विगत पृष्ठों पर `उत्सव-भावना` नामक ग्रन्थ का विवरण दिया जा चुका है। नाम साम्य होने पर भी यह ग्रन्थ `उत्सव-भावना` से सर्वथा भिन्न है। `उत्सव-भावना` में समग्र उत्सव की लीलाओं की भावात्मक अभिव्यंजना की गई है, जबकि `वर्षोत्सव की भावना` में वर्ष में होने वाले सभी उत्सवों की सेवा का प्रकार तथा उन सेवाओं के

---

(१) महाप्रभु हरिराय जी नूं जीवन-चरित्र, (गुजराती), पृष्ठ- ११६
(२) गो० हरिराय जी का पद साहित्य, (प्रकाशित), पृष्ठ- १७
(३) हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण, (भाग-२), पृष्ठ- ६२९
(४) -- सरस्वती भण्डार, (कांकरोली) वंध सं० ९८, पुस्तक सं० ४
-- निजी पुस्तकालय, (नाथद्वारा), वंध सं० ८१, पुस्तक सं० ४
-- हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों का पन्द्रहवाँ त्रै-वार्षिक विवरण पृष्ठ- १६५

भावों को भी व्यक्त किया गया है । 'वर्षोत्सव की भावना' उत्सव-भावना से बड़ा ग्रन्थ है । प्रत्येक उत्सव का इस ग्रन्थ में विस्तार से वर्णन किया गया है ।

इस ग्रन्थ की प्राय: सभी प्राप्त हस्तलिखित प्रतियों में रचयिता के रूप में गोस्वामी हरिराय जी का उल्लेख मिलता है । एक प्रति का परिचय निम्नलिखित रूप में द्रष्टव्य है :-

वर्षोत्सव की भावना । गोस्वामी हरिराय जी कृत । कुल पत्रा १२४ (पृष्ठ- २४८) । कागज देसी- प्राचीन । लेखन सुस्पष्ट । ग्रन्थ आकार में बड़ा है ।

प्रारम्भ:- 'अब वरस दिना के उत्सव को भाव लिख्यते । भाद्रपदी ।।७।। को पाग पिछोरा कसूमल धरिये । याते जो अनुराग सूचक है । जन्म के पहले ही तथा सप्तमी को श्रृंगार अष्टमी के मंगला ताई रहे । सो कसूमल सुभ को सूचक है । सगरे ब्रज भक्तन कों अनुराग रूप राज-भोग में कछू सामिग्री विशेष काहे ते श्री यसोदा जी की कूंख में प्रभु हैं ।'

उत्सव के भाव तथा सेवा-प्रकार का पूर्ण विधान वर्णन इसमें देखा जासकता है । बीच-बीच में अवसर के पद भी दिए गए हैं । गो० हरिराय जी ने उदाहरण स्वरूप अन्य कवियों के पद अधिक दिए हैं । उनके स्वयं के पद भी यत्र-तत्र प्राप्त होते हैं । विजय-दशमी, वरषा, रथयात्रा आदि के प्रसंग में लेखक ने अपने पद उद्धृत् किये हैं ।

इस ग्रन्थ में जन्मअष्टमी को भाव । मेष बारवे को भाव

पालना की सामग्री । राधा-अष्टमी को भाव । दान एकादसी । बामन द्वादसी । साँझी की भावना । विजेदसमी । सरद पूनो । धन तेरस , रूप चौदस । दीपावली । हठरी । चौपड़ । अन्नकूट । गोवर्धन-पूजा । गोपाष्टमी । अक्षय नवमी । प्रबोधिनी । बसंत । होरी । डोल । यमुना जी । द्वितीया पाट । राम नवमी । आचार्य जी को उत्सव अखै तीज । नृसिंग चतुर्दसी । गंगा जी को भाव । गंगा यमुना को समागम । यमुना वैभव । स्नान - जात्रा । रथ-जात्रा । बरसारितु हिंडोरा । राखी । स्वरूप की भावना । जप प्रकार । स्वामिनी जी के चरण चिन्ह की भावना । सामग्री करन की विधि आदि विविध प्रसंगों पर भाव - विचार प्रस्तुत किए गए हैं ।

अन्तिम अंश :- 'इति श्री गोकुल नाथ कृत तथा श्री हरिराय जी कृत भाव-भावना सम्पूर्णम् । यह पुस्तक लिखी लिखिया पनालाल सनाढ्य ब्राह्मण वैष्णव ने ठिकानो श्री गोकुल में अनाज की मंडी में । जो कोई बांचे तिनको हमारी जै श्रीकृष्ण बंचना जी । मिती माह वदी ।६। संवत् १९५९, श्री वल्लभ कुल को साष्टांग दंडवत्'।१

ग्रन्थ प्रामाणिक है । उपर्युक्त पुष्पिका में गोकुल नाथ जी का भी उल्लेख हुआ है, उसका प्रमुख कारण यह है कि उक्त संग्रह ग्रन्थ में प्रारम्भ के २४ पत्राओं तक गोकुल नाथ जी कृत 'नित्य-सेवा श्रृंगार की भावना' नामक ग्रन्थ दिया गया है । इसी कारण अन्त में पुष्पिका में लिपिकार ने गोकुल नाथ जी का नाम दे दिया है । संग्रह ग्रन्थ 'भावना' तथा भाव-भावना दोनों नामों से प्राप्त होता है ।

---

(१) सरस्वती भंडार-- कांकरोली - बंध सं० ९८, पुस्तक सं० ४ ।

खोज-रिपोर्ट में भी इस ग्रन्थ का उल्लेख मिलता है ।१ मिश्रबन्धुओं ने गोस्वामी हरिराय जी के ग्रन्थों की सूची में यह नाम दिया है । २

१२- श्री स्वामिनी जी के चरण चिन्ह की भावना

यह ग्रन्थ प्रकाशित है ।३ प्रकाशित संस्करण में गो० गोकुलनाथ जी का ग्रन्थकार के रूप में उल्लेख हुआ है, किन्तु यह तथ्य भ्रामक है । इसका कारण यह है कि यह ग्रन्थ एक संग्रह ग्रन्थ में भी समाविष्ट है । हम पिछले पृष्ठ पर कह आए हैं कि यदि गोस्वामी गोकुल नाथ जी का एक ग्रन्थ गोस्वामी हरिराय जी के अन्य ग्रन्थों के साथ सम्पादित हो जाता है तो लिपिकार अन्त में 'इति श्री गोकुल नाथ जी तथा श्री हरिराय जी कृत ' लिख देता है । 'स्वामिनी जी के चरण चिन्ह की भावना' भी भाव-भावना नामक ग्रन्थ में सन्निहित है । प्रकाशित प्रति के सम्पादक ने उक्त ग्रन्थ सम्भवत: उसी प्रति से लिया होगा । गो० गोकुलनाथ जी का प्रथम उल्लेख होने के कारण सम्पादक ने भी गो० गोकुलनाथ जी को ही ग्रन्थ का रचयिता स्वीकार कर लिया होगा । ग्रन्थ एक वैष्णव भक्त द्वारा सम्पादित है, जिसका नाम प्रकाशित प्रति में नहीं दिया गया और वह प्रकाशित प्रति भी बिना मूल्य वैष्णवों में वितरित करने के उद्देश्य से ही प्रकाशित कराई गई थी । अत: स्पष्ट

---

(१) हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण (भाग-२) पृष्ठ- ६२६
(२) मिश्रबन्धु विनोद (भाग-१), नाम १०६ , पृष्ठ- ३४२
(३) 'चरण चिन्ह की भावना' सम्पादक एक वैष्णव प्रकाशन-जबलपुर ।

है कि सम्पादक न तो शोध-कर्त्ता था और न हीं साहित्य-मर्मज्ञ ।

वस्तुत: यह ग्रन्थ गोस्वामी हरिराय जी कृत ही है । नागरी प्रचारिणी सभा के खोज कर्त्ताओं ने भी इसे हरिराय जी कृत माना है ।१ इसके अनन्तर अन्य हस्तलिखित प्रतियों में भी गोस्वामी हरिराय जी का नाम मिलता है ।

प्रकाशित संस्करण के प्रारम्भिक पृष्ठों पर नगधर कृत 'चरन चिन्ह वर्णन' नामक एक पद्य दिया गया है, इसमें उन्नीस दोहे हैं, अन्तमें कवि लिखता है :-

चरण चिन्ह ग्रन्थहि रच्यौ, भाव सहित हरिराय ,
ताकी भाषा करि कही, नगधर सुमति बनाय ।२

इससे आभास होता है कि गोस्वामी हरिराय जी ने ही 'चरण चिन्ह की भावना' का सृजन किया होगा । नगधर भट्ट ने इसका पद्यानुवाद किया है । गोस्वामी हरिराय जी ने संस्कृत भाषा में 'भगवच्चरण चिन्ह वर्णन' नामक ग्रन्थ लिखा है,३ किन्तु स्वामिनी जी के चरण चिन्ह की भावना से सम्बन्धित कोई ग्रन्थ संस्कृत में नहीं लिखा, इससे ज्ञात होता है कि नगधर भट्ट ने गोस्वामी हरिराय जी की व्रजभाषा रचना का ही पद्यानुवाद किया है ।

---

(१) हिन्दी ग्रन्थों का पन्द्रहवाँ त्रै-वार्षिक विवरण- पृष्ठ-१६७
(२) चरण-चिन्ह की भावना, सम्पादक एक वैष्णव,(प्रकाशन)-जबलपुर,-८
(३) गो० हरिराय जी का पदसाहित्य,(प्रकाशित), - पृष्ठ- १२

'चरण-चिन्ह की भावना' नामक एक अन्य ग्रन्थ काका-वल्लभ कृत भी प्राप्त होता है। यह महाशय गोस्वामी हरिराय जी के अनन्य भक्त थे।१ इन्होंने अपने इसी ग्रन्थ में स्थान-स्थान पर गो० हरिराय जी का उल्लेख किया है, --

'पद १। मूल। ख्याल। षोडसचिन्ह वखानु चरन कमल नर अंतर आनौं। अन्यनपासन आसन मानौ। श्री हरिराय प्रताप यह जानौ। श्री हरिराय बुधिबल जव सरन मोकूं दियौ। ब्रह्मवानी कही मुखते ग्रन्थ एक अद्भुत कियौ।२

'काका वल्लभ' कृत इस ग्रन्थ की हस्तलिखित प्रति में भी लिपिकार ने ग्रन्थकार के स्थान पर गोस्वामी हरिराय जी का ही नाम दिया है।३ किन्तु यह ग्रन्थ हरिराय जी के ग्रन्थ से सर्वथा भिन्न है और इसके रचयिता वल्लभ दास जी ही हैं।४ इस ग्रन्थ से इतना अवश्य स्पष्ट होता है कि वल्लभ दास जी ने गोस्वामी हरिराय जी रचित चरण चिन्ह की भावना के आधार पर ही यह ग्रन्थ रचा होगा। एक हस्तलिखित प्रति में प्रारम्भ इस प्रकार है :-

'अब श्री हरिराय जी कृत भाव-भावना लिख्यते। सो पुष्टि-मार्ग में जितनी क्रियायें हैं जो सब स्वामिनी जी के भाव ते हैं।

---

(१) देखिये-- इसी प्रबन्ध का द्वितीय अध्याय।
(२) सरस्वती भंडार, कांकरौली, बंध संख्या- २३ पुस्तक सं० ७।
(३) 'इति श्री हरिराय जी कृत चरण चिन्ह षोडस संपुर्ण,' वही।
(४) 'दास वल्लभ' भक्तजन कौं चिन्ह षोडस भावहि', वही, वंध-८।

ताते मंगला चरण गावें। प्रथम श्री स्वामिनी जी के भाव ते चरण कमल कों नमस्कार है। तिनकी उपमा देवे कूं मन दसों दिसा दौड्यौ परन्तु कहूं पायौ नहीं। पाछें श्री स्वामिनी जी के चरण कमल कौ आश्रय मैं कियौ।'१

नागरी प्रचारिणी सभा के खोज-कर्त्ताओं ने गोस्वामी हरिराय जी को इस ग्रन्थ का टीकाकार माना है। उनके अनुसार गोस्वामी गोकुलनाथ जी ने यह ग्रन्थ संस्कृत में लिखा है, गोस्वामी हरिराय जी ने व्रजभाषा में इसकी टीकानुरूप व्याख्या की है। २ श्री द्वारकादास परिख तथा श्री प्रभुदयाल मीतल ने भी इस ग्रन्थ का कर्त्ता गोस्वामी हरिराय जी को माना है।३

गो० हरिराय जी ने इस ग्रन्थ में राधा के चरणों में अंकित चिन्हों के विभिन्न काल्पनिक विचार प्रस्तुत किए हैं, इस संदर्भ में उन्होंने अनेक उपमाओं का भी सुन्दर निरूपण किया है। भाषा साहित्यिक है। सम्प्रदाय के सिद्धान्तों का भी विवेचन किया गया है। ग्रन्थ सर्वथा प्रामाणिक है।

१३- <u>सात बालकन की भावना</u>

इस ग्रन्थ की दो हस्तलिखित प्रतियां कांकरौली से प्राप्त हुई

---

(१) सरस्वती भंडार, कांकरौली वंध सं० १५६, पुस्तक सं० ५।

(२) 'लाला जी के चरण चिन्हों की भावना मूल संस्कृत में गोकुलनाथ जी की मिली है, हरिराय जी ने इसकी भाषा की है'।
-- हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों का पन्द्रहवां त्रै-वार्षिक विवरण, -- पृष्ठ- १६७

(३) -- महाप्रभु हरिराय जी नुं जीवन-चरित्र, (गुजराती), पृष्ठ- ११६
-- गो० हरिराय जी का पद साहित्य, (प्रकाशित), पृष्ठ- १७।

हैं ।१ प्रतियों में रचयिता के रूप में किसी का उल्लेख नहीं मिलता । इन दोनों प्रतियों में से एक प्रति अपूर्ण है और दूसरी पूर्ण तथा व्यवस्थित । व्यवस्थित प्रति में गुसाईं जी के सात पुत्रों का अतिशयोक्तिपूर्ण यश-वर्णन है । ग्रन्थ में एक स्थान पर लिखा हुआ है कि 'चाचा गोपीनाथ जी आपु कथा बाँचते । श्री घनश्याम जी व्याख्यान करते'।२ गोपीनाथ जी गुसाईं जी के ज्येष्ठ भ्राता थे । इस प्रकार 'चाचा गोपीनाथ जी' का सम्बोधन उनके भतीजे गो० गोकुल नाथ जी ही प्रयुक्त करते होंगे यह सम्भावना अधिक है । पितामह भ्राता के लिए भी 'चाचा' सम्बोधन व्रज बोली में प्रयुक्त होता है, कालान्तर में नई पीढ़ी के वंशज भी उसी व्यवहृत सम्बोधन को प्रयुक्त करने लगते हैं । इससे सम्भावना यह है कि गो० हरिराय जी ने अपने पूर्वज आचार्य को प्रचलित सम्बोधन से ही सम्बोधित किया हो ।

यदि इस ग्रन्थ का रचयिता गो० गोकुलनाथ जी को मान भी लें तो एक स्थान पर प्रयुक्त इस वाक्यांश की संगति नहीं बैठ पाती :- 'अतएव श्री गोकुल नाथ जी कहते । दादा जाने का सो कौऊ न जानैं'।३

इस वाक्य से ध्वनित होता है कि यह रचना गोस्वामी गोकुलनाथ जी के पश्चात् की रचना है । 'चाचा गोपीनाथ जी', इस

---

(१) सरस्वती भंडार, कांकरोली, वंध सं० १००, पुस्तक सं० ६
-- वही, -- वंध सं० १०५, पुस्तक सं० १
(२) वही , पत्रा- ६६ पर ।
(३) वही ।

सम्बोधन से ज्ञात होता है, कि यह ग्रन्थ 'आचार्य मंडल' में से ही किसी ने लिखा होगा। क्योंकि गोस्वामी गोकुल नाथ जी के पश्चात् गोस्वामी हरिराय जी ही सम्प्रदाय में सर्वोत्कृष्ट विद्वान हुए हैं, अत: ये स्वाभाविक अनुमान है कि गोस्वामी हरिराय जी ने ही यह ग्रन्थ लिखा होगा। गोस्वामी हरिराय जी वार्ता साहित्य के प्रसिद्ध लेखक हैं, इन्होंने इस विषय में अनेक ग्रन्थ लिखे हैं, तथापि यह पूर्ण रूप से नहीं कहा जासकता कि गोस्वामी हरिराय जी ही इस ग्रन्थ के रचयिता थे, क्योंकि इस तथ्य की पुष्टि में कोई भी अन्य विश्वस्त प्रमाण नहीं मिल पा रहे।

श्री द्वारकादास परिख एवं श्री प्रभुदयाल मीतल ने इस ग्रन्थ का कर्त्ता गोस्वामी हरिराय जी को माना है।१ इन्होंने अपने ग्रन्थ की सूची में ये नाम दिए हैं, किन्तु इस प्रकार के नामों का इन्होंने कहीं भी परीक्षण नहीं किया है।

प्राप्त प्रति का विवरण इस प्रकार है:-

'सात बालकन की भावना। संग्रह ग्रन्थ में संपादित-पत्रा ७२ से प्रारम्भ (कुल पृष्ठ-१२) आकार ६।।" + ५"। २३ पंक्तियां प्रति पृष्ठ। लेखन प्राचीन है। पठनीय।२

कुछ अंश द्रष्टव्य हैं:-

---

(१) महाप्रभु हरिराय जी नूं जीवन-चरित्र, (गुजराती), पृष्ठ- ११६
-- गो० हरिराय जी का पद साहित्य, (प्रकाशित), पृष्ठ- १७

(२) सरस्वती भंडार, कांकरौली, वंध संख्या- १०५, पुस्तक संख्या- १
-- पत्रा ६७ से प्रारम्भ।

'श्री वल्लभ, श्री विट्ठल, श्री गिरधर यह मूल वस्तु है। इन समान और बालक कौ कहनौ परमापराध है। अग्नि ते दीपक प्रगट प्रकाश श्री गुसाइ जी तिनतैं दीपक। प्रगट प्रकाशन रूप श्री गिरधर जी। पुष्टि मार्गीय लीला रसात्मक-ज्ञान-प्रकाशन रूप श्री गिरधर जी बड़े कहौं शास्त्र के वक्ता या ही ते भए। अतएव श्री गोकुलनाथ जी कहते। दादा जानैं सो कोऊ न जानैं'।१

१४- सात स्वरूप की भावना

इस ग्रन्थ की अनेक हस्तलिखित प्रतियाँ प्राप्त हुई हैं।२ इन प्रतिलिपियों में से किसी भी प्रति में ग्रन्थकार के रूप में गो० हरिराय जी का उल्लेख नहीं मिलता। किसी प्रति में गिरधर जी कृत लिखा है तो किसी में वल्लभाचार्य कृत। किसी-किसी प्रति में लेखक का नाम ही नहीं दिया गया।

यह ग्रन्थ 'भाव-भावना' नामक एक संग्रह ग्रन्थ में सम्पादित है। 'भाव-भावना' में सम्पादित सभी ग्रन्थ गोस्वामी हरिराय जी कृत हैं। इसके प्रारम्भ में, अथ श्री हरिराय जी कृत 'भाव-भावना' लिख्यते।' लिखा हुआ है।३ इसी तरह की एक प्रति का विवरण नागरी प्रचारिणी सभा का खोज-रिपोर्ट में भी दिया गया है।४ इससे यह सम्भावना होती

---

(१) सरस्वती भंडार, कांकरोली, वंध १०५, पुस्तक-१, पत्रा ६७ से

(२) निजी पुस्तकालय नाथद्वारा, वंध ४१, पुस्तक-१, ग्रन्थ गिरधर जी कृतहै।
-- लाला भगवान् दास जी (नाथद्वारा वाले) की प्रति, संग्रह पृष्ठ- १३६
-- सरस्वती भंडार, कांकरोली, वंध-९८, पुस्तक-४ (पत्रा-१२० से)
-- वही। -- वंध-१२७ पुस्तक-२

(३) वही, -- वंध-१५९ पुस्तक-५

(४) हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों का पन्द्रहवां त्रै-वार्षिक विवरण, पृ० १६७

है कि यह ग्रन्थ गोस्वामी हरिराय जी कृत हो सकता है। प्रमाणाभाव में यह रचना हरिराय जी कृत है यह कहना संदेह से परे नहीं है।

ग्रन्थ में वल्लभ सम्प्रदाय के सात प्रमुख देव विग्रहों की भावस्तुति प्रकट की गई है। इनमें नवनीत प्रिया, मथुरा नाथ, विट्ठलनाथ, गोकुलनाथ, गोकुल चन्द्रमा, मदनमोहन, की भावनाओं का वर्णन है।

द्वारकादास परिख तथा प्रभुदयाल जी मीतल द्वारा प्रदत्त सूची में भी इस ग्रन्थ का उल्लेख है।१ इन विद्वानों ने केवल नामोल्लेख ही किया है, अन्यत्र कहीं भी इस ग्रन्थ का विवरण नहीं मिलता है।

१५- सेवा भावना

इस नाम की दो हस्तलिखित प्रतियां कांकरोली से प्राप्त हुई हैं। इनमें वल्लभ-सम्प्रदाय के वैष्णवों हेतु 'नित्य-कृत्य' संबंधी उपदेश दिए गए हैं। इस नाम से एक और ग्रन्थ गो० गोकुलनाथ जी के नाम से भी प्राप्त होता है, किन्तु वह इस ग्रन्थ से पृथक है। इस ग्रन्थ की सभी प्राप्त हस्तलिखित प्रतियों में से केवल एक प्रति में ही गो० हरिराय जी का रचयिता के रूप में उल्लेख मिलता है।२ अन्य प्रतियों में रचनाकार का उल्लेख नहीं किया गया।३ नागरी प्रचारिणी सभा की खोज रिपोर्ट में भी गो० हरिराय जी को रचयिता के

---

(१) महाप्रभु श्री हरिराय जी नूं जीवन-चरित्र(गुजराती), पृष्ठ-११६
-- गो० हरिराय जी का पद साहित्य,(प्रकाशित), पृष्ठ- १७
(२) सरस्वती भंडार,कांकरोली बंध १०४ पुस्तक- ७
(३) वही, --- बंध १०५ पुस्तक- १

रूप में स्वीकार किया गया है ।१ एक प्रति का विवरण द्रष्टव्य है:-

सेवा-भावना । गोस्वामी हरिराय जी कृत । कुल पत्रा ९ (पृष्ठ-१८) । आकार ५।।।"+ ६।।।" । १३ पंक्तियाँ प्रतिपृष्ठ । लिपि प्राचीन किन्तु पठनीय ।

प्रारम्भ:- 'प्रात: काल उठि भगवान्नाम लेकरि पाछे देह कृत्य कर जब परदेशाधिकन में साक्षात् सेवा न होय तब केवल भावना करनी । व्रजभक्त अपने घर घर प्रति जागि गृह मंडन करि सर्वत्र दीप करि मंगल आर्ती के दीप हू सिद्ध करि भगवद् गुणगान करत उच्चस्वर सों सर्वाभरण भूषित होइ वियोगा-वस्था भूलि ठाकुर घर में भाव रीति सों विराजत हैं यह जान भगवदर्थ नवनीतादि स्विर्थ दधि मंथान करत हैं ।'

अन्त:- 'रात्रि लीला भावनीय नाँही ताते नाँही लिखत गोप आक्ति के अनुभाव करि गुण-गावत हैं । ज्यों दिवस में व्रजभक्त । दोहा । यहै भावना रीति यह पूरण सब संक्षेप, जाके मन यह नित बसै । सु रहै जगत निर्लेप । श्री वल्लभ पद भावना, होइ कदाचित सिद्ध । साधन को बल

---

(१) हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थों का पन्द्रहवाँ त्रै-वार्षिक विवरण --(नागरी प्रचारिणी सभा, काशी), पृष्ठ-१६७

कहू न हीं, महा अलौकिक रिद्ध । इति श्री
हरिरायाविरचिता सेवा-भावना सम्पूर्णम् ।१

ग्रन्थ अप्रकाशित है । वैष्णवों के लिए नित्य-सेवा-विधान का इसमें वर्णन किया गया है । जब सेव्य-स्वरूप पास न हों, तब परदेश में नित्य क्रियाओं के लिए निर्देश हैं । स्व० द्वारकादास परिख तथा श्री प्रभुदयाल मीतल ने भी इस ग्रन्थ का उल्लेख किया है ।२ गो० हरिराय जी की एक संस्कृत रचना भी इसी नाम से प्राप्त होती है ।३

१६- श्रीनाथ जी की भावना

यह ग्रन्थ प्रकाशित है ।४ इसकी हस्तलिखित प्रतियाँ भी उपलब्ध हुई हैं ।५ सभी प्राप्त प्रतियों में गोस्वामी हरिराय जी का रचयिता के रूप में उल्लेख किया गया है । गोस्वामी हरिराय जी ने इस ग्रन्थ में शंका समाधान की शैली को अपनाया है ।

---

(१) सरस्वती भंडार, कांकरौल, बंध सं० १०४, पुस्तक सं० ७ ।
(२) -- महाप्रभु श्री हरिराय जी नूं जीवन-चरित्र (गुजराती), पृष्ठ- ११६
-- गोस्वामी हरिराय जी का पद साहित्य (प्रकाशित), पृष्ठ- १७
(३) सरस्वती भंडार, कांकरौली, बंध सं० १३६, पुस्तक सं० ११
(४) प्रकाशक- वैष्णव हरिगोविन्द दास, हरिदास, नाथद्वारा ।
(५) लाला भगवान् दासजी, नाथद्वारा वाले के निजी संग्रह में ।
--प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण भाग-२
-- बिहार राष्ट्र भाषा परिषद्- पटना, पृष्ठ- ८४

`शंका :-जग मोहन लम्बो कहा भाव ते है?
समावान :- ये श्री महाराणी जी के भाव सौं हैं। उष्ण-काल मैं यहाँ जल भरो जाय है। सो साक्षात् श्री यमुना जी की लहरें लम्बी होत हैं। याही सौं यें हू लम्बो है। जग-मोहन मैं जो कीर्तनियाँ-गली की आड़ी वारी है। सो कन्दरा भाव सौं है।१

इस ग्रन्थ मैं श्री नाथ जी के नाथद्वारा स्थित मंदिर का पूर्ण विवरण दिया गया है। इसमें मंदिर की प्रत्येक वस्तु की अलौकिक भावनाएं भी प्रदर्शित की गई हैं।

गो० हरिराय जी लौकिक वातावरण की अलौकिक स्थिति मैं कल्पना करने मैं अतिपटु थे। उनका समग्र भावना-साहित्य, उनकी उर्वर कल्पना-शक्ति की सम्पन्नता का द्योतक है।

श्रीनाथ जी की भावना गो० हरिराय जी के उत्तर काल की रचना है, क्यों कि इस मन्दिर की स्थापना संवत् १७२८ के पश्चात् ही हुई थी। ग्रन्थ मैं ग्रन्थकार का अध्ययन-गाम्भीर्य तथा अभिव्यंजना कौशल सर्वत्र प्रतिभासित होता है।

श्री द्वारकादास पारिख तथा श्री प्रभुदयाल मीतल ने भी अपनी कृतियों मैं दी गई सूची मैं इस ग्रन्थ की गणना की है।२।

---

(१) प्रकाशित संस्करण-- (नाथद्वारा), (कुल-पृष्ठ-७१), पृष्ठ-६६
(२) महाप्रभु हरिराय जी नूं जीवन-चरित्र,(गुजराती), पृष्ठ-११६
-- गो० हरिराय जी का पद साहित्य, प्रकाशित, पृष्ठ- १७।

१७- हिंडोरा की भावना

इस ग्रन्थ की पृथक्-पृथक् प्रतिलिपियाँ प्राप्त होती हैं, किन्तु यह 'वर्षोत्सव' ग्रन्थ का ही एक अंश मात्र है। 'वर्षोत्सव' की सभी प्रतियों में इसका सन्निवेश है। ग्रन्थ-आकार की दृष्टि से ही इसका पृथक् लेखन हुआ होगा। ग्रन्थ हरिराय जी कृत ही है, और आकार में बड़ा भी।

उपर्युक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि गोस्वामी हरिराय जी ने भावात्मक ग्रन्थ अधिक परिमाण में लिखे हैं। इन ग्रन्थों में पुष्टि-मार्गीय लौकिक स्थितियों की पारलौकिक कल्पनाएँ की गई हैं। स्थान-स्थान पर सम्प्रदाय के सिद्धान्तों की भी चर्चा की गई है। अपने पूर्वज आचार्यों की महत्ता का प्रतिपादन भी बहुत किया है।

इन भावना-ग्रन्थों में सर्वाधिक महत्व की बात यह है कि इनमें गूढ़तम विचारों को भी बोल चाल की भाषा में प्रस्तुत करके लिखा गया है।

ऊपर जिन ग्रन्थों का परिचय दिया गया है उनमें से निम्नलिखित ग्रन्थों के रचयिता के विषय में संदेह है :--

(१) द्वादस निकुंज की भावना।
(२) सात बालकन की भाव।
(३) सात स्वरूप की भावना।
(४) भावना - त्रय।

इन चार संदिग्ध ग्रन्थों के अतिरिक्त 'भाव-भावना' नामक ग्रन्थ एक संग्रह ग्रन्थ है, जिसमें गोस्वामी हरिराय जी के अनेक ग्रन्थों को सम्पादित किया गया है। अत: इस संग्रह ग्रन्थ को पृथक् ग्रन्थ नहीं माना जा सकता।

इस प्रकार कुल बारह ग्रन्थ प्रामाणिक हैं, जो उल्लिखित तथा प्राप्त दोनों अवस्थाओं में विद्यमान हैं। इन भावना-ग्रन्थों के अतिरिक्त उन ग्रन्थों की भी चर्चा की जारही है, जिनमें प्रधान रूप से सम्प्रदाय के सिद्धान्तों का निरूपण हुआ है।

सिद्धान्त पक्ष ग्रन्थ :-

१- ग्रन्थात्मक भगवत्स्वरूप निरूपण

यह ग्रन्थ टीका-रूप में प्राप्त हुआ है, इसकी एक मात्र हस्त-लिखित प्रति प्राप्त हुई है। ऐसा प्रतीत होता है कि किसी अन्य व्यक्ति ने गोस्वामी हरिराय जी के संस्कृत ग्रन्थ की टीका की हो। प्रारम्भ द्रष्टव्य है:-

'इति श्री हरिदासोदितं ग्रन्थात्मक भगवत्स्वरूप निरूपणं समाप्तं। अथ ग्रन्थात्मक भगवत्स्वरूप के पाँच श्लोक को ग्रन्थ श्री हरिराय जी लिखे हैं ताको अभिप्राय भाषा में लिखयतु है। श्री मदाचार्य महाप्रभु ने ठाकुर जी के द्वादस अंगात्मक द्वादस ग्रन्थ निरूपण किए हैं। सो प्रभु के द्वादस अंग कौन से सो कहतु हैं।१'

इस ग्रन्थ से पहिले गोस्वामी हरिराय जी कृत संस्कृत में इसका मूलपाठ भी दिया गया है।

---

(१) सरस्वती भंडार, कांकरोली - वंध--१०० पुस्तक- ६ ।

अन्त में लिखा हुआ है, यह हम आचार्य महाप्रभु के चरण कमल की कृपा
बल ते सम्यक प्रकार सों निरूपित, यह भाँति
श्री हरिराय जी कहत हैं। इति हरिदासोदितं
ग्रन्थात्मक भगवत्स्वरूप निरूपणं समाप्तम् ।१

अन्तिम कथन से स्पष्ट होता है कि, 'ग्रन्थात्मक भगवत्स्वरूप निरूपण' नामक ग्रन्थ, संस्कृत में हरिराय जी ने लिखा है। व्रजभाषा में उन्होंने इस प्रकार का कोई ग्रन्थ नहीं लिखा।

स्व० द्वारका दास परिख ने अपनी सूची में इस ग्रन्थ का उल्लेख किया है।२ श्री प्रभु दयाल मीतल ने भी 'भगवत्स्वरूप निरूपण' नाम से इसी ओर संकेत किया है।३ मिश्र बन्धुओं ने 'कृष्णावतार स्वरूप-निर्णय' नामक एक ग्रन्थ का उल्लेख किया है।४ सम्भवत: मिश्र-बन्धुओं का अभिप्राय इस ग्रन्थ से न रहा होगा। द्वारका दास जी परिख तथा श्री प्रभुदयाल जी मीतल ने इस ग्रन्थ का उल्लेख किया है जो भ्रामक प्रतीत होता है। प्राप्त प्रति के अतिरिक्त अन्य कोई भी इतर प्रति अभी तक प्राप्त नहीं हुई। प्रस्तुत ग्रन्थ हरिराय जी कृत नहीं हैं, यह निश्चित है। गो० हरिराय जी ने इस नाम से संस्कृत में ही रचना की है।

---

(१) सरस्वती भंडार, कांकरोली, बंध संख्या- १००, पुस्तक संख्या- ६
(२) महाप्रभु हरिराय जी नुं जीवन-चरित्र, (गुजराती), पृष्ठ- ११६
(३) गो० हरिराय जी का पद साहित्य, (प्रकाशित), पृष्ठ- १७
(४) मिश्रबन्धु विनोद (भाग-१), नाम १०६, पृष्ठ- ३४२।

२- पुष्टिदृढ़ाव की वार्ता

यह ग्रन्थ प्रकाशित है ।१ इसकी अनेक हस्तलिखित प्रतियाँ भी प्राप्त हुई हैं ।२ किसी भी प्रति में गोस्वामी हरिराय जी का ग्रन्थकार के रूप में उल्लेख नही मिलता, तथापि यह ग्रन्थ हरिराय जी का बहुचर्चित ग्रन्थ है । किसी ग्रन्थ में नामोल्लेख न होने पर भी परम्परागत जन श्रुति के अनुसार इसके रचयिता गोस्वामी हरिराय जी ही हैं । सम्प्रदाय के विद्वानों द्वारा भी इस ग्रन्थ का रचयिता गो० हरिराय जी को ही माना जाता है । कुछ अन्य विद्वानों द्वारा भी इसका समर्थन किया गया है ।३ श्री द्वारकादास परिख, श्री प्रभुदयाल मीतल तथा नागरी प्रचारिणी की खोज रिपोर्ट में भी इस ग्रन्थ का कर्त्ता गोस्वामी हरिराय जी को माना गया है । -४

ग्रन्थ में पुष्टि-मार्ग के कुछ सिद्धान्तों की विवेचना की गई है, इसकी भाषा परिनिष्ठित व्रजभाषा है । लेखक की विद्वता सर्वत्र आभासित होती है । बहुचर्चित होने के कारण ग्रन्थ को संदिग्ध नहीं माना जा सकता ।

---

(१) वजरंग पुस्तकालय, मथुरा तथा डाकोर से प्रकाशित ।

(२) सरस्वती भंडार, कांकरोली, वंध संख्या- ६२, पुस्तक सं० १
(अन्य और भी)

(३) वार्ता साहित्य, एक वृहद् अध्ययन - डा० हरिहर नाथ टंडन, पृ० १५७

(४) -- महाप्रभु हरिराय जी नूं जीवनचरित्र, (गुजराती), -- पृ० ११६
-- गो० हरिराय जी का पद साहित्य, (प्रकाशित), -- पृ० १७
-- हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थों का पन्द्रहवाँ त्रै-वार्षिक विवरण, (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी), -- पृ० १६४

३- महाप्रभु जी की प्राकट्य वार्ता

इस ग्रन्थ में निहित भाव-प्रकाश नामक टिप्पणी के कर्त्ता ही गो० हरिराय जी हैं। इसके दो संस्करण प्राप्त हुए हैं। प्रसंगात्मक तथा भावात्मक। भावात्मक संस्करण गो० हरिराय जी द्वारा प्रस्तुत किया गया है। भावात्मक संस्करण में गोस्वामी हरिराय जी ने प्रत्येक वाक्य की भाव-मयी व्याख्या की है, इस प्रसंग में उन्होंने अपने विचारों को भी अनेक रूप में व्यक्त किया है। इस प्रकार भावात्मक संस्करण, जिसमें गोस्वामी हरिराय जी कृत भाव-प्रकाश सन्निहित है, गोस्वामी हरिराय जी कृत ही हैं।१ प्रसंगात्मक-संस्करण, जिसमें भाव-प्रकाश नहीं है, गो० हरिराय जी के पूर्ववर्ती विद्वान द्वारा लिखा हुआ है।

भावात्मक संस्करण का प्रकाशित संस्करण भी उपलब्ध है।२ ग्रन्थ में महाप्रभु-वल्लभाचार्य जी के जीवन वृत्त पर प्रकाश डाला गया है। ग्रन्थ बहुचर्चित है।
श्री द्वारकादास परिख तथा श्री प्रभुदयाल मीतल ने भी इस ग्रन्थ का उल्लेख किया है।३

४।५- निजवार्ता तथा घरूवार्ता

आचार्य महाप्रभु जी की प्राकट्य वार्ता के अनुरूप ही यह ग्रन्थ

---

(१) देखिये-- वार्ता साहित्य एक वृहद् अध्ययन- डा० हरिहरनाथ टण्डन - पृष्ठ- ३५६

(२) प्रकाशन- विद्याविभाग, कांकरौली, संवत्- २००१ ।

(३) -- महाप्रभु हरिराय जी नूं जीवन चरित्र(गुजराती), पृष्ठ- ११६
-- गो० हरिराय जी का पद-साहित्य, (प्रकाशित), पृष्ठ- १७।

भी महाप्रभु वल्लभाचार्य जी के जीवन-वृत्त पर आधारित हैं। इन ग्रन्थों में भी गोस्वामी हरिराय जी कृत 'भाव-प्रकाश' ही प्राप्त होता है।१ ये ग्रन्थ प्रकाशित भी हैं।२ प्रकाशित संस्करण में सम्पादक श्री द्वारकादास परिख ने इन ग्रन्थों के रचयिता हेतु गोस्वामी हरिराय जी की ही अधिक सम्भावना की है।३

इस ग्रन्थ की किसी भी प्रति में गोस्वामी हरिराय जी का नामोल्लेख नहीं किया गया, किन्तु सम्प्रदाय की लोक धारणा के अनुसार इनके रचयिता गोस्वामी हरिराय जी ही हैं।

श्री प्रभुदयाल मीतल ने 'निज वार्ता' ग्रन्थ की गणना अपनी सूची में तीन बार की है,४ 'घरू वार्ता' का भी इन्होंने पृथक् उल्लेख किया है।५ ग्रन्थ चौरासी वार्ताओं के अनुरूप ही लिखा गया है। ऐतिहासिक घटनाओं का तिथि संवत् सहित वर्णन किया गया है। मुख्य विषय आचार्य महाप्रभु जी का जीवन चरित्र है। प्रमाणा-भाव में ग्रन्थ को प्रामाणिक नहीं माना जा सकता।

---

(१) श्री आचार्य जी महाप्रभुन की निजवार्ता, घरूवार्ता, (भाव-प्रकाश), सहित, -- सम्पा० द्वारकादास परिख, (संवत् २०१५), मथुरा।

(२) वही।

(३) 'अत: इसके संकलन और रचना का श्रेय गो० हरिराय जी को ही दिया जासकता है।' -- वही, पृष्ठ- २

(४) गो० हरिराय जी का पद साहित्य, (प्रकाशित) सूची में ग्रन्थ सं० ३,४,२८

(५) वही, ग्रन्थ सं० २९।

६।७- रास विलास तथा बन यात्रा परिक्रमा

वनयात्रा की अनेक हस्तलिखित प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं, जिनमें ब्रजयात्राओं का पृथक्-पृथक् वर्णन किया गया है। वर्ण्य विषय की दृष्टि से यह ग्रन्थ विशेष महत्व नहीं रखता। किसी भी प्रति में गोस्वामी हरिराय जी का नामोल्लेख नहीं मिलता। अत: यह ग्रन्थ संदिग्ध है। रास-विलास की भी कोई प्रति देखने में नहीं आई, केवल एक स्थान पर उसका विवरण देखने में आया है।[१] श्री द्वारकादास परिख[२] ने 'गोकुलनाथ जी को रास को प्रसंग' का उल्लेख किया है, जबकि श्री प्रभुदयाल मीतल[३] ने 'रास को प्रसंग' ही कहा है, किन्तु यह दोनों ग्रन्थ उक्त ग्रन्थ से सम्बन्धित नहीं हैं।

८- समर्पण गद्यार्थ

इस ग्रन्थ की एक मात्र हस्तलिखित प्रति कांकरोली से प्राप्त हुई है।[४] इस नाम से एक अन्य ग्रन्थ भी गोस्वामी गिरधर लाल जी कृत

---

(१) 'रास विलास। रचयिता रसिक राय। साइज- ८.८¼+६(। पत्र सं०१४ लिपिकाल सं० १८०० के लगभग। ब्रजभाषा। रास वर्णन। ग्रन्थ छोटे - छोटे ५ पत्रों में विभाजित है, जिनमें सब मिलाकर १४६ पद्य हैं। कविता मधुर है।'--प्राप्ति स्थान- सरस्वती भंडार-राजकीय पुस्तकालय, उदयपुर।' -- राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज (भाग-१), --- पृष्ठ- १२१ से उद्धृत।

(२) महाप्रभु हरिराय जी नूं जीवन चरित्र,(गुजराती), पृष्ठ- ११६

(३) गो० हरिराय जी का पद साहित्य, (प्रकाशित), पृष्ठ- १७

(४) सरस्वती भंडार, कांकरोली बंध संख्या- १०५ पुस्तक सं० १, पत्रा ६ से।

भी प्राप्त होता है ।१ गोस्वामी गिरधर लाल जी का वह ग्रन्थ उक्त ग्रन्थ से सर्वथा भिन्न है । ग्रन्थ के अध्ययन से ज्ञात होता है कि गो० हरिराय जी ने यह ग्रन्थ टीकानुरूप लिखा है । विवरण द्रष्टव्य है :-

'समर्पण गद्यार्थ । गो० हरिराय जी कृत । कुल पृष्ठ- आठ । आकार- ९।।"+ ५" । पंक्ति -२३ प्रति पृष्ठ । प्रति प्राचीन किन्तु पठनीय ।'

प्रारम्भ:- 'अथ समर्पण गद्यार्थ की टीका भाषा में लिख्यते । सृष्टि के आदि विषै ब्रह्मा की इच्छा भई जो मैं रूपात्मक सृष्टि करौं । तब बाकी इच्छा पूरी करिकैं -- । २

सम्भवत: इस नाम से किसी अन्य आचार्य ने संस्कृत में ग्रन्थ लिखा होगा, जिसकी व्याख्या गोस्वामी हरिराय जी ने की है ।

ग्रन्थ का अन्तिम अंश द्रष्टव्य है :- ' तहाँ ताईं यह जीवकाहू काम कौं नाँही, यह हू अर्थ वर्जित होत है । इति श्री मद् हरिरायोदिसमर्पण- गद्यार्थ सम्पूर्ण श्रीकृष्णायनम: ।३'

श्री प्रभुदयाल मीतल ने इस नाम से दो ग्रन्थों का उल्लेख किया है, जो हरिराय जी कृत हैं ।४ तथा श्री द्वारकादास परिख ने भी इस

---

(१) सरस्वती भंडार, कांकरोली- बंध सं० १००, (पुस्तक सं० ३) ।
(२) वही, -- बंध सं० १०५, पुस्तक सं० १, पत्रा-६
(३) वही।
(४) गोस्वामी हरिराय जी का पद साहित्य,(प्रकाशित), सूची में ग्रन्थ- --सख्या- १६।१७ ।

ग्रन्थ का अपनी सूची में उल्लेख किया है ।१ मिश्रबन्धुओं ने भी 'यथार्थ-भाषा' नामक उनके एक ग्रन्थ का उल्लेख किया है ।२ मिश्र बन्धुओं द्वारा उल्लिखित ग्रन्थ का नाम उक्त ग्रन्थ से सम्बन्धित नहीं जान पड़ता ।

'जीव को भगवत्-शरण का आश्रय ग्रहण करना चाहिए', इस विषय को इस ग्रन्थ में विस्तार पूर्वक विवेचित किया गया है ।

९- श्री नाथ जी की प्राकट्य वार्ता

गोस्वामी हरिराय जी के वार्ता साहित्य का यह सर्वाधिक चर्चित ग्रन्थ है । यह ग्रन्थ विभिन्न स्थानों से प्रकाशित हो चुका है ।३ डा० हरिहरनाथ टण्डन ने इस ग्रन्थ का पूर्ण विवरण अपने ग्रन्थ में दिया है ।४ इसे श्री गोवर्द्धन नाथ जी की प्राकट्य वार्ता भी कहा जाता है । श्री प्रभुदयाल जी मीतल ने इस ग्रन्थ का उल्लेख किया है ।५

---

(१) महाप्रभु हरिराय जी नूं जीवन चरित्र,(गुजराती), पृष्ठ- ११६
(२) मिश्रबन्धु विनोद (भाग-१), नाम १०६ पृष्ठ- ३४२
(३) -- विद्या विभाग, नाथद्वारा से अनेक संस्करण प्रकाशित ।
-- लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस बम्बई से प्रकाशित ।
-- मुंशी नवल किशोर भार्गव की आज्ञानुसार सन् १८८४ में प्रकाशित ।
-- श्री मोहन लाल विष्णूलाल पंड्या द्वारा संवत् १९३५ में सम्पादित ।
-- लल्लूभाई छगन लाल देसाई,अहमदाबाद, संवत् १९९९ में प्रकाशित ।
(४) देखिये-- वार्ता साहित्य एक वृहद् अध्ययन - भारत प्रकाशन मन्दिर, -- अलीगढ़ ।
(५) गो० हरिराय जी का पद साहित्य,प्रकाशित- पृष्ठ- १७ ।

ग्रन्थ प्रामाणिक है। इसकी पचासों हस्तलिखित प्रतियाँ भी देखने में आई हैं। सभी प्रतियों में गोस्वामी हरिराय जी कृत लिखा हुआ है।

इस ग्रन्थ में 'श्रीनाथ जी' की प्राकट्य चर्चा में श्रीनाथ जी की प्रमुख देव-मूर्त्ति का ऐतिहासिक वृतान्त दिया गया है। इसमें श्रीनाथ जी की सेवा व्यवस्था तथा व्रज से मेवाड़ आने की सम्पूर्ण घटनाओं का तिथि, संवत् सहित वर्णन किया गया है। इस ग्रन्थ से अनेक ऐतिहासिक तथ्य भी स्पष्ट होते हैं। गोस्वामी परिवार के जीवन का इसमें व्यवस्थित रूप से वर्णन किया गया है। स्वयं गोस्वामी हरिराय जी की जीवन-घटनाओं का भी इसमें विवरण प्राप्त होता है।

यह ग्रन्थ गोस्वामी हरिराय जी के मेवाड़ जाने के पश्चात् लिखा गया था। सम्भवत: गोस्वामी हरिराय जी ने अपने किसी अनुयायी भक्त से यह ग्रन्थ लिखवाया था, जिससे गोस्वामी हरिराय जी का नाम भी इस ग्रन्थ में आदरणीय सम्बोधनों में व्यक्त हुआ है।१

१०- षट्षष्टि अपराध

इस नाम से गोस्वामी हरिराय जी ने एक संस्कृत ग्रन्थ भी लिखा है।२ व्रजभाषा में यह ग्रन्थ कांकरोली से हस्तलिखित रूप में प्राप्त हुआ है।३ 'षट्षष्टि अपराध' नामक ग्रन्थ मूल रूप से संस्कृत में

---

(१) श्रीनाथ जी की प्राकट्य वार्ता-- प्रका० लल्लूभाई छगनभाई देसाई, पृ० ९९

(२) गो० हरिराय जी का पद साहित्य, प्रकाशित, -- पृ० १७

(३) सरस्वती भंडार, कांकरोली, बंध संख्या- ९१, पुस्तक सं० १, -- पत्रा ३४ से ४० तक (१२ पृष्ठों पर)।

गोस्वामी विट्ठलनाथ जी कृत है, जिस पर श्री पुरुषोत्तम जी ने संस्कृत में टीका लिखी है। गो० हरिराय जी ने सम्भवत: इसी ग्रन्थ का आधार लेकर संस्कृत तथा व्रजभाषा में इस नाम से ग्रन्थ रचना की है। इस ग्रन्थ के अतिरिक्त 'चौसठ अपराध विष्णु स्वामी-सम्प्रदाय के' भी प्राप्त हुए हैं।१ संस्कृत में बत्तीस अपराध, १० अपराध नाम से भी ग्रन्थ प्राप्त हुए हैं।२ गो० हरिराय जी कृत षट्षष्टि अपराध ग्रन्थ का विवरण इस प्रकार है :-

'षट्षष्टि अपराध। गो० हरिराय जी कृत। पत्रा ३४ से ४० तक, (१२ पृष्ठों पर अंकित)। आकार ६।।।"+ ५"। १३ पंक्ति प्रति पृष्ठ। प्रति प्राचीन किन्तु पठनीय।'

प्रारम्भ:- 'अथ श्री हरिराय जी कृत षटु षटारस अपराध लिख्यतें। जो श्री ठाकुर जी समीप क्रोध करें तो तीन जन्म ताई मलेछ जोनी पावै। नघ्रे यह जो। अस्नान करि श्री ठाकुर जी आगें घी कौं दीवा करै तो ताकौ दोष नग्रे होय। अनमारगी साथे बोले तो सत्रु पीड़ा उपजे। जैसौ ताकौ नग्रे। ये है जो श्री ठाकुर जी कौं अष्टोत्तर सत नाम जप करे तो तव ताकौ दोष नवरत होय।'

---

(१) सरस्वती भंडार, कांकरोली, बंध संख्या ६२, पुस्तक संख्या- १ ।

(२) वही।

अन्तिम अँश :- श्री ठाकुर जी की सेवा समै चूकै तो तीन जन्म अँधा होइ । सौ श्री ठाकुर जी दोय सौ पैसा भार दूध कौ अभिषेक करावनौ । वैतरणी नदी मैं सौ वरस ताई तीन उपवास करै । श्री ठाकुर जी कौ नयौ मन्दिर करावैं ।१

श्री प्रभुदयाल मीतल ने इस ग्रन्थ का नामोल्लेख किया है ।२ नागरी प्रचारिणी सभा के खोज - विवरण में भी इस ग्रन्थ का नाम दिया गया है ।३ इनके अतिरिक्त गार्सा द तासी ने भी गो० हरिराय जी के इस ग्रन्थ की चर्चा की है ।४

ग्रन्थ हरिराय जी कृत ही है । इसमें अपराध वर्णन, उसका फल और प्रायश्चित विधान का वर्णन किया गया है । ग्रन्थ में आचार - अनाचार की व्याख्या की है । इसकी विषय वस्तु का सम्प्रदाय की दृष्टि से ही महत्व है ।

---

(१) सरस्वती भँडार, काँकरोली, बँध संख्या-६२, पुस्तक संख्या-१ ।
(२) गो० हरिराय जी का पद साहित्य, प्रकाशित, -- पृष्ठ-१३
(३) हस्त लिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण-(भाग-२),पृष्ठ-६२६
(४) ' हरराय जी' । वल्लभ के शिष्य । ने ब्रजभाषा में लिखी है ।
१- सहसठ पापैं,अपने गुरु के सिद्धान्तानुसार, उनके प्रायश्चितों और उनके फलों पर एक रचना । 'हिस्ट्री आँव दि सैक्ट आँव दि महाराजाज' (महाराजों के सम्प्रदाय का इतिहास) ।
-- हिन्दुई साहित्य का इतिहास - गार्सा द तासी, अनुवादक - लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय, - पृष्ठ- ३२६

११- गो० हरिराय जी के घर की नित्य सेवा तथा वर्षोत्सव की भावना ।

यह ग्रन्थ गोस्वामी हरिराय जी के नाम से जाना जाता है । वस्तुत: यह गोस्वामी हरिराय जी के पश्चात् की रचना जान पड़ती है । इसकी प्राप्त हस्त लिखित प्रति में कहीं भी गो० हरिराय जी का ग्रन्थकार के रूप में उल्लेख नहीं मिलता । १ किसी अन्य लेखक ने गोस्वामी हरिराय जी के घर में व्यवहृत नित्य-सेवा का इस ग्रन्थ में विवरण दिया है । ग्रन्थ हरिराय जी कृत नहीं है ।

१२- सेवा - प्रकार

पूर्ववर्ती पृष्ठों पर 'सेवा-भावना' नामक एक अन्य ग्रन्थ की चर्चा की गई है । वर्ण्य विषय की दृष्टि से यह ग्रन्थ भी तदनुरूप ही है । अन्तर केवल इतना है कि 'सेवा-भावना' में परदेश काल में जब सेव्य - स्वरूप पास नहीं होते तो सेवा की भावना का ही विधान वर्णित है । इसके विपरीत 'सेवा - प्रकार' में सेव्य - स्वरूप पास रहने पर उनकी सर्वांग सेवा-पद्धति का पूर्ण क्रियात्मक विवरण दिया गया है । प्रथम ग्रन्थ भावना - प्रधान है, तो दूसरा कर्म-प्रधान ।

'सेवा-प्रकार' नामक यह ग्रन्थ अप्रकाशित है । इसकी एक हस्तलिखित प्रति कांकरौली से प्राप्त हुई है ।२ नागरी प्रचारिणी सभा की खोज रिपोर्ट में भी इसका विवरण दिया गया है । ३ श्री द्वारकादास परिख ने इस ग्रन्थ का उल्लेख किया है । ४

---

(१) सरस्वती भंडार, कांकरौली, बंध संख्या १०६, पुस्तक सं० १२, पत्रा ११ से
(२) वही, बंध संख्या ९९, पुस्तक सं० १० ।
(३) हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों का : पन्द्रहवां त्रै-वार्षिक विवरण, पृ० १६५
(४) महाप्रभु हरिराय जी नूं जीवन चरित्र, (गुजराती),- -- पृ० ११६ ।

प्राप्त प्रति का विवरण इस प्रकार है :-

सेवा विधि । गोस्वामी हरिराय जी कृत । इस ग्रन्थ में सेवा-प्रकार तथा सेवा-भावना दोनों ही ग्रन्थ संगृहीत हैं । प्रथम ग्रन्थ प्रारम्भिक ११ पत्राओं में लिपिबद्ध है । बाद के पृष्ठों पर 'सेवा-भावना' ग्रन्थ अंकित है । आकार- ९।" + ५"। ९ पंक्ति प्रति पृष्ठ । लिपि - प्राचीन । पठनीय ।

प्रारम्भ:- 'प्रातकाल खाट ते उठि रात्रि वस्त्र बदल आचमन करि श्री जी के सन्मुख बैठि नाम श्री आचार्य जी को तथा श्री ठाकुर जी को नाम लै करि । वंदे नन्द ब्रजस्त्रीणां । इन दो श्लोकन करि, नमस्कार करि, रात्रि को जो कृत्य विचारि सो यों होइ भगवद् संबंधी तथा सब सुद्धि करि तदुपरान्त देह कृत्य करि सुद्ध होइ चरणामृत लैकरि कैं मुख सुद्ध अर्थ बीड़ा तथा लवंग लेकरि तेल लगाइ स्नान करि तिलक करि अवकास होइ तो शंक चक्र धरें । नहीं तो नाम मुद्रा देइ करि मन्दिर के द्वार जाइ, पाउ धोइ सैया निकट जाइ रात्रि के गहुआ, बीड़ा, भोग सामग्री माला होई सो काढ़िये ।"

अन्तिम अंश :-'पाछें प्रभु स्वतंत्र हैं । मनमाने सो करें । काहू को बल नाहीं । इति शिक्षा सम्पूर्णम् ।'[१]

---

(१) सरस्वती भंडार, कांकरोली, बंध संख्या- ९९, पुस्तक सं० १० ।

इस प्रति में कहीं भी गोस्वामी हरिराय जी का नाम प्राप्त नहीं होता, किन्तु सम्प्रदाय के विद्वानों ने इसे हरिराय जी कृत माना है। गोस्वामी हरिराय जी कृत मानने का एक यह भी कारण हो सकता है कि प्राप्त प्रति में गोस्वामी हरिराय जी के दो अन्य ग्रन्थ भी संलग्न हैं। सेवा भावना तथा सेवा प्रकार। जैसा कि स्पष्ट किया जा चुका है[1] कि सेवा भावना नामक ग्रन्थ गोस्वामी हरिराय जी कृत ही है। सम्भव है कि लिपिकार ने गोस्वामी हरिराय जी के इन ग्रन्थों को एक ही प्रति में संलग्न कर दिया हो।

नागरी प्रचारिणी सभा की खोज रिपोर्ट में इस ग्रन्थ का कर्ता गोस्वामी हरिराय जी को माना गया है।[2] ग्रन्थ में पुष्टि-मार्गीय सेवा पद्धति का सरल शब्दों में वर्णन किया गया है।

१३- सन्यास निर्णय

यह ग्रन्थ संस्कृत में महाप्रभु श्री वल्लभाचार्य जी विरचित है। गोस्वामी हरिराय जी ने इसकी ब्रजभाषा टीका की है। नागरी प्रचारिणी सभा की खोज रिपोर्ट में भी इसका विवरण दिया गया है।[3] यह टीका ग्रन्थ गोस्वामी हरिराय जी कृत ही है। ग्रन्थ आकार में अत्यन्त छोटा है। वर्ण्य विषय की दृष्टि से इसका साम्प्रदायिक महत्व ही है।

---

(१) देखिये-- इसी ग्रन्थ में पृष्ठ १२९ पर।

(२) हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों का पन्द्रहवाँ त्रै-वार्षिक विवरण, पृ०१६५

(३) हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों का सोलहवाँ त्रै-वार्षिक विवरण, पृ०१३८।

१४- शरण मंत्र व्याख्या

श्री प्रभुदयाल मीतल ने अपने ग्रन्थ में इसका उल्लेख किया है[1], किन्तु इस नाम से गोस्वामी हरिराय जी कृत कोई ग्रन्थ देखने में नहीं आया । 'अष्टाक्षर मंत्र की टीका' नामक एक ग्रन्थ प्रकाशित रूप में प्राप्त हुआ है[2], इसमें लेखक का उल्लेख नहीं मिलता, किन्तु शरण मंत्र की व्याख्या का तात्पर्य सम्भवत: इसी ग्रन्थ से लिया गया है । प्रमाणाभाव में ग्रन्थ को प्रामाणिक नहीं कहा जा सकता ।

ग्रन्थ में वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षा देने के लिए जो मंत्र दिए जाते हैं, उनकी भाव व्याख्या की गई है ।

१५- वचनामृत

इस ग्रन्थ का नामोल्लेख नागरी प्रचारिणी सभा के खोज कर्ताओं ने किया है । इसका पूर्ण विवरण भी सभा की खोज रिपोर्ट में दिया गया है, किन्तु सम्प्रति यह ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हो पाया है । गुजराती मिश्रित व्रजभाषा में व्याख्यान रूप में यह लिपिबद्ध है । सभा के खोज कर्ताओं ने इस ग्रन्थ को प्रामाणिक माना है ।[3]

---

(१) गो० हरिराय जी का पद साहित्य, प्रकाशित, पृष्ठ- १३

(२) 'अष्टाक्षर' वृज टीका समेत- सम्पा० पं० विट्ठल प्रसाद ज्येष्ठाराम -- मुकुंद जी, सुवर्ण प्रिंटिंग प्रेस, बम्बई, संवत्-१९६७

(३) हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों का सोलहवाँ त्रै-वार्षिक विवरण, --- पृष्ठ- १३९ ।

इस ग्रन्थ में महाप्रभु वल्लभाचार्य जी के भक्ति संबंधी विचार प्रस्तुत किए गए हैं। इसमें स्पष्ट किया गया है कि नवधा-भक्ति के निमित्त वैष्णव को किस प्रकार के आचरण करने चाहिए।

१६- षट् ऋतु की वार्ता

इस ग्रन्थ पर गोस्वामी हरिराय जी कृत भाव-प्रकाश नामक टिप्पणी प्राप्त होती है। यह ग्रन्थ प्रकाशित भी है। १ इस ग्रन्थ में निहित भाव प्रकाश का कर्ता विद्वानों द्वारा गोस्वामी हरिराय जी को ही माना गया है। २

ग्रन्थ में गिरिराज की तलहटी में षट् ऋतुओं के नित्य-निवास की कल्पना की गई है। एक ऋतु में दो-दो कुंजों की भी कल्पना की है, जिनके अन्तर्गत कृष्ण के नित्य ऋतु-विहार का वर्णन किया गया है।

१७- चौरासी वैष्णवन की वार्ता

'वार्ता-साहित्य एक वृहद् अध्ययन' नामक शोध प्रबन्ध में डा० हरिहर नाथ टण्डन द्वारा स्पष्ट किया जा चुका है कि इस ग्रन्थ में निहित 'भाव-प्रकाश' गोस्वामी हरिराय जी कृत ही है। इसके भावात्मक संस्करण सहित सम्पादन का सारा

---

(१) -- सम्पादक द्वारकादास परिख, संदेश प्रेस, अहमदाबाद, संवत् २००५
-- सम्पादक वही, गोवर्धन ग्रन्थ माला, मथुरा, संवत् २०२५
(२) वार्ता साहित्य एक वृहद् अध्ययन - डा० हरिहरनाथ टण्डन पृ० ३६० ।

श्रेय गोस्वामी हरिराय जी को ही दिया गया है। यह ग्रन्थ वल्लभ-सम्प्रदाय का सर्वाधिक चर्चित व महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। व्रजभाषा का यह एक लोक प्रसिद्ध ग्रन्थ है। व्रजभाषा गद्य के विकास में इस ग्रन्थ का शीर्षस्थ स्थान है। इसका महत्व अनेक विद्वानों द्वारा प्रतिपादित किया गया है।

डा० हरिहरनाथ टण्डन ने इस ग्रन्थ में निहित गोस्वामी हरिराय जी कृत भाव-प्रकाश को टिप्पणी न मानकर स्वतंत्र ग्रन्थ माना है।१ डा० टण्डन ने अनेक पुष्ट प्रमाणों द्वारा सिद्ध किया है कि गोस्वामी हरिराय जी रचित भाव-प्रकाश एक स्वतंत्र व महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। अष्टछाप के कवियों की जीवनी के सम्बन्ध में भाव-प्रकाश द्वारा जो जानकारी प्राप्त हुई है वह अन्यत्र नहीं मिलती। जहाँ भी अष्ट-छापी कवियों के जीवन-वृत्त का प्रश्न उठता है, सभी विद्वानों को गोस्वामी हरिराय जी कृत भाव-प्रकाश का अवलम्ब ग्रहण करना पड़ता है।

इस ग्रन्थ के अनेक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। तथा इसका गुजराती अनुवाद भी प्रकाशित है। इस ग्रन्थ की अनेक हस्तलिखित प्रतियाँ भी प्राप्त हुई हैं। यह ग्रन्थ व्याख्यान रूप में सम्पादित है, इसमें वल्लभ मतानुयायी चौरासी वैष्णवों के चरित्र पर व्यापक प्रकाश डाला गया है। यह ग्रन्थ चरित्र प्रधान होने पर भी ऐतिहासिक तथ्यों से परिपूर्ण है।

---

(१) वार्ता साहित्य एक वृहद् अध्ययन - डा० हरिहरनाथ टण्डन, पृ० १३३।

151

१८- दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता

चौरासी वैष्णवन की वार्ता की ही भाँति दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता भी व्रजभाषा का एक प्रसिद्ध गद्य-ग्रन्थ है। वार्ता साहित्य के शोध-कर्ता ने यह स्पष्ट किया है कि इस ग्रन्थ के रचयिता गोस्वामी हरिराय जी ही हैं। १

चौरासी वैष्णवन की वार्ता तथा दो सौ वैष्णवन की वार्ता, दोनों ग्रन्थों का अध्ययन अनेक विद्वानों द्वारा प्रस्तुत किया जा चुका है। इन ग्रन्थों की प्रकाशित प्रतियों के मुख पृष्ठ पर 'गोस्वामी हरिराय जी प्रणीत' लिखा हुआ है।२

गोस्वामी हरिराय जी ने ऐसे महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना करके व्रजभाषा-गद्य के भण्डार को पूर्ण समृद्ध बनाया है। इन ग्रन्थों में व्रजभाषा गद्य का पूर्ण परिमार्जित स्वरूप दृष्टिगत होता है। इन ग्रन्थों के कारण ही गोस्वामी हरिराय जी के युग को वार्ता साहित्य तथा व्रजभाषा गद्य का स्वर्णयुग कहा जाता है। व्रजभाषा गद्य के इतिहास में इस प्रकार के अन्य ग्रन्थ देखने में नहीं आते।

उपर्युक्त विवरण में निम्नलिखित ग्रन्थ संदिग्ध पाए गए हैं:-

---

(१) वार्ता साहित्य एक वृहद् अध्ययन-- डा० हरिहरनाथ टण्डन, पृ० २३०

(२) -- श्री द्वारका दास परिख द्वारा सम्पादित तथा मथुरा से प्रकाशित प्रतियों में द्रष्टव्य।

१- रास विलास,।
२- वन यात्रा परिक्रमा ।
३- गो० हरिराय जी के घर की नित्य सेवा तथा वर्षोत्सव की भावना ।
४- शरण मंत्र व्याख्या ।

इनके अतिरिक्त निम्नलिखित ग्रन्थों में भाव-प्रकाश-कर्ता या टीकाकार के रूप में गोस्वामी हरिराय जी का उल्लेख मिलता है । --

१- महाप्रभु जी की प्राकट्य वार्ता ,
२- महाप्रभु जी की निज वार्ता ,
३- महाप्रभु जी की घरू वार्ता ,
४- समर्पण गद्यार्थ ,
५- षट्षष्टि अपराध ,
६- षट् ऋतु की वार्ता ,
७- सन्यास निर्णय तथा
८- चौरासी वैष्णव की वार्ता ।

इस प्रकार उपर्युक्त समग्र विवरण से ज्ञात होता है कि गोस्वामी हरिराय जी के उल्लिखित तथा प्राप्त ग्रन्थों में बारह भावना ग्रन्थ तथा छः सैद्धान्तिक ग्रन्थ पूर्ण प्रामाणिक हैं । इनके अतिरिक्त आठ ग्रन्थों पर गोस्वामी हरिराय जी के भाव-प्रकाश तथा व्याख्याएँ निहित हैं । अतः भावना तथा सैद्धान्तिक छब्बीस ग्रन्थों के विवेचन में कुल नौ ग्रन्थ संदिग्ध हैं । इस तरह इस खण्ड में गोस्वामी हरिराय जी के कुल पैंतीस गद्य-ग्रन्थों का विवरण दिया गया है ।

प्राप्त -अनुल्लिखित ग्रन्थ

१- अधवासन की भावना

यह ग्रन्थ आकार में बहुत छोटा है। इसकी एक अपूर्ण प्रति कांकरौली से प्राप्त हुई है।१ हस्तलिखित प्रति में इस ग्रन्थ से पहले गोस्वामी हरिराय जी कृत 'हिंडोरा की भावना' नामक ग्रन्थ अंकित है। 'अधवासन की भावना' में गोस्वामी हरिराय जी का रचयिता के रूप में उल्लेख नहीं मिलता, किन्तु सम्प्रदाय के विद्वानों के अनुसार इसे गोस्वामी हरिराय जी कृत ही माना गया है। विवरण द्रष्टव्य है :-

अधवासन की भावना। पृष्ठ ४ पर अंकित। आकार ७।।"+ ११।।"। १८ पंक्ति प्रति पृष्ठ। लिपि प्राचीन। पठनीय। अपूर्ण।

प्रारम्भ :- यह अधवासन याते हैं जो हिंडोरा की रहस्य लीला हैं अधवासन की यह रहस्य लीला संबंधी तीन ही कों अलौकिक ज्ञान होय। ताही ते अधवासन करत हैं। और व्रज भक्तन को आवाहन हू होत हैं और हिंडोरा हू अलौकिक होत है। वह स्थल हू अलौकिक होत है -- ।२

---

(१) सरस्वती भंडार, कांकरौली, बंध संख्या १५६, पुस्तक संख्या- १ ।
(२) वही ।

ग्रन्थ में हिंडोरा की भावना का उल्लेख किया गया है, इसलिए जान पड़ता है कि हिंडोरा की भावना तथा अधवासन की भावना गोस्वामी हरिराय जी की एक ही क्रम की रचनाएँ हैं।

यथेष्ट प्रमाण न मिलने पर ग्रन्थ को प्रामाणिक नहीं माना जा सकता है।

२- अधिक - भावना

'अधवासन' की भाँति यह ग्रन्थ भी लेखानुरूप है। 'परदेश-काल' में जब सेव्य-स्वरूप न हों तो भावना विधान का ही पालन करना चाहिए। वैष्णवों के लिए यह एक उपदेशात्मक लघु ग्रन्थ है। 'पाछे गृह में सब एकत्र होइ बैठि संध्या पर्यन्त गुणगान करत हैं।' जैसे कथनों से ज्ञात होता है कि वैष्णव कर्त्तव्य हेतु ही गोस्वामी हरिराय जी ने इस ग्रन्थ की रचना की होगी।

ग्रन्थ के अन्त में गोस्वामी हरिराय जी का रचयिता के रूप में उल्लेख मिलता है :-

> 'रात्रि लीला भावनीय नहीं, ताते नहीं लिखियत, गोप्य अंतरंग आसक्ति के अनुभाव करि गुणगान करत हैं। ज्यौं दिवस समय में ये व्रज भक्त। इति श्री हरिराय विरचितं अधिक-भावना समाप्तं सम्पूर्ण।'१

---

(१) निजी पुस्तकालय, नाथद्वारा, बंध संख्या- ८ पुस्तक संख्या- १० ।

३- अष्ट सखा तथा अष्ट समय के दर्शन को भाव

'अष्ट सखाओं की वार्ता' नामक ग्रन्थ की पृथक् प्रतियाँ प्राप्त होती हैं, किन्तु यह ग्रन्थ चौरासी तथा दो सौ बावन वार्ताओं से ही उद्धृत है। इसमें गोस्वामी हरिराय जी कृत भाव-प्रकाश निहित है। 'सूरदास की वार्ता' नामक गोस्वामी हरिराय जी की एक रचना प्रकाशित रूप में भी प्राप्त होती है।१ यह रचना सूरदास की वार्ता नामक रचना से भिन्न है। 'अष्ट सखा तथा अष्ट समय के दर्शन को भाव' नामक एक लघु ग्रन्थ गोस्वामी हरिराय जी कृत भाव-प्रकाश सहित मुद्रित अवस्था में भी प्राप्त होता है। २

इस ग्रन्थ में भगवान् कृष्ण के अष्ट सखाओं के भाव प्राधान्य वर्णन किए गए हैं तथा पुष्टि-मार्गीय मन्दिरों में व्यवहृत अष्ट झाँकियों का विवेचन भी किया गया है।

४- द्रव्य - शुद्धि

यह ग्रन्थ एक संग्रह ग्रन्थ में लिपिबद्ध है। इस ग्रन्थ से पहले 'पुष्टि-दृढ़ाव की वार्ता' गोस्वामी हरिराय जी कृत है तथा 'द्रव्य - शुद्धि' के पश्चात् गोस्वामी हरिराय जी कृत 'सूतक निर्णय' दिया गया है। 'द्रव्य-शुद्धि' में लेखक का कहीं उल्लेख नहीं मिलता किन्तु पहले और बाद में गोस्वामी हरिराय जी के ग्रन्थ सन्निहित होने से

---

(१) — सम्पादक- श्री प्रभुदयाल मीतल - अग्रवाल प्रेस, मथुरा (कुल पृ० १००)

(२) गोवर्द्धन ग्रन्थ माला कार्यालय, मथुरा सम्पा० निरंजन देव शर्मा, संवत् २०२६।

यह ग्रन्थ भी गोस्वामी हरिराय जी कृत माना जा सकता है। ग्रन्थ की हस्तलिखित प्रति कांकरोली से उपलब्ध हुई है। १

ग्रन्थ का प्रारम्भ इस प्रकार है:- 'अत्य शुद्र: रजस्वला, चंडाल, महापातकी, सूतका, ज्ञानस्पर्शी, शावा शौत्री, कूकर, चिता-धूम, चिता-काष्ठ, देव द्रव्योपजीवी ग्राम याजक, सोम विक्रमी, महाम्य भांड् सस्नेह, मनुष्यास्वि इतनेन ते छूवे तो सचैल स्नान करनो। २

शुद्धि संस्कार सम्बन्धी प्रस्तुत ग्रन्थ का आकार इतना लघु है कि इसे एक लेख ही कहना समीचीन प्रतीत होता है। यह लेखाकार ग्रन्थ संदिग्ध है।

५- द्वितीयापाट की भावना

'भाव-भावना' संग्रह ग्रन्थ में यह लघु-ग्रन्थ सन्निहित है। यह ग्रन्थ भाव-भावना के संग्रह का ही एक लेख विशेष है। नागरी प्रचारिणी सभा की खोज रिपोर्ट में भी इसका उल्लेख गोस्वामी हरिराय जी के ग्रन्थों में किया गया है। ३ ग्रन्थ की हस्तलिखित प्रतियों में 'द्वितीयापाट की भावना' तथा 'फूल मण्डली' नामक ग्रन्थ समन्वित रूप में मिलते हैं। अन्त में 'इति श्री हरिराय जी'

---

(१) सरस्वती भंडार, कांकरोली, बंध संख्या- ६२, पुस्तक संख्या- १।
(२) वही।
(३) हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों का पन्द्रहवां त्रै-वार्षिक विवरण, पृष्ठ-१६६।

कृत फूल मंडली को भाव सम्पूर्णम्`।१

६- नयौ वर्ष ताको भाव

यह `रहस्य-भावना` में सम्पादित एक लेख के अनुरूप ही है। इसमें नए वर्ष की भावात्मक कल्पना की गई है। लेखक की प्रवृत्ति रही है कि वह प्राय: लौकिक धरा पर अलौकिक वातावरण की सृष्टि कर वर्ण्य विषय में चमत्कार प्रस्तुत कर देता है। इस लेख को विषय और आकार की दृष्टि से पृथक् महत्व नहीं दिया जा सकता।

७- प्रेम परीक्षा

वृन्दावन से प्राप्त एक संग्रह ग्रन्थ में यह लघु ग्रन्थ समाविष्ट है।२ ग्रन्थ में कहीं भी गोस्वामी हरिराय जी का उल्लेख नहीं मिलता, किन्तु संग्रह ग्रन्थ के अन्य अधिकांश ग्रन्थ गोस्वामी हरिराय जी कृत ही हैं। प्रमाणाभाव में ग्रन्थ को प्रामाणिक नहीं माना जा सकता।

८- व्यालीस शिक्षा

इस ग्रन्थ की एक मात्र हस्तलिखित प्रति कांकरौली से प्राप्त हुई है।३ ग्रन्थ में वैष्णवों के लिये `व्यालीस शिक्षाओं का वर्णन`

---

(१) लाला भगवान् दास जी नाथद्वारा वाले के निजी संग्रह से प्राप्त।
(२) श्री रतन लाल जी गोस्वामी निधिवन, वृन्दावन वाले के संग्रह से प्राप्त।
(३) श्री सरस्वती भण्डार, कांकरौली, बंध संख्या- १०८, पुस्तक सं० २७।

किया गया है । ग्रन्थ छोटा है । विवरण द्रष्टव्य है :-

व्यालीस शिक्षा । गोस्वामी हरिराय जी कृत । कुल पृष्ठ ८ । आकार ६।।।"+ ४ ।।"। ७ पंक्ति प्रति पृष्ठ । लिपि प्राचीन । पठनीय ।

प्रारम्भ:- 'अथ पद वेतालीसमु लीख्यते । अब श्री हरिराय जी आज्ञा करत हैं संसार मैं ग्रहणो सो कहा । गुरु के वचन ।१। संसार मैं तत्व पायो सो क्यौं जानिये । जो सब जीवन को हित करनो ।२। संसार मैं उतावलो सो कहा, बूझो । जो संसार को संग करिबो ।३। संसार मैं मोक्ष को बीज सो कहा । जो ज्ञान सम्मान और बीज कोई नहीं ।'

अन्तिम :- 'इति श्री हरिराय जी कृत वेतालीस सीक्षा पत्र सम्पूर्णम् ।४२।[१]

प्राप्त प्रति के अध्ययन से ज्ञात होता है कि गोस्वामी हरिराय जी के ये व्यालीस उपदेश किसी अन्य व्यक्ति द्वारा संकलित करके ग्रन्थ रूप में प्रस्तुत किए गए हैं । 'अब श्री हरिराय जी आज्ञा करत हैं ।' से स्पष्ट होता होता है कि स्वयं हरिराय जी ने इसे नहीं लिखा । वैष्णव अनुयायियों में से ही किसी ने इसे लिपिबद्ध किया होगा ! अपने आचार्यों के प्रति सम्माननीय सम्बोधनों का प्रयोग इन वैष्णवों की वृत्ति रही है !

---

(१) सरस्वती भंडार, कांकरौली, बंध संख्या- १०८, पुस्तक सं० २७ ।

९- ब्रह्मस्वरूपाख्यान

इस ग्रन्थ की एक मात्र हस्तलिखित प्रतिलिपि वृन्दावन से प्राप्त हुई है। १ ग्रन्थ प्रामाणिक है। ग्रन्थ का आकार अन्य उपर्युक्त ग्रन्थों की भाँति छोटा ही है। विवरण द्रष्टव्य है :-

ब्रह्मस्वरूपाख्यान। गोस्वामी हरिराय जी कृत। कुल पृष्ठ- ५। आकार १६"+ १२" (बड़े पत्रा साँची के) संग्रह ग्रन्थ 'वातायें' में संग्रहीत। ३२ पंक्तियाँ प्रति पृष्ठ। प्रति प्राचीन है। पठनीय।

प्रारम्भ :- श्री कृष्णायनमः। अथ ब्रह्म स्वरूप कौं व्याख्यान लिख्यते। ब्रह्म के स्वरूप तीन, अक्षर (१) अक्षर (२) अक्षरातीत (३) तहाँ प्रथम अक्षरातीत कौ व्याख्यान करत हैं। तहाँ मार्ग तीन पुष्टि, प्रवाह, मर्यादा, (३) पुष्टि-मार्ग अक्षरातीत कौ मार्ग है। पुष्टि-मार्ग के स्वामी अक्षरातीत हैं। पूर्णानन्द गोवर्द्धनधरन पर ब्रह्म श्रीकृष्ण जिनके धाम में जीव सदा जाय सदा आनंद में रहैं। रासादि लीला कौ सुख देखैं फिर जन्म न होई सो काहे ते। श्रीकृष्ण जी श्रीमद् गीता विषे कह्यौ जो मेरे धाम में जाय। तो जन्म होइ। यद्गत्वान निवर्तंते तद्धाम परमं मम। यह श्लोक श्रीगीता

---

(१) श्री रतन लाल जी गोस्वामी, लाल जी की गद्दी, निधिवन, वृन्दावन।
(२) वही।

मैं कहे हैं । पूर्णानन्द परब्रह्म और वैष्णव चार विष्णुस्वामी, मध्वाचार्य, निवांदित्य, रामानुज, तातैं विष्णु स्वामी के इष्ट तो अक्षरातीत और तीन सम्प्रदाय के इष्ट तो अक्षर ब्रह्म सो अक्षर केसो षटु गुण जिन विषै है जिनके पास मुक्ति है चार प्रकार की । सालोक्य । सारूप्य । सामीप्य । सायुज्य, इन मुक्तिन मैं दोई मुक्ति हैं । सामुज्य, सामीप्य ।सो काहे तैं सायुज्य मुक्ति को प्राणी जाय अक्षर ब्रह्म के पास बैठे, और सालोक्य सारूप्य मैं जाय तो लीन होइ । अक्षर मैं जो लीन भयो तो सुख कहा, जैसे अग्नि मैं अग्नि मिल वाय तो कहू सुख कहा ---- ।'१

ग्रन्थ मैं पुष्मार्गीय सिद्धान्तों का शास्त्रीय विवेचन किया गया है । भाषा परिमार्जित तथा संस्कृत निष्ठ है । स्थान-स्थान पर शास्त्रों के उद्धरण दिए गए हैं । लेखक के दार्शनिक विचारों का व्यवस्थित रूप इस ग्रन्थ मैं दृष्टिगत होता है ।

अन्त :- 'तो इतने मैं गीता के श्री मद् भागवत् के श्लोकन सौं प्रमाण भयो सोऊ प्रमाण है, और इनसौं विरुद्ध करै सो कछु न प्रमाण । इति श्री हरिराय जी कृत ब्रह्मस्वरूपाख्यान सम्पूर्णम् । श्री।श्री।श्री ।'२

---

(१) रतन लाल जी गोस्वामी, वृन्दावन वाले की प्रति ।

(२) वही ।

१०- वल्लभ-ग्रन्थानुक्रम

यह ग्रन्थ एक लेखानुरूप विज्ञप्ति ही है । इसमें वल्लभाचार्य जी के द्वादस ग्रन्थों की तुलना भगवान् श्रीनाथ जी के अंग-प्रत्यंगों से की गई है, यथा--

' कृष्णाश्रय वामचरणारविंद । सिद्धान्त रहस्य दक्षिण चरणारविन्द । नवरत्न वाम कुक्षा । - - - ' १

इसमें रचयिता का कोई उल्लेख नहीं मिलता है किन्तु यह ग्रन्थ गोस्वामी हरिराय जी के नाम से ही जाना जाता है । ग्रन्थ संदिग्ध है ।

११- वैष्णवों के नित्य-निर्देश

इस ग्रन्थ में भी ग्रन्थकार का नाम नहीं मिलता, किन्तु ग्रन्थ हरिराय जी के अन्य ग्रन्थों के क्रम में ही लिपिबद्ध है । ग्रन्थ की हस्तलिखित प्रति वृन्दावन से प्राप्त हुई है २ विवरण द्रष्टव्य है :-

'पुष्टि-मार्ग वैष्णवों के नित्य कृत्य । कुल पृष्ठ १३ । आकार १६ + १२ ३२ पंक्तियां प्रति पृष्ठ । प्रारम्भ इस प्रकार है :-

---

(१) रतनलाल जी गोस्वामी, वृन्दावन वाले की प्रति ।

(२) वही ।

'प्रात् काल खाट ते उठ रात्रि के वस्त्र उतार मुष धोइ ।
आरसी में देख नमस्कार प्रभुन कों करि -----'।१
इसमें षट् घटिकाएं (खण्ड) हैं । ग्रन्थ संदिग्ध है ।

१२- स्वरूप निर्णय

उपर्युक्त ग्रन्थ की भांति इस ग्रन्थ में भी ग्रन्थकार का कहीं भी उल्लेख नहीं मिलता, किन्तु यह ग्रन्थ भी उसी संग्रह ग्रन्थ में गोस्वामी हरिराय जी के ग्रन्थ क्रम में ही समाविष्ट है । भाषा शैली में भी अन्य ग्रन्थों के समान है । यह ग्रन्थ ४१ पृष्ठों पर लिपिबद्ध है । प्रारम्भ इस प्रकार है:-

'श्री गोपीजन वल्लभाय नम: ।। अथ स्वरूप-निर्णयालिष्यते ।
ब्रह्मांडते और सबते पहिली बात कहयतु है । अरु नित्य
सिद्ध न को प्रागट्य कह अतु हैं । तहाँ पहलें तो एक मेवा
द्वितीय ब्रह्मणश्रुति ते श्री ठाकुर जी कों स्वरूपान्यक ज्योतिमय
टिकानों - - - -'।२

ग्रन्थ की भाषा पर्याप्त अशुद्ध है । इसमें पुष्टि-मार्गीय 'सेव्य स्वरूपों' का वर्णन तर्क-वितर्क के आधार पर किया गया है । ग्रन्थ संदिग्ध है ।

---

(१) रतनलाल जी गोस्वामी, वृन्दावन वाले, की प्रति ।

(२) वही ।

१३- सूतक निर्णय

यह ग्रन्थ आकार में छोटा है । इसकी दो हस्तलिखित प्रतियाँ प्राप्त होती हैं ।१ पुष्टि-मार्ग की मर्यादानुसार सूतक-निर्णय हेतु शास्त्र सम्मत विवेचन किया गया है, प्रारम्भ द्रष्टव्य है :-

'श्री कृष्णायनम: । अथ श्री हरिराय जी कृत सूतक निर्णय लिख्यते । प्रथम गर्भमास त्रय ३ पात होइ तौ मात्रा कौ त्रिरात्रि सूतक । मास उपरान्त ६ तक माता कौं रात्रि छह सूतक । कुटुम्बे स्नानेन शुद्धि: - - - ।'

अन्त :- 'माटी के मात्र कौ छूनौ नहीं । कोस दो सौ चालीस उपरान्त मृतक-सूतक स्नान मात्र शुद्धि होइ कुटुम्ब । इति श्री हरिराय जी कृत सूतक निर्णय: । शुभमवतु ।'२

यह ग्रन्थ कुल छै: पृष्ठों पर अंकित है । विवरण द्रष्टव्य है:-

हरिराय जी के पद संग्रह में अन्तिम पृष्ठों से पत्रा- १३३ से प्रारम्भ । आकार ८"+ ८" । १४ पक्ति प्रति पृष्ठ । प्रति प्राचीन । ग्रन्थ प्रामाणिक है ।

१४- स्वामिनी जी के स्वरूप की भावना

शोध यात्रा में इस ग्रन्थ की अब तक हस्तलिखित दो प्रतियाँ

---

(१) -- सरस्वती भंडार, कांकरौली, बंध संख्या- ६२, पुस्तक संख्या- १ ।
-- निजी पुस्तकालय,नाथद्वारा, बंध संख्या- ७७, पुस्तक संख्या- १ ।

(२) वही ।

नाथद्वारा तथा बृन्दावन से प्राप्त हुई हैं। नाथद्वारा वाली प्रति जीर्ण तथा अपूर्ण है जबकि बृन्दावन वाली प्रति पूर्ण तथा व्यवस्थित है। वृन्दावन वाली यह प्रति एक संग्रह ग्रन्थ में संलग्न है। प्रारम्भ द्रष्टव्य है:-

`श्री कृष्णाय नम:। अथ श्री हरिराय जी कृत `भावना`
श्री ठाकुर जी श्री स्वामिनी जी के स्वरूप की लिख्यते।
श्री ठाकुर जी अपनो स्वरूप कोटि कंदर्प लावर्ण धार्यो
तब आरसी मेलि कैं अपनो स्वरूप निहार्यो। स्वरूप
देखिकैं मन में आई जो काहू साथ रास खेलि करिये।
तब मन में बिचार्यो जो हम समान तो कोऊ नाँही।
कोन सों खेलिये। तब अपनी इच्छा ते अपने श्री अंग ते
श्री स्वामिनी जी प्राकट्य करी। अपने स्वरूप ते अधिक
लावण्यता राखी। तहाँ श्री स्वामिनी जी के तेज तें ताकी
किरनी गोपीजन प्रगट होत गई। तहाँ अलौकिक चन्द्र
पवन सुगंध सहित उत्पत्ति भए।

अन्तिम-अंश:-`श्री महाप्रभु जी की कृपा बिन न होइ। अपनी प्रभुता कौं
सब चाहत हैं। पर जीव के हाथ तो कछू नाँही। महाप्रभु
द्वारा दोई प्रकार के जीव अंगीकार करने हैं। एक मोक्षस्थल
के संबंधी हैं। एक रासलीला के संबंधी हैं। जिनको जैसी
योग्य। तिनको तैसी बुद्धि देत हैं। महाप्रभु जी श्री गुसाईं
जी के हाथ बात है। इति श्री हरिराय जी विरचित भावना
- संपूरन`।१

ग्रन्थ में राधा के स्वरूप का भावात्मक वर्णन किया गया है, जिन्हें सम्प्रदाय के मतानुसार `स्वामिनी जी` कहा गया है।

---

(१) श्री रतन लाल जी गोस्वामी, वृन्दावन वाले की प्रति।

उपरि विवेचित ग्रन्थों के अनुशीलन से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि इन ग्रन्थों में निम्नलिखित ग्रन्थ संदिग्ध है :-

१- अधवासन की भावना ।
२- द्रव्य शुद्धि ।
३- प्रेम परीक्षा ।
४- वल्लभ ग्रन्थानुक्रम ।
५- वैष्णवों के नित्य कृत्य, तथा
६- स्वरूप निर्णय ।

इन ग्रन्थों के अतिरिक्त गोस्वामी हरिराय जी के कुछ ऐसे ग्रन्थ भी मिले हैं, जिनका अन्यान्य साहित्यकारों ने यत्र-तत्र नामोल्लेख मात्र ही किया है, किन्तु ये ग्रन्थ उपलब्ध नहीं होते :-

उल्लिखित अप्राप्त ग्रन्थ :-

१- आचार्य महाप्रभु जी की द्वादस वार्ता ।१
२- कृष्णावतार स्वरूप निर्णय ।२
३- गुसाईं जी के चिन्तन को भाव ।३

---

(१) -- हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों का संक्षिप्त विवरण, (भाग-२), पृ० ६२६
-- मिश्रबन्धु विनोद- (भाग-१), नाम १०६, --- पृ० ३४२
(२) वही ।
(३) वही ।

४- गद्यार्थ भाषा ।१

५- चिन्तन ।२

६- छाक की भावना ।३

७- छप्पन भोग की भावना ।४

८- जप प्रकार ।५

९- ठाकुर जी के षोडस चिन्ह ।६

१०- भोला मारू की वार्ता ।७

११- तृतीय घर की उत्सव मालिका । ८

१२- नाम रत्न -स्त्रोत्र भाषा में ।९

१३- भगवती के लक्षण ।१०

१४- मार्ग स्वरूप सिद्धान्त ।११

१५- मार्ग शिक्षा ।१२

---

(१) मिश्रबन्धु विनोद (भाग-२), नाम १०६, --- पृ० ३४२

(२) महाप्रभु हरिराय जी नूं जीवन चरित्र , (गुजराती), -- पृ० ११६

(३) वही, तथा--

-- गो० हरिराय जी का पद साहित्य,(प्रकाशित), -- पृ० १३

(४) श्री द्वारकादास परिख एवं श्री मीतल जी की ग्रन्थ-सूची में ।

(५) वही ।

(६) हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण,(भाग-२), पृ०६२९

(७) मिश्रबन्धु विनोद, (भाग-१), नाम १०६, --- पृ०३४२

(८) श्री प्रभुदयाल मीतल जी की ग्रन्थ-सूची में ।

(९) हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण, (भाग-२), पृ०६२९

(१०) मिश्रबन्धु विनोद, (भाग-१), नाम १०६ , --- पृ०३४२

(११) श्री द्वारकादास परिख एवं श्री प्रभुदयाल मीतल की ग्रन्थ-सूची में ।

(१२) वही ।

१६- सुदामा जी री बार खड़ी तथा -१

१७- वल्लभाचार्य जी के स्वरूप को चिन्तन ।२

इन सभी गद्य ग्रन्थों के अतिरिक्त गोस्वामी हरिराय जी कृत निम्नलिखित टीका ग्रन्थ भी प्राप्त होते हैं ।--

१- अन्त: प्रबोध सटीक ।

२- कृष्णाश्रय की टीका ।

३- गोकुलाष्टक की टीका । (प्रकाशित)

४- नवरत्न की टीका । (प्रकाशित)

५- पुष्टि प्रवाह मर्यादा की टीका ।

६- भक्ति वर्द्धिनी की टीका ।

७- भागवतानुक्रमणिका ।

८- निरोध लक्षण की टीका ।

९- मधुराष्टक की टीका ।

१०- मंगल चतुष्पदी की टीका,(प्रकाशित) ।

११- यमुनाष्ट पदी की टीका,(प्रकाशित) ।

१२- सिद्धान्त रहस्य की टीका ।

१३- स्वामिन्याष्टक की टीका । (प्रकाशित)

१४- सौन्दर्य पद्य की टीका । (प्रकाशित) तथा--

१५- अन्य स्फुट टीकाएँ ।

इन टीका ग्रन्थों में कुछ ग्रन्थ बहुत छोटे हैं । पुष्टि-मार्गीय विद्वानों के अनुसार तो महाप्रभु जी के द्वादस ग्रन्थों पर गोस्वामी हरिराय जी ने

---

(१) मिश्रबन्धु विनोद, (भाग-१), नाम १०६, -- पृ० ३४२

(२) वही ।

-- परिख जी तथा मीतल जी की ग्रन्थ सूचियों में भी ।

टीकाएँ लिखी हैं, किन्तु वे सभी टीकाएँ अब प्राप्य नहीं। वर्ण्य विषय की दृष्टि से इन सभी टीका-ग्रन्थों का सैद्धान्तिक महत्व ही है। अत: इनका पृथक् विवरण देना समीचीन प्रतीत नहीं होता।

उपर्युक्त विवेचन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि गोस्वामी हरिराय जी के मूल तथा प्रामाणिक गद्य ग्रन्थों की संख्या ३४ है। मूल तथा संदिग्ध ग्रन्थों को मिलाकर यह संख्या उनचास हो जाती है। मात्र उल्लिखित सत्तरह ग्रन्थों को भी यदि इसमें मिला दें तथा चौदह टीका ग्रन्थों को भी सम्मिलित करदें तो यह संख्या अस्सी हो जाती है।

इन सभी ग्रन्थों के अतिरिक्त कुछ विद्वानों ने गोस्वामी हरिराय जी के कुछ और भी ग्रन्थों का उल्लेख किया है, किन्तु ये ग्रन्थ गोस्वामी हरिराय जी कृत नहीं हैं।

श्री प्रभुदयाल मीतल ने निम्नलिखित ग्रन्थ गोस्वामी हरिराय जी कृत लिखे हैं:-

१- महाप्रभु जी और गुसाईं जी के स्वरूप को विचार।
२- श्री गोकुलनाथ जी के बैठक चरित्र।
३- द्वादस निकुंज की वार्ता।
४- चरण-चिन्ह की भावना।

इनमें प्रथम ग्रन्थ 'महाप्रभु जी और गुसाईं जी के स्वरूप को विचार' गोस्वामी गोकुलनाथ जी कृत है। इस ग्रन्थ की प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों में गो० गोकुलनाथ जी का स्पष्ट उल्लेख किया है। १ गो० हरिराय जी कृत इस

---

(१) सरस्वती भंडार, कांकरोली, बंध संख्या- ९९, पुस्तक सं० १७।

इस नाम से अन्य कोई ग्रन्थ नहीं मिलता । इसी प्रकार 'गोस्वामी गोकुल-नाथ जी के बैठक-चरित्र' नामक ग्रन्थ की भी कोई प्रति दृष्टिगत नहीं होती । वैसे 'बैठक-चरित्र' नामक एक पुस्तक प्रकाशित है, उसमें गोकुल-नाथ जी के भी बैठक-चरित्र दिए गए हैं, किन्तु इस ग्रन्थ में गोस्वामी हरिराय जी के बैठक-चरित्रों का भी वर्णन है । अत: यह ग्रन्थ गोस्वामी हरिराय जी कृत नहीं ।

इसी प्रकार श्री द्वारका दास परिख ने कुछ ऐसे ही ग्रन्थों का उल्लेख किया है, जो गोस्वामी हरिराय जी कृत नहीं :-

(१) लीला भावना ।
(२) नवग्रह की भावना, तथा--
(३) गोकुल नाथ जी को रास को प्रसंग ।

उपर्युक्त विवेचन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि गो० हरिराय जी ब्रजभाषा के एक समर्थ गद्यकार थे । उनकी रचनाओं में हमें ब्रजभाषा गद्य का प्रारम्भिक स्वरूप तो मिलता ही है, साथ ही उसमें भावी गद्य के बीज भी अंकुरित होते आभासित होते हैं ।

गोस्वामी हरिराय जी ने गद्य साहित्य की रचना कर ब्रजभाषा-गद्य के अभाव को पूर्ण किया । उन्होंने भावना-ग्रन्थों से गद्य को अलंकृत स्वरूप प्रदान किया तथा सैद्धान्तिक ग्रन्थों से दुरुह विषयों को बोल-चाल की भाषा में व्यक्त कर गद्य के प्रति सामान्य-पाठक की रुचि बढ़ाई । दो सौ बावन और चौरासी वार्ताओं के प्रकाश में आने से हिन्दी साहित्य की अनेक समस्याओं का समाधान सुलभ होगया, यह गो० हरिराय जी के कठिन परिश्रम का ही परिणाम कहा जासकता है ।

पद्य -रचनाएँ :-

गोस्वामी हरिराय जी की काव्य रचनाओं के परिचय से पूर्व उनके काव्य में व्यवहित कवि 'छाप' की विवेचना कर लेना अधिक समीचीन प्रतीत होता है। गोस्वामी हरिराय जी ने अपने विभिन्न पदों में अपनी अनेक छापों का प्रयोग किया है, प्रथम इसी सन्दर्भ में स्पष्टीकरण किया जा रहा है :-

गोस्वामी हरिराय जी ने अपनी पद्य रचनाओं में रसिक, रसिकराय, रसिक शिरोमणि, रसिक-प्रीतम आदि छापों (उपनामों) का प्रयोग किया है। श्री प्रभुदयाल जी मीतल ने अपने द्वारा सम्पादित पद-संग्रह में प्रयुक्त गोस्वामी हरिराय जी की छापों का उल्लेख करते हुए निम्नलिखित तालिका दी है :-

-:: छा प ::-

विषय	रसिक प्रीतम	रसिक	रसिक राय	रसिक शिरोमणि	रसिक दास	हरि-दास	अन्य	बिना नाम	जोड़
कृष्णलीला	२९९	१२६	२५	७	२४	८	९	२	५००
उत्सव-त्योहार	-	-	-	-	-	-	-	-	-
सम्प्रदाय सम्बन्धी	१३	७०	४	४	४१	१०	५	-	१४७
विनय	२	११	-	१	२	५	-	३	२४
अन्य	२	२	-	-	-	१८	२	५	२९
जोड़-	३१६	२०९	२९	१२	६७	४१	१६	१०	७००

श्री प्रभुदयाल जी मीतल द्वारा सम्पादित 'गोस्वामी हरिरायजी के पद-साहित्य' नामक ग्रन्थ में 'हरिराय' नामके चार पद प्राप्त होते हैं। इसके अतिरिक्त 'सनेह लीला' में भी प्रारम्भ में गोस्वामी हरिराय जी की यह छाप मिलती है :- 'एक समय व्रजबास की सुरति करी 'हरिराय'।

गोस्वामी हरिराय जी के सम्बन्ध में जिन विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किए हैं, सभी ने एक मत से उनके रसिक, रसिक प्रीतम, रसिकराय, रसिक-शिरोमणि आदि उपनामों (छापों) को स्वीकार किया है।

अन्त:साक्ष्य के लिए 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' में गोस्वामी हरिराय जी ने भाव-प्रकाश में स्वयं का एक पद उद्धृत किया है।१ पद के अन्त में गोस्वामी हरिराय जी की 'रसिक' छाप निहित है।२ पद का तात्पर्य भी गोस्वामी हरिराय जी ने अपने भाव-प्रकाश में स्पष्ट किया है और अन्त में यह स्वीकार किया है कि रसिक छाप उन्हीं की है :-

> 'यह नवल छवि दूध पान करिवे के समय की शोभा ऊपर मैं-
> 'श्री हरिराय जी, 'बलिहारी जात हौं'।३

---

(१) गो० हरिराय जी प्रणीत- चौरासी वैष्णवन की वार्ता (तीन जन्म की लीला भावना वाली), संवत् १७५२ की प्रति- सम्पा० श्री द्वारकादास परिख, -- अग्रवाल प्रेस, मथुरा से मुद्रित, संस्करण तृतीय, पृष्ठ- ३

(२) हँसि हँसि दूध पीवत नाथ।
मधुर कोमल वचन कहि कहि, प्रानप्यारी साथ।
- - - - - - - - - -,
स्यामा स्याम की नवल छवि परि 'रसिक' बलि बलि जात।
-- वही, -- पृष्ठ- ३

(३) वही, पृष्ठ-४।

'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' की इस प्रकाशित पुस्तक की आधार प्रति संवत् १७५२ की लिखी हुई है। इस प्रकार आधार प्रति का लेखन गोस्वामी गोस्वामी हरिराय जी के समय में ही हुआ था।। 'बलिहारी जात हौं' वर्तमान की क्रिया है। इससे स्पष्ट होता है कि गोस्वामी हरिराय जी ने पदों में अपनी छाप (उपनाम) 'रसिक' का प्रयोग किया है।

रसिक शिरोमणि, रसिक प्रीतम, रसिकरायआदि छापों का प्रयोग कवि ने प्राय: पाद-पूर्ति के लिये ही किया है। उनकी मुख्य छाप 'रसिक' ही है। इनके अतिरिक्त 'हरिदास' छाप का प्रयोग उन्होंने प्राय: संस्कृत तथा गुजराती पद-रचनाओं में किया है। कुछ व्रजभाषा के पदों भी उनकी यह छाप समाविष्ट है।

'गिरधर लाल जी के १२० वचनामृत' नामक ग्रन्थ में भी गोस्वामी गिरधर लाल जी ने गोस्वामी हरिराय जी की रसिक छाप का उल्लेख किया है।१ यह ग्रन्थ प्रकाशित है तथा सम्प्रदाय के मान्य ग्रन्थों में से एक है। नागरी प्रचारिणी सभा, काशी की खोज रिपोर्ट में गोस्वामी हरिराय जी की छापों के सम्बन्ध में लिखा है, 'रसिक शिरोमनि' हरिराय जी का उपनाम है। इनके रसिकराय, रसिक प्रीतम आदि और भी नाम प्रख्यात हैं।'२

---

(१) 'और श्री हरिराय जी ने कीर्तन किये हैं तामें रसिकराय की छाप धरी है।' -- श्री गिरधर लाल जी के १२० वचनामृत,
-- सम्पा० लल्लूभाई छगन लाल देसाई, प्रथम संस्करण संवत् १९७९, (अहमदाबाद), वचनामृत-३१, पृ० ५९

(२) हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों का सोलहवां त्रै-वार्षिक विवरण- पृ०१३८।

शोध में प्राप्त गोस्वामी हरिराय जी के सभी पद-संग्रहों में उपर्युक्त छापों का प्रयोग मिलता है। उनकी उपरि विवेचित छापों में केवल 'रसिकदास' छाप संदिग्ध है। इस छाप का उन्होंने कुछ भी पदों में प्रयोग किया है। इस छाप के पद 'सम्प्रदाय सम्बन्धी' अधिक हैं। 'रसिक दास' छाप श्री गोपिकालंकार (मट्टू जी) महाराज की भी है। मट्टू जी ने अपने समस्त पदों में इसी छाप का प्रयोग किया है। मट्टू जी महाराज गो० हरिराय जी के परिवर्ती आचार्य थे तथा गोस्वामी हरिराय जी के परम-भक्त भी थे। इन्होंने अन्य आचार्यों की 'बधाई की भाँति गो० हरिराय जी की भी बधाइयाँ लिखी हैं। इनका एक संग्रह-ग्रन्थ प्रकाशित भी है।१

गोस्वामी हरिराय जी के प्रकाशित पद संग्रह में सम्पादक श्री प्रभुदयाल मीतल ने 'रसिकदास' छाप के अनेक संदिग्ध पद भी संग्रहीत कर दिए हैं। इनमें अधिकांश पद श्री गोपिकालंकार जी (मट्टू जी) महाराज के लिखे हुए हैं। श्री मट्टू जी महाराज की इस छाप का उल्लेख श्री गिरधरलाल जी के वचनामृतों में भी हुआ है।२ श्री प्रभुदयाल जी मीतल के संग्रह में सम्पादित निम्न-लिखित कुछ पद श्री मट्टू जी महाराज के पद-संग्रह में भी प्राप्त हैं :-

हौं बारी इन वल्लभियन पर ।। ३

-- श्री मीतल जी का संग्रह- पद संख्या- ६४१

---

(१) श्री गोपिकालंकार जी मट्टू जी महाराज के ३२ वचनामृत तथा पद-संग्रह -- सम्पादक लल्लूभाई छगनलाल देसाई, अहमदाबाद।

(२) श्री गिरधर लाल जी के १२० वचनामृत, सम्पादक वही, पृष्ठ- ६०,

(३) श्री गोपिकालंकार जी मट्टू जी महाराज के ३२ वचनामृत, सम्पादक वही, --पद सं० ४४, पृष्ठ- २३।

मिले कब श्री वल्लभ के प्यारे ।१

-- श्री मीतल जी का पद-संग्रह, पद सं० ६४२

हौं हरिदास वर्य पैं वारी ।२

-- श्री मीतल जी का पद-संग्रह, पद सं० ५०३

करिये श्री सर्वोत्तम रस-पान ।३

-- श्री मीतल जी का पद-संग्रह, पद सं० ६४७

उपर्युक्त पद गोस्वामी हरिराय जी रचित पद संग्रह के सम्पादित संस्करण में संग्रहीत हैं तथा अन्य स्थलों पर भी इनका उल्लेख गोस्वामी हरिराय जी कृत के रूप में ही मिलता है। अत: ऐसे पदों को 'मट्टू जी महाराज' द्वारा रचित मान लेना भी समीचीन प्रतीत नहीं होता। हो सकता है कि मट्टू जी महाराज के संग्रह में भी संग्रह कर्ता की असावधानी वश ये पद सम्पादित हो गए हों। इस प्रकार 'रसिक दास' छाप के पद विवादास्पद ही हैं।

श्री प्रभुदयाल जी मीतल द्वारा सम्पादित पद संग्रह में कुछ ऐसे पद भी संग्रहीत हैं जो अन्यान्य कवियों के नाम से जाने जाते हैं :-

---

(१) श्री गोपिकालंकार जी मट्टू जी महाराज के ३२ वचनामृत तथा पद-
-- सम्पादक लल्लूभाई छगनलाल देसाई, अहमदाबाद, पद सं० ४५,
--पृष्ठ सं० २४

(२) वही, पद संख्या- ५२, -- पृष्ठ सं० २६

(३) वही, पद संख्या- ५६, -- पृष्ठ सं० २८।

वे हरिनी हरिनी न रहाईं ।
जिन तन कृपा कटाच्छ चितै तुम, अपने ढिंग बैठाईं ।
जिन गुन सिंधु जाति हरि मूरति, कृष्णासार तजि आईं ।
- - - - - - - - - -।
'रसिक प्रीतम' करुना तैं तिनहूं गोपिन की गति पाईं ।१

श्री प्रभुदयाल जी मीतल ने अपने सम्पादित ग्रन्थ में गोस्वामी हरिराय जी की 'रसिकराय' तथा 'रसिकदास' छाप के लिये निम्नलिखित पद उद्धृत किया है ।-

रसिक राय विनती कीन्हीं , रसिकदास छाप दीन्हीं ।
श्री वल्लभ रटत हिएँ , और पंथ त्यागे । (पद सं० ५४८)

किन्तु अन्यत्र पाठ इस प्रकार मिलता है :-

रसिकराय विनती कीन्हीं दास छाप दीन्हीं ।२

यहाँ पर छाप का अर्थ उपनाम से नहीं ग्रहण किया जा सकता, किन्तु 'दास' छाप दासत्व का बोधक है ।

---

(१) किंचित पाठ भेद इस प्रकार है :-
वे हरिनीं हरिनींद न जाईं
जिन पर कृपा कटाच्छ चितै तुम अपने ढिंग बैठाईं
जिन अपने नैनति मोंहन कौं गोपिन सुरति दिखाईं ,
- - - - - - - - ,
परमानन्द स्वामी करुना तै गोपिन की गति पाईं ।
--देखिए :- परमानन्द सागर- सम्पा० डा० गोवर्द्धननाथ शुक्ल, पद ८५८
(२) वर्षोत्सव के पद, सम्पा० लल्लूभाई छगन लाल देसाई(भाग-२), पृ० २४१ ।

'नव-विलास' नामक पद्य रचना में गो० हरिराय जी की 'रसिकदास' छाप का प्रयोग मिलता है ।१ यह रचना प्रामाणिक है । इससे सिद्ध होता है कि गोस्वामी हरिराय जी ने 'रसिकदास' छाप का प्रयोग कुछ-क रचनाओं में किया अवश्य है ।

> उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि गोस्वामी हरिराय जी ने अपनी पद-रचनाओं में रसिक, रसिक प्रीतम, रसिक - शिरोमणि , रसिकराय, हरिदास, रसिकदास आदि छापों का प्रयोग किया है ।

गोस्वामी हरिराय जी ने अनेक काव्य कृतियों का सृजन किया है । इनमें उन्होंने स्फुट पद अधिक लिखे हैं, जिनके विभिन्न हस्तलिखित संग्रह प्राप्त होते हैं, इन प्राप्य पद संग्रहों का विवरण द्रष्टव्य है :-

-:: स्फुट - पद ::-

गोस्वामी हरिराय जी के पदों को सर्व प्रथम श्री प्रभुदयाल मीतल ने अग्रवाल प्रेस मथुरा से संवत् २०१८ में संकलित कर प्रकाशित किया था । इस संकलन का आधार श्री मीतल जी ने मथुरा संग्रहालय की (सं० १९२१- की) हस्तलिखित प्रति तथा रतन लाल गोस्वामी, वृन्दावन की तीन हस्तलिखित प्रतिलिपियों को माना है ।

रतन लाल जी गोस्वामी पाकिस्तान विभाजन के समय डेरा गाजी खान से भाग कर वृन्दावन आए थे । ये महोदय 'लाल जी की गद्दी' (जिसे

---

(१) गो० हरिराय जी का पद साहित्य,(प्रकाशित), भूमिका से।

ये वल्लभ सम्प्रदाय की आठवीं गद्दी मानते हैं) के आचार्यों के वंशानुयायी हैं। पाकिस्तान छोड़ते समय ये यथा सम्भव गृह-वस्तुओं के साथ अपने पूर्वजों के संग्रहीत ग्रन्थों को भी ले आए थे। उन्हीं ग्रन्थों में गोस्वामी हरिराय जी के पदों की तीन संकलित पोथियाँ भी प्राप्त हुई हैं, जिसका विवरण श्री मीतल जी ने अपने ग्रन्थ में दिया है।१ श्री मीतल जी ने रतन लाल गोस्वामी की प्रतियों का लिपिकाल नहीं दिया है, और लिखा है कि 'इनमें लिपिक के नाम और लिपिकाल का भी उल्लेख नहीं किया गया है।२ किन्तु रतन लाल गोस्वामी जी की उक्त 'पूर्णप्रति' में लिपिकाल का उल्लेख मिलता है।३ इन सभी प्रतियों में गोस्वामी हरिराय जी के जो पद मिले हैं वे पर्याप्त अशुद्ध लिखे गए हैं, इनमें नित्योत्सव के ही पद संग्रहीत हैं। इन आधार प्रतियों के आधार पर सम्पादित श्री मीतल जी के संग्रह में कुछ पद ऐसे भी मिलते हैं जो अन्य कवियों के लिखे हुए हैं, किन्तु उन पदों के अन्तिम चरण हटा कर उनको गोस्वामी हरिराय जी के नाम से ही प्रस्तुत कर दिये हैं, यथा :-

> त्रिय बागौ ललिता ही दियौ, स्यामा पति सुघर सुजान,
> रसिक रूप धरि केलि करी, सुख सागर प्रानन - प्रान ।।४

'प्रस्तुत पद में 'रसिक' विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है। इस पद की दो पंक्तियाँ और भी शेष हैं जो श्री मीतल जी के संग्रह में समायोजित नहीं।-

---

(१) गो० हरिराय जी का पद साहित्य - दृष्टव्य- भूमिका।

(२) वही, पृष्ठ- ५।

(३) 'संवत् १८५४ मिती फागवदी १२ बारस के दिन मोहन मुरारी सुमरण को उछव सोमवार--'। -- श्री रतन लाल जी की 'पूर्ण प्रति' में --प्रारम्भिक कथन।

(४) गो० हरिराय जी का पद साहित्य, (प्रकाशित), पद सं० ३६५।

सरद निसा सुख इति विधि राधा माधव बनित बिहार ,
सोभा पर बलि जाय 'स्याम धन' अवलोकत सुखसार ।।१

इस प्रकार यह निर्णय पूर्वक कहा जासकता है कि उपर्युक्त पद स्यामघन कृत ही है, इसी प्रकार पद सं० ३६६ में हरिदास प्रभु की यह शोभा निरखत मन न अघाय' जैसी छाप वाले पद गोस्वामी हरिराय जी के नहीं जान पड़ते ।

गोस्वामी हरिराय जी कृत दान लीला की प्राय: सभी प्रतियों में प्रारम्भ इस प्रकार दिया गया है :-

तुम नन्द महर के लाल, मोहन जान दें ।
रानी जसुमति प्रान अधार, मोहन जान दें ।।२

मीतल जी के सम्पादित संग्रह में सन्निहित हरिराय जी की दान लीला में उक्त दो पंक्तियां नहीं मिलतीं । इस प्रकार श्री मीतल जी के सम्पादित ग्रन्थ में अनेक विभेद दृष्टिगत होते हैं ।

-:: हस्तलिखित - प्रतियां::-

श्री प्रभुदयाल मीतल की आधार प्रतियों के अतिरिक्त और भी अनेक हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त होती हैं, जिनमें गोस्वामी हरिराय जी के पदों को संकलित किया गया है । इन विविध प्रतिलिपियों का विवरण द्रष्टव्य है :-

---

(१) वर्षोत्सव, प्राचीन प्रति, पृष्ठ- ४० (लेखक के निजी संग्रह से),
(२) वर्षोत्सव, वही, पृष्ठ-२२३ ।

कांकरोली विद्या विभाग के सरस्वती भंडार से गोस्वामी हरिराय जी के तीन हस्तलिखित पद संग्रह उपलब्ध हुए हैं, जिन्हें अ, ब तथा स से सम्बोधित किया जा रहा है :-

(अ) ग्रन्थागार की विषय सूची में इस ग्रन्थ का नाम कीर्तन संग्रह `नित्य पद` है। ग्रन्थकार के स्थान पर `रसिक` लिखा है।१ यह गोस्वामी हरिराय जी के पदों का संग्रह ग्रन्थ है। इसमें नित्य सेवा के ही पद हैं, विवरण द्रष्टव्य है :-

पद संग्रह। गोस्वामी हरिराय जी कृत। आकार ९।।"+ ३।।"। ६ पंक्तियाँ प्रति पृष्ठ। व्रजभाषा। लेखन प्राचीन। कुल पत्रा ५९ (पृष्ठ- ११८), कुल पद १६३।

प्रारम्भ :- `श्री गोकुलेन्दु ।। नित्य के पद। मंगला चरन। राग रामकली। मेरि मति राधिका चरन रज मैं रहो। ---, `रसिके` वल्लभ चरन कमल जुग परिसरन, आस धरि यह महा पुष्टी पथ फल कहो।२
श्री यमुना जी स्तवन ।। श्री यमुना जी तुमसी और न सोइ। ---, ३

यमुना जी के इस पद में अन्य प्रतियों में `सोइ` के स्थान पर `कोई` मिलता है और वही उपयुक्त भी है। इन पदों के पश्चात् `आचार्य जी के पद लिखे गए हैं, जिनमें महाप्रभु श्री बल्लभाचार्य जी के प्रति कवि का दैन्य दृष्टिगत होता है, यथा :-

---

(१) सरस्वती भंडार, कांकरोली, बंध सं० १२, पुस्तक सं० ६।
(२) देखिये-- गो० हरिराय जी का पद साहित्य, (प्रकाशित), पद सं० ६५७ -- तदनुरूप।
(३) वही, पद सं० ५०६।

- श्री वल्लभ श्रीवल्लभ गाऊँ ,
- मोरे श्री वल्लभ कहिऐं --- ,

इसके उपरान्त वन को प्रबोध ` सुरतान्त । खंडिता । मान । बाल भोग । श्रृंगार । दरपन को पद । उराहने को पद । गाय चरावन । पलना तथा राजभोग शीर्षक पद हैं ।

प्रस्तुत पद संग्रह में श्रृंगार परक पद अधिक हैं, संयोग श्रृंगार के कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं :-

मोर भये आरस मोरन मिस
पिय प्यारी रहे दोऊ लपटाय
अन्तर नैंक न रह्यौ उनमैं -
मिल कैं एक सरूप लखाय ।
वदन कमल आमोद लैन को -
मधुकर `रसिक` तहाँ ढिंग जाय
यह छवि निरखत रखी वृन्द मैं
आनंद उर न समाय ।।१

+ + +

मीड़ित नैन उठि दोऊ कर, करि आरस मोरत भुज जोरैं ,
लोग चवाव करनि उर डरपति, बोलै खगजहाँ तहाँ चकु ओरैं ।
प्रिय जैहौं हौं अपने भुवन, पहुँचाय मोहे भए बिन भोरैं ,
`रसिक प्रीतम` रस बस करि राखी, कुंज भवन करि निपट निहोरैं ।।२

---

(१) सरस्वती भंडार, कांकरोली, बंध संख्या १२, पुस्तक सं० ६, पत्रा ५
(२) वही ।

लाज भरी अखियाँ मुख देखत सुरत भई, रति की हँसि देति,
अरुन नैंन दोऊ निशि जागर के झपकत विझुक जमाईं लेति,
कबहुक आय परत पीतम परि मेटति अति अरमान समेटि,
'रसिक पीतम' प्यारी छवि परि बलि जैये देखत परस्पर हेत ।

इस तरह के शृंगार प्रधान पद इस संग्रह ग्रन्थ में अधिक हैं । खंडिता, सुरतान्त तथा मान के पद अत्यन्त सुन्दर हैं । इस ग्रन्थ में कुछ पद ऐसे भी हैं जो शोध में सर्व प्रथम उपलब्ध हुए हैं :-

-- चौपर खेलत हैं पिय - प्यारी ।
-- देखौं मैं स्याम अटपटौ रूप ।
-- मोहे गोपाल कछु टोना कीन्हौं ।

इस प्रकार के और भी पद प्राप्त होते हैं । इस संकलन का अन्तिम पद अधूरा है :-

अखियाँ हारी हो
कहाँ बसे तुम सब निसि मोहन , मो अब दई विसारी हो,
- - - - - - - - - -

ग्रन्थ में पुष्पिका नहीं दी है, अत: लिपिकार तथा लिपिकाल का निश्चित निर्देश नहीं मिलता । पुस्तक की जिल्द पर चिपका हुआ कागज किसी 'हिसाब की बही' का है, जिसमें संवत् १७७७ का लेखन है । इससे स्पष्ट होता है कि ग्रन्थ संवत् १७७७ के पश्चात् लिपिबद्ध हुआ होगा । लेखन की दृष्टि से ग्रन्थ लगभग २०० वर्ष पुराना प्रतीत होता है । लेखन पर्याप्त अशुद्ध है, किन्तु पठनीय है ।

इस संग्रह ग्रन्थ में रसिक व रसिक प्रीतम छाप के पदों की संख्या ही अधिक है। वैसे 'रसिक शिरोमनि', 'रसिक राय' आदि छाप के पद भी एक-दो ही मिलते हैं। इस संग्रह ग्रन्थ में रसिकदास छाप का एक भी पद नहीं मिलता।

(ब) कीर्तन संग्रह नाम से यह पदों का एक वृहद् संग्रह है। इसमें विविध कवियों के पद संग्रहीत हैं।१ ग्रन्थ की जिल्द पर रचयिता के स्थान पर गोस्वामी हरिराय जी का उल्लेख है, किन्तु इसमें गोस्वामी हरिराय जी के ३२ पद ही हैं। इनमें रसिक, रसिक प्रीतम, रसिकराय, आदि छापों का प्रयोग किया गया है, विवरण द्रष्टव्य है :-

कीर्तन संग्रह। हरिराय जी कृत। कुल पत्रा २१ (पृष्ठ-४२)। कुल पद ७०। १० पंक्तियाँ प्रति पृष्ठ। आकार ६।।।" + ५।।।"।

इस ग्रन्थ में सूरदास, द्वारकेश, व्रजाधीश, प्रीतम, हरिदास, विष्णुदास आदि विविध कवियों के पद प्रथम खण्ड में हैं। दूसरे खण्ड में भी अन्यान्य कवियों के नित्य के पद संग्रहीत हैं।

प्रथम खण्ड में गोस्वामी हरिराय जी के ३२ पद हैं, जोकि श्री मीतल जी के सम्पादित संग्रह में भी उपलब्ध होते हैं। इस संग्रह ग्रन्थ में प्रथम खण्ड के अन्त में गोस्वामी हरिराय जी का ही पद है :-

पदान्त-- 'रसिक' कहैं आस इनकी करि,
वल्लभियन की चरन रजि अनुसरि ।।

---

(१) सरस्वती भंडार, कांकरोली, बंध संख्या- २६, पुस्तक सं० ४ ।

उक्त पद के आगे कुछ पत्राओं को छोड़कर दूसरा खण्ड प्रारम्भ होता है, इसमें भी गोस्वामी हरिराय जी के कुछ पद सन्निहित हैं :-

श्री वृन्दावन बन-कुंजन ठाढ़े उठि भोर ।
वाहैं जोरि वदन मोरि हँसत सुरत इनकी ओर ।।
- - - - - - - - - - ।
`रसिक प्रीतम` छवि निहारि उदयो जनु घन विचारि ।
बार बार उमगि उमगि बोलत है मोर ।।१

इस संग्रह ग्रन्थ के द्वितीय खण्ड के अन्त में सगुनदास का पद दिया गया है:-

सगुनदास कहैं रसिक जूथ मिलि गिरधर महल विराजैं ।।

अन्त के १० पत्रा रिक्त हैं। पुष्पिका नहीं दी गई है। ग्रन्थ का लेखन अधिक प्राचीन प्रतीत नहीं होता । इस संग्रह में `रसिक दास` छाप के पद नहीं मिलते ।

(स) इस पद संग्रह में आश्रय के तथा नित्य के पद हैं। ग्रन्थ अपूर्ण तथा जीर्ण है। विवरण द्रष्टव्य है :-

पद संग्रह। गोस्वामी हरिराय जी कृत। आकार ८"+ ७"। १० पंक्ति प्रति पृष्ठ। लेखन प्राचीन। अपूर्ण।

---

(१) सरस्वती भंडार, कांकरोली, बंध संख्या- २६ , पुस्तक सं० ४, पत्रा-८ ।

इस ग्रन्थ में पत्रा ४० तक अष्टछापी कवियों के विविध पद हैं। पत्रा ४१ से गोस्वामी हरिराय जी के पद प्रारम्भ होते हैं, यथा :-

> ' अब हरिराइ जी के पद लिख्यते। राग भैरव। दीनौ दरस सुपने में आइ - - - ।'

प्रारम्भ में अधिकांश आश्रय के पद हैं, यथा --

> -- हरि के विमुखन कौ मुख जिन दिखावै।
> -- नाथ हा हा मोहि दरस दीजै।
> -- नैंक बोलौं नाथ अमृत रस बैन।

इनके अनन्तर श्रृंगार रस के भी सुन्दर पद दिए गए हैं,-

> -- पिया बिन जागत रैन गई,।
> -- पिय हू कौ राखति हैं निसदिन।
> -- कहा तू अरि रही री।

इन पदों के पश्चात वल्लभाचार्य जी के आश्रय के पद अंकित हैं,--

> -- बलि बलि जाउ श्री वल्लभ नाथ।
> -- रह्यौ मोहि श्री वल्लभ गृह भावै।

इसके उपरान्त गाय चरावन के, बाल-लीला, श्रृंगार आदि के विविध पद संगृहीत हैं। इस ग्रन्थ के प्राय: पद श्री मीतल जी के सम्पादित संग्रह में भी प्राप्त होते हैं, किन्तु कुछ पद नवीन भी प्राप्त होते हैं :-

> -- अब रे मैं जानी इन दूजे ठानी।
> मेरौ लाल सौतन वस कीनौ सो मैं जिय पहिचानी।
> कैसैं करौ कित जाऊं मेरी सजनी प्रीतम यह विधि ठानी।

'रसिक प्रीतम' कोऊ आनि मिलावौ, राखौंगी नैन समानी ।

+ + + +

चरन कमल की चेरी , छाड़हु लाला नन्द के ।।

ऐसे पदों की संख्या बहुत ही कम है । इस संग्रह ग्रन्थ में गोस्वामी हरिराय जी के कुल २५ पद हैं । इन पदों में प्राय: रसिक, रसिक प्रीतम आदि छाप ही मिलती है । 'रसिक दास' छाप का कोई भी पद प्राप्त नहीं होता ।

उपरिनिर्दिष्ट अ, ब, स, तीनों प्रतियों में प्रति 'अ' विशेष महत्वपूर्ण है, किन्तु 'ब' एवं 'स' में भी कुछ पद नवीन मिलते हैं तथा पाठ-शुद्धि के लिये इनका उपयोग किया जा सकता है ।

गोस्वामी श्री ब्रजेश कुमार जी की प्रति :-

यह हस्तलिखित पद संग्रह वल्लभ सम्प्रदाय के वर्तमान तृतीय पीठाधिपति गोस्वामी १०८ श्री व्रजभूषण लाल जी महाराज के सुपुत्र श्री व्रजेश कुमार जी के निजी संग्रह से उपलब्ध हुआ है । विवरण द्रष्टव्य है :-

पद संग्रह । गोस्वामी हरिराय जी कृत । आकार ३४ + २१ सें० मी० । कुल पत्रा ६१ । २६ पंक्ति प्रति पृष्ठ । लेखन सुन्दर व प्राचीन । प्राप्य स्थान वड़ोदा । कुल पद ४५३ ।

इस संग्रह में प्रारम्भ से पत्रा ५६ तक गोस्वामी हरिराय जी के ही पद सम्पादित किए गए हैं । लिपिकार कोई गुर्जर भाषी प्रतीत होता है, फलत: यत्र-तत्र लेखन में अशुद्धियाँ विद्यमान हैं । अन्त में पद सं० ४५३ के पश्चात् लिखा है :- 'इति श्री हरिराय के पद सम्पूर्ण ।'

पत्रा ५६ की १५ वीं पंक्ति के पश्चात् चार और भी पद हैं, इनमें पहला पद नंददास का, दूसरा हरिराय जी का, बाद के दोनों पद नन्ददास के हैं। अन्तिम पृष्ठ पर छीत स्वामी का एक बृहद-पद है, छीत स्वामी का यह पद किसी अन्य लिपिकार का लिखा हुआ ज्ञात होता है। लेखन पहले से भिन्न है। लिपिकाल तथा लिपिकार का कुछ भी उल्लेख नहीं है।

इस संग्रह में गोस्वामी हरिराय जी की, रसिक, रसिकराय, रसिक चरण, रसिक-सिरोमणि, रसनिधि, दास-रसिक व हरिदास, छापों का प्रयोग हुआ है। समस्त संग्रह में रसिक दास छाप का एक भी पद नहीं हैं।

इस संग्रह में लगभग ६० ऐसे पद मिले हैं जो सर्वथा नवीन हैं, कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं :-

-- कहा करौ हरि दूरि रहे -- ।
-- गाय चरावन की फेर ब्रज आमन की -- । १
-- सखी हरि मनहरि कहा उगायौ -- ।२
-- अजहू न आयौ पिय परदेशी -- ।३
-- पिय बादर वरसत दोऊ -- ।४

---

(१) गो० व्रजेश कुमार जी का संग्रह, पत्रा ४६ ।
(२) वही,। --
(३) वही, -- पत्रा ५१ ।
(४) वही, -- पत्रा ५८ ।

-- रैमन तू वल्लभ जू के चरन सरन जाइ -- ।१
-- कैसे सहै जसुमाई तेरो लाल -- ।२
--- आदि ।

उपर्युक्त पद-संग्रह ग्रन्थों के अतिरिक्त अनेकों अन्य साम्प्रदायिक कीर्तन संग्रहों में गोस्वामी हरिराय जी के पद मिलते हैं। नित्य कीर्तन, वर्षोत्सव, वसंतधमार, कीर्तन-कुसुमाकर आदि प्रसिद्ध पद-संग्रहों में इनके पद भी निहित हैं। इनमें बहुत से ऐसे पद हैं जो गोस्वामी हरिराय जी के प्रकाशित संग्रह में नहीं आ सके हैं।३

उपरिविवेचित संग्रह ग्रन्थों के अतिरिक्त नाथद्वारा में श्रीनाथ जी के मन्दिर स्थित `निजी पुस्तकालय` में भी गोस्वामी हरिराय जी के कुछ पद संग्रह प्राप्त हुए हैं। निजी पुस्तकालय के संरक्षक `टीकैत` गोस्वामी श्री गोविन्द लाल जी हैं। यह उनका वैयक्तिक ग्रन्थागार है। जिसमें सैकड़ों प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ निहित हैं। पुष्टि-मार्गीय साहित्य के लिये यह ग्रन्थागार विशेष उपयोगी है। लेखक को यहाँ से निम्न-लिखित सामग्री प्राप्त हुई है, --

यहाँ से प्राप्त तीन पद संग्रह उल्लेखनीय हैं,--

(१) `हरिराय के पद`, इस ग्रन्थ का नाम दिया गया है। रचयिता के स्थान पर गोस्वामी हरिराय का उल्लेख है,४

---

(१) गो० ब्रजेश कुमार जी का संग्रह, पत्रा २० ।
(२) वही, -- पत्रा ३८ ।
(३) लेखक के निजी संग्रह में संग्रहीत ।
(४) निजी पुस्तकालय, नाथद्वारा, बंध संख्या- १७, पुस्तक सं० ३ ।

ग्रन्थ परिचय :- कुल पत्रा १६५ । २० पंक्तियाँ प्रति पृष्ठ । नाप- ६"+ १२" । लेखन प्राचीन व सुस्पष्ट । लेखनकाल तथा लिपिकार का उल्लेख नहीं हैं । प्राप्ति स्थान `निजी पुस्तकालय` नाथद्वारा, (मेवाड़)।

ग्रन्थ में सर्व प्रथम अष्ट-छापादि कवियों के पद संग्रहीत हैं । तत्पश्चात् गोस्वामी हरिराय जी के पद हैं - यथा--

`अथ श्री आचार्य जी के उत्सव के पद राग देवगंधार ।। भूतल महा महोच्छव आज ------ रसिक सिरोमनि

सदा विराजे श्री वल्लभ सिरताज ।

महाप्रभु वल्लभाचार्य जी के आश्रय के कुल ४० पद हैं --

-- सबहु मिलि गावहु गीत बधाई ।
-- श्री वल्लभ मुख-कमल की हौं बलि बलि जाऊँ ।
-- देखौगे कब मेरी ओर ।
-- श्री वल्लभ मधुराकृत मेरे । आदि --

इन पदों में प्राय: `रसिक` छाप ही है । पद संख्या २९ में रसिकदास छाप है, हरिधन, हरिदास तथा दास छाप के एक दो ही पद हैं ।

इसके पश्चात् कृष्ण जन्म का वृहद् पद है, बाल-लीलाओं के और भी अनेक सुन्दर पद हैं :- यथा---

-- जनम सुत को होत ही ।
-- गोपी जन मन आनंद भयौ ।
-- जसुमति सुत जनमि सुनि ।

जन्म के पश्चात् पालने के पद हैं :-

-- झूलौ पालने नंदनन्द ।
-- जसुमति सुत कौ पालने झुलावै ।
-- जसुमति सुत विलसत नंदरानी ।
-- ब्रजरानी हौ । सुत पालना झुलावै ।१

पालने के कुल नौ पद हैं । इसके पश्चात् राधा जन्म के पद हैं यथा-

-- महारस पूरन प्रगट्यौ आनि ।
-- अति फूली घर घर ब्रजनारि राधा प्रगटी जानि ।
- - - - - - - - - - ।
रसकी निधि जौ रसिकराय ब्रज करहु विरहु दुख हानि ।
-- राधा रावल प्रगट भई, २

राधा जन्म के पदों के पश्चात् दसहरा, प्रबोधिनी, तथा गुसाईं जी की बधाई के पद हैं । ३ पत्रा ८५ से वसंत के पद दिए गए हैं । यथा-

-- मन तजौ भजौ कंत रितु बसंत आयौ । -- आदि

कुछ पद विरह के हैं । ४

---

(१) निजी पुस्तकालय, नाथद्वारा, बंध सं० १७, पुस्तक सं० ३ पत्रा- ७६
(२) वही , -- बंध सं० १७, पुस्तक सं० ३ पत्रा- ७८
(३) वही , -- बंध सं० १७, पुस्तक सं० ३ पत्रा- ८४तक
(४) वही , -- -- पत्रा- ८६तक

इस संग्रह ग्रन्थ में उक्त पदों के पश्चात् परमानन्द दास के पदों का संग्रह दिया गया है ।१ इसके अनन्तर गुजराती भाषा में गोस्वामी हरिराय जी कृत 'मरम' नामक ग्रन्थ सन्निहित है । इस ग्रन्थ के आगे भी गो० हरिराय जी के संस्कृत पद दिए गए हैं । संस्कृत पदों के अन्त में लिखा है :- 'इति श्री हरिदास विरचितं स्व स्वामिनी निरूपणाष्टकम् सम्पूर्ण ।। श्री हरि ।।'

अन्तिम पृष्ठों में अन्य कवियों के भी कुछ पद हैं ।

इस संग्रह में गोस्वामी हरिराय जी के लगभग एक सौ पचास पद प्राप्त होते हैं, जो प्राय: श्रीमीतल जी के सम्पादित संग्रह में समाविष्ट हैं । इसमें अधिकांश नित्य तथा वर्ष के पद दिए गए हैं ।

(२) 'हरिराय जी के भाषा-पद', नामक पद-संग्रह में गोस्वामी हरिराय जी के पदों को अंकित किया गया है । ग्रन्थ में रचयिता के स्थान पर 'गो० हरिराय जी' लिखा हुआ है । २ विवरण द्रष्टव्य है :-

हरिराय जी के भाषा पद । आकार ६"+ १४"। २१ पंक्ति प्रति पृष्ठ । कुल पद ५०१ । कुल पत्रा १२५, (पृष्ठ २५०) । लेखन काल संवत् १८३० । लिपिकार ब्रजमोहन दास । लिपि स्थान श्रीनाथद्वारा ।

ग्रन्थ का प्रथम पत्रा नहीं है । प्रारम्भ का पद बड़ा है, और प्रथम पत्रा न होने से उसके ६ बंद नहीं हैं । प्रारम्भ इस प्रकार है :-

---

(१) निजी पुस्तकालय, नाथद्वारा , बंध संख्या- १७, पत्रा सं० १३६ तक
(२) वही, -- बंध संख्या- १७, पुस्तक सं० ५ ।

'सुनत ही भई मुदित गोपी जसोदा सुत पाई ।
वसन सकल सिंगारि भूषन आदि तन भूषाई ।

इस संग्रह ग्रन्थ के प्रारम्भ में कृष्ण जन्म के पद हैं । इसमें कुल पद ५०१ हैं, किन्तु व्रजभाषा के पद कुल(४६०) चार सौ साठ ही हैं ।१ अन्तिम पद श्री यमुना जी से सम्बन्धित है :- 'कहत सुखसार निरधार करिकैं -- । इसके पश्चात् गोस्वामी हरिराय जी कृत संस्कृत पद दिए गए हैं ।

इस संग्रह ग्रन्थ में गोस्वामी हरिराय जी के कुछ नए पद भी प्राप्त होते हैं :-

आयौ री मेह, देह मेरी काँपत,
पिय बिन विपिन अकेली ।
मोर पुकारत, मारुत मारत,
हरपावत वन द्रुम वेली ।
दामिनी दमक छिनु छिनु चौंकावत,
विरह बढ़ावत पिय संग खेली ।
'रसिक' पियारौ जौ मिलै री आय आप,
ताप धरै, ना तौं प्राण रहैंगें नहीं,
विरह हृदै - अग्नि मेली ।।२

\+ + + +

-- कैसे धीरज धरौ प्यारे, वन बोलत है मोर ।।३

---

(१) निजी पुस्तकालय, नाथद्वारा, बंध संख्या- १७ पुस्तक सं० ५, पत्रा- ११३ तक

(२) वही, पत्रा ११० ।

(३) वही, पद संख्या- ४४६ ।

इस प्रकार के नवीन पद कम ही मिलते हैं। इस ग्रन्थ में प्राय: नित्यो-त्सव के पद हैं, कुछ पद श्री वल्लभाचार्य जी के आश्रय सम्बन्धित भी हैं। ग्रन्थ में पुष्पिका इस प्रकार दी है :-

> 'इति श्री हरिराय जी कृत पदम्। सम्पूर्णम्। संवत् १८३० वैशाख कृष्ण ११ शनिवारे, लिखे ब्रजमोहन दास ने चूरामणि जी खबास को दिए। लिखे श्री जी द्वारे। श्लोक संख्या २५०१। श्री गोकुलेश जयति।[१]'

यह हस्तलिखित संग्रह ग्रन्थ लगभग २०० वर्ष पुराना है। अत: यह प्रति-लिपि मूल प्रति के अधिक निकट ज्ञात होती है। गोस्वामी हरिराय जी के पदों का यह एक बृहद् संकलन है। इसमें रसिक, रसिकराय, रसिक-प्रीतम तथा रसिक शिरोमनि छापों के पद हैं। 'हरिजन' तथा 'हरिदास' छाप के भी एक दो पद मिलते हैं, किन्तु रसिकदास छाप का एक भी पद प्राप्त नहीं होता। इस ग्रन्थ की लिपि सुन्दर है।

(३) 'हरिराय जी के पद' : गोस्वामी हरिराय जी के पदों का यह तीसरा संग्रह है। विवरण द्रष्टव्य है :-

गोस्वामी हरिराय जी के पद। आकार- ८"+ ८"। कुल पत्रा १३६, (पृष्ठ २७२) १४ पंक्ति प्रति पृष्ठ। कुल पद ३४५। लिपि प्राचीन।

प्रारम्भ:-'श्रीकृष्णाय नम: अथ श्री हरिराय जी कृत पद लिख्यते : राग भैरों। दीनो दरस सुपने में आय ---। छिन एक सुख

---

(१) निजी पुस्तकालय, नाथद्वारा, बंध संख्या- १७ पुस्तक सं० ५, पत्रा-१२५

उपज्यौ मेरे मन, गयौ कछू हरि विरह बढ़ाय --- !

इसके पश्चात् कुछ पद इस क्रम में दिए हैं :-

-- हरि के विमुखन कौ मुख जिन दिखावै ।
-- नाथ हा हा मोहि दरस दीजै ।
-- नैक बोलो नाथ अमृत रस वैन ।
-- ललना जागौ भयो भोर --- !।-- आदि ।

इस संग्रह ग्रन्थ में प्राय: कृष्णलीला सम्बन्धी नित्य के पद हैं, कुछ पद महाप्रभु जी के आश्रय सम्बन्धित भी हैं । ग्रन्थ का सम्पादन व्यवस्थित रूप से हुआ है । कृष्ण लीला के अनुक्रम से ही पदों का सम्पादन किया गया है । कुछ पद वर्षोत्सव के भी हैं । इस संग्रह में 'रसिक' एवं 'रसिक प्रीतम' छाप के ही पद अधिक हैं । 'रसिक दास' छाप का एक भी पद नहीं मिलता ! कुछ पद नए भी प्राप्त होते हैं :-

देखि प्रतिबिम्ब गोपाल खिलावै,
लै लहुआ मेलत वाके मुख खेलत संग बुलावै ।
बोलि बोलि उठि चलरे मैया, तुमको ब्रज विहरावैं ।
अपने कंठ के हार उतारि कैं बाके कंठ छु आवै ।।
मधुर बचन कहि हित करि नीकैं मधुरे बोल सिखावै !
आभूषन सब अपने अंग के करलै वाहि दिखावै ।
अरी मैया हौं कहौं करौं यह खेलन संग न आवै ;
मेरी कही न मानत बालक यौं ही मोहि बिरावै ;
तू कर गहि करि किंकनियाँ कौं मेरे संग पठावै ।
सुत के बचन सुनत नंदरानी, आनंद हियै बढ़ावै ।--

बाल-केलि रस महा मुग्ध जो सबहिन के मन - भावैं ।
'रसिक-प्रीतम' सुमरित निसि-बासर गावत अति सुख पावे ।१।

इस संग्रह ग्रंथ में पत्रा ११७ तक ही गोस्वामी हरिराय जी के पद हैं । इसके पश्चात् पत्रा १३२ तक विविध कवियों के पद संग्रहीत हैं । पत्रा १३३ से गोस्वामी हरिराय जी कृत 'सूतक निर्णय' गद्य ग्रन्थ दिया गया है । अन्त में पुष्पिका इस प्रकार दी गयी है :-

"सेठ ग्यायाराम पठनार्थं हीरा लिखतम् पोथी इह हरिराय"।।२
ग्रन्थ में लिपिकाल नहीं दिया गया । लेखन अशुद्ध है । पद-परिमाण की दृष्टि से ग्रन्थ महत्वपूर्ण है ।

उपरिनिर्दिष्ट पद-संग्रहों के अतिरिक्त एक पद-संग्रह लाला भगवान दास जी, नाथद्वारा वाले, के निजी संग्रह से भी प्राप्त हुआ है:-

विवरण- इस ग्रन्थ का नाम "श्रीहरिराय जी का पद-संग्रह" है । आकार ६"+१३" । कुल पत्रा ११२, (पृष्ठ २२४), १६ पंक्ति प्रति पृष्ठ । अन्त के तीन पत्रा नहीं मिलते । कुल पद संख्या २८९ है ।

प्रारम्भ:- 'रागधनासिरी ।। जसुमति सुत जनम सुनत फूले
ब्रजराज हो। ----।'

इस ग्रन्थ की लिपि सुस्पष्ट होते हुए भी पर्याप्त अशुद्ध है । ग्रन्थ में नित्य-

---

(१) निजी पुस्तकालय, नाथद्वारा, बन्ध संख्या - ७७, पु०सं०१,पत्रा११०, -पद सं० ३४५ ।

(२) वही, पत्रा ११७ पद ।

उत्सव एवं वर्षोत्सव के पद हैं। इस संग्रह में कुछ पद नए भी प्राप्त होते हैं। ग्रन्थ में लिपिकाल नहीं दिया गया।

उक्त सभी पद-संग्रहों के अतिरिक्त ऐसे और भी अनेक कवियों के कीर्तन पद संग्रह प्राप्त होते हैं, जिनमें गोस्वामी हरिराय जी के भी पद उपलब्ध होते हैं। इन विविध संग्रह ग्रन्थों में गोस्वामी हरिराय जी के कुछ ऐसे भी पद प्राप्त होते हैं जो अन्यत्र उपलब्ध नहीं होते। इनमें से कुछेक उदाहरण द्रष्टव्य हैं :-

सखी री देखे न मोहन, बताय।
कौन विपिन में हैं मन - मोहन, गोप चरावत गाय।
कौन कदंब ढ़ाक की छैंया, बैठे हैं चित लाय।
धरि नट भेख हार गहैं ठाड़े, रीझत बैन बजाय।
लैहौं सब पकवान बहोत कर, बिंजन सबै बनाय।
सीतल जल बीरा संग लैहौं, रहौं कछुक खबाय।
तुम प्रताप संगम सुख पैहौं, छिन कौ विरह बुझाय।
सही न जात 'रसिक-प्रीतम', पिय - विरह बढ़्यौ उर आय ।।१

+ + + +

बिवत कन्हाई नन्द की कनियाँ।
कछू खात कछु वरनी गिरावत, छवि निरखत नंद -रनियाँ ।।२

इस प्रकार के स्फुट पद अनेक संग्रहों में विद्यमान हैं, जो अभी तक प्रकाश में नहीं आसके हैं। यथा-- प्राप्य हस्तलिखित विविध पद-संग्रहों में गो०

---

(१) सरस्वती भण्डार, कांकरौली, बंध संख्या- १७, पुस्तक सं० १२ पत्रा-४
(२) वही, -- पत्रा- २८।

हरिराय जी के लगभग एक सौ पच्चीस पद प्राप्त होते हैं, जो श्री मीतल जी के प्रकाशित पद संग्रह में उपलब्ध नहीं होते । ये सभी पद लेखक के निजी संग्रह में सुरक्षित हैं ।

गोस्वामी हरिराय जी के विविध हस्तलिखित पद संग्रहों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि गोस्वामी हरिराय जी अपने समय में पुष्टि-सम्प्रदाय के एक सिद्धहस्त कवि थे, उनका उनके परिकर में पर्याप्त सम्मान था । उन्होंने सहस्राधिक पदों का निर्माण किया है, जो विभिन्न संग्रहों में बिखरे पड़े हैं ।

वल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायी वैष्णवों में गोस्वामी हरिराय जी के पदों को अति सम्मान के साथ पढ़ा व सुना जाता है । गोस्वामी हरिराय जी के पदों की महत्ता व पवित्रता बतलाते हुए श्री गिरधर लाल जी महाराज अपने वचनामृत में लिखते हैं, 'श्री गुसाईं जी, श्री हरिराय जी आदि गोस्वामी बालक तथा महाप्रभु जी तथा श्री गुसाईं जी के सेवक इत्यादिकन के के कीये जो कीर्तन हैं सो तो मनोक्त नहीं हैं वे तो ऐसी लीला के अनुभव नेत्रन सूं देखते तैसे ही भासत । तासों ए पद-कीर्तन श्री ठाकुर जी आगे गावे हैं । और इनको वेद - रूपत्व कहे हैं ।'१

उपरिविवेचित पद संग्रहों के अतिरिक्त एक अन्य स्फुट छंद-संग्रह कोटा से उपलब्ध हुआ है । यह ग्रन्थ शोध में प्रथम बार ही उपलब्ध हुआ है, विवरण द्रष्टव्य है :-

चौरासी कवित्त

इस ग्रन्थ का नाम 'गोस्वामी हरिराय जी के चौरासी-

---

(१) श्री गिरधरलाल जी के १२० वचनामृत, सम्पादक लल्लूभाई छगन लाल देसाई, प्रका० अहमदाबाद, संस्क० प्रथम, सं० १९७९, पृ० १७ ।

कवित्त है। कोटा में यह ग्रन्थ श्री मथुरेश जी के मन्दिर के विशाल पुस्तकालय में सुरक्षित है। इस ग्रन्थागार को मथुरा मन्दिर पुस्तकालय भी कहा जाता है। यह ग्रन्थ गोस्वामी श्री व्रजेश कुमार जी (बड़ौदा) के माध्यम से उपलब्ध हुआ है।

इस ग्रन्थ में अधिकांश घनाक्षरी, सवैया आदि छन्द हैं। कवितायें शृंगार प्रधान अधिक हैं।

ग्रन्थ में प्रथम श्री महाप्रभु जी की वन्दना है तत्पश्चात् कृष्ण की बाल-लीलाओं के सजीव वर्णन हैं। शृंगार रस के छंद अपनी पूर्ण गरिमा के साथ प्रस्तुत हुए हैं। प्रारम्भ इस प्रकार है :-

श्री कृष्णायनम: । श्री हरिराय जी कृत कवित्त लिखे हैं :-

जैसें गजराज राख्यौ धाय धाम हू ते आय ,
जैसे कैं सहाय ह्वै पृथा सुत पारे हैं ।
जैसे महाराज राखी द्रुपद सुता की लाज,
जैसें ब्रजवासी गिरधर कैं उबारे हैं ।
जैसे दैकैं सम्पति सुदामा दुख दूरि कर्‌यौ ,
जैसे संतन के लिए असुर संहारे हैं ।
तैसे राखि लीजै निज वल्लभ के बंश हू कौ ,
जैसे तैसे जग में कहावत तिहारे हैं ।

अन्तिम छन्द :-

कोटिक भरे हैं मन - मांहि तो मनोरथ पैं,
और कौन पूरन कौं समरथ तेरे कौं ।
तो तजि न माखी न जाय दीनता कृपा निधान,
आपुनो दुखारी देख कृपा करि हेरे कौ ।
अब कहा देखत न रह्यौ कछु आसिरौ है,

रावरौ कहायौ सौ न जहाँ तहाँ फेरे कौ ।
'रसिक' अधीन सब भाँति भयौ रावरौ ही ,
जानौ सोई करौ तहाँ कहाँ चारौ चेरे कौ ।

ग्रन्थ के श्रृंगार रस प्रधान छंदों में विप्रलम्भ श्रृंगार के छन्द अधिक हृदयाकर्षक हैं । कुछ छन्द समस्यापूर्ति के भी जान पड़ते हैं, जिनके अन्तिम चरण 'समस्या' रूप में प्रकट हुए हैं । एक उदाहरण द्रष्टव्य है :-

रैनि अँधेरी दुराय सरूप, चढ़ी मनौ मैन चमू पर री ।
तब साँवरी ही भई आय जुरे, रस रूप तिया तिन हू पर री ।
स्याम सजे लखि छूटी है धार, कटाछन की पय भू पर री।
बरसै बरसाने की गोरी घटा, नंदगाँव के साँवरे ऊपर री ।

इस छन्द संग्रह में एक छन्द में क्रियाएँ खड़ी बोली के अनुरूप प्रयुक्त हुई हैं, जो उस समय की प्रचलित खड़ी बोली का एक स्वरूप स्पष्ट करती हैं :-

तुझे तो न आवै दया उनने खाना छोड़ दिया,
भया रहे चाकर हर रोज तेरे द्वारका ।
देखन की करे चाह, फिरे तेरी गाह -गाह ,
नैंकु हू न करै उर मन हू में मार का ।
सबसे निसंक बोले, मन की न बात खोले ,
करे नहीं सँक जिसे सोच न विचार का ।
आशिक 'रसिक' प्यारे महबूब देखे बिन ,
डोले घर घर वह्या वार का न पार का ।।

कवि ने इन छन्दों में भाषा का प्रयोग बहुत सावधानी से किया है । कृति का साहित्यिक पक्ष विशेष ध्यातव्य है ।

`चौरासी कवित्त संग्रह ` के अतिरिक्त एक ग्रन्थ `रेखता`नाम से भी गो० हरिराय जी कृत मिलता है, जो काँकरौली ग्रन्थागार में सुरक्षित है। विवरण द्रष्टव्य है :-

रेखता-

इस नाम के ग्रन्थ में केवल एक पद ही है जो आकार में बड़ा है। इसे स्वतंत्र ग्रन्थ न कहकर स्फुट पद ही कहना अधिक समीचीन होगा। इस ग्रन्थ का नाम `रेखता` क्यों रखा गया, यह प्रश्न कुछ अस्पष्ट - सा है। डा० शिवप्रसाद सिंह ने रेखता के विषय में इस प्रकार प्रकाश डाला है, `संवत् १६००, रेखता। यह नई भाषा का कोई ठीक नाम न था। समय-समय पर हिन्दी, दक्खिनी, रेखता, उर्दू इसके विभिन्न नाम हुए। - - - - साहित्यिक हिन्दुस्तानी की चार शैलियाँ यानी उर्दू, रेखता, दक्खिनी और हिन्दी। इन चारों नामों में भाषा की दृष्टि से रेखता शब्द का प्रयोग सब से प्राचीन है। डा० सुनीत कुमार चाटुर्ज्या रेखता का अर्थ `विकीर्ण-प्रयोग` मानते हुए लिखते हैं,`तब की भाषा पश्चकालीन उर्दू की तरह फारसी से बिल्कुल लदी हुई न थी। फारसी के शब्द अपेक्षाकृत कम संख्या में मिलाए जाते थे। एक पंक्ति में कहीं-कहीं छितरे हुए (रेखता) रहते थे। इसी लिए आधुनिक उर्दू-हिन्दुस्तानी पद्य की भाषा का आद्य रूप रेखता कह लाता है। १५वीं शती के कबीर के ही नहीं, १२वीं शती के बाबा फरीद के पद्य भी `रेखता` कहलाते थे`।` १

सम्भवत: जिस अर्थ में कबीर के पदों को रेखता कहा गया होगा, उसी अर्थ में गोस्वामी हरिराय जी की इस रचना का नामकरण भी रेखता पड़ गया होगा। यह रचना अन्य रचनाओं से कुछ भिन्न प्रकार की है। इसमें

---

(१) सूरपूर्व ब्रजभाषा- डा० शिवप्रसाद सिंह, प्रथम संस्क०, पृष्ठ- १३५।

कुछ शब्द खड़ी बोली के भी प्राप्त होते हैं, छन्द भी अन्य रचनाओं से पृथक् है ।

गोस्वामी हरिराय जी की इस रचना की एक मात्र हस्तलिखित प्रति कांकरोली से प्राप्त हुई है । श्री द्वारकादास परिख ने अपने ग्रन्थ में इस रचना का उल्लेख किया है ।१ सम्प्रदाय कल्पद्रुम में भी इसका उल्लेख मिलता है ।२ विवरण इस प्रकार है :-

रेखता । गो० हरिराय जी कृत । संग्रह ग्रन्थ में सम्पादित । संग्रह ग्रन्थ में कुल पत्रा १४४, यह रचना पत्रा ९० से ९३ तक, (कुल पृष्ठ ६) । आकार ५"+ ३।।" । ६ पंक्तियाँ प्रति पृष्ठ । लिपिक प्राचीन व पठनीय । इस रचना के अन्त में लिखा हुआ है `,श्री हरिराय जी कृत रेखता`।३ प्रारम्भ द्रष्टव्य है :-

> `श्री गोपीजन वल्लभायनम: । अथ रेखता । मेरे मन में यही
> गिरवर धरन नित नैंन भरि देखूं । जनी यह जीवन अपना
> सफल जग मांज करि लेखूं। खुली खिरकीन की पगिया,
> कुबीली चन्द्रिका सोहै - - - - - - - ` ।

अन्तिम अंश :- `दिखावौ वेगि मणि कोठा, करौ मति नैकु हू न्यारे।
श्री वल्लभनंद आनंदकंद, कारज एक ही सारे ।।
दम्मन तुम देव देवन के । तिहारी वेद यह बानी ।

---

(१) श्री महाप्रभु हरिराय जी नूं जीवन चरित्र,(गुजराती), पृष्ठ- ११७
(२)`ख्याल, रेखता, कीरतन- - -` । सम्प्रदाय कल्पद्रुम- विट्ठलनाथ भट्ट
(३) सरस्वती भंडार, कांकरोली, बंध संख्या- १३५, पुस्तक सं० ६ ।

सुनौ जी नन्द के कान्हाँ, तुम्हारी बात अनमानी ।
इति श्री हरिराय जी कृत रेखता ।।

इस रचना में कवि ने कृष्ण की लीला का बखान किया है । भाषा अन्य छन्दों से अधिक व्यवस्थित जान पड़ती है । यह रचना गोस्वामी हरिराय जी कृत ही है ।

विविध स्फुट पदों के अतिरिक्त गोस्वामी हरिराय जी ने अनेक लघु आख्यानक रचनाओं का भी सृजन किया है जिनका विवरण द्रष्टव्य है :-

गोस्वामी हरिराय जी की प्राप्तोल्लिखित रचनाएँ (वे पद्य-रचनाएँ, जो प्राप्त भी हैं और जिनका उल्लेख भी मिलता है) जो प्रभुदयाल मीतल के सम्पादित संग्रह में संगृहीत हैं, निम्नलिखित हैं --

१- नित्य लीला
२- ढ़ाँढ़ी ढ़ाँढ़िन
३- होलीगान
४- सेवा-भावना
५- दस उल्लास
६- नवरात्रि के पद
७- गोवर्द्धन लीला (प्रथम) तथा
८- दान लीला ।

इनके अतिरिक्त जो ग्रन्थ हस्तलिखित रूप में प्राप्त होते हैं, निम्न हैं :-

१- गोवर्द्धन लीला (द्वितीय)

२- दामोदर लीला ।
३- सनेह लीला ।
४- कलि-चरित्र ।

इन ग्रन्थों के अतिरिक्त दो अन्य ग्रन्थों का विवरण नागरी प्रचारिणी सभा, काशी की खोज रिपोर्ट से सर्व प्रथम उपलब्ध हुआ है --

१- दैन्यामृत, तथा
२- स्नेहामृत ।

उपर्युक्त आठ रचनाओं का, जो श्री मीतल जी के संग्रह में सम्पादित हैं, का पूर्ण विवरण देना अपेक्षित जान नहीं पड़ता । इनके अतिरिक्त हस्तलिखित चार ग्रन्थों का तथा अन्य दो ग्रन्थ, दैन्यामृत तथा स्नेहामृत का विवरण प्रस्तुत किया जारहा है । प्रथमोक्त आठ पद्य रचनाओं की चर्चा अन्यत्र की जायगी ।

१- गोवर्द्धन लीला (द्वितीय)

'गोवर्धन लीला' नाम से एक अन्य रचना भी गोस्वामी हरिराय जी कृत है, जो श्री प्रभुदयाल मीतल के सम्पादित संग्रह में विद्यमान है । विवेचित रचना उससे सर्वथा भिन्न है ।

गोस्वामी हरिराय जी कृत यह रचना गोवर्द्धन पूजा प्रसंग पर आधारित है । इसकी एक हस्तलिखित प्रति कांकरोली से प्राप्त हुई है ।१

---

(१) सरस्वती भंडार, कांकरोली, बंध सं० १५।२ पुस्तक सं० २ ।

विवरण :- संग्रह ग्रन्थ में सम्पादित । गोस्वामी हरिराय जी कृत । रचना ६ पत्रों पर (पृष्ठ-१२) लिपिबद्ध है । आकार - ६।।।"+ १०।" । २३ पंक्ति प्रति पृष्ठ । पत्रा ११६ से प्रारम्भ लिपि प्राचीन व पठनीय ।

प्रारम्भ:- 'अथे मौरि गोरधन लीला लिख्यते । राग गौरी, सिखवत मोहन नन्द को, तुम पूजो श्री गिरिराज हो, टेक ।गोप सबै दिसि दाहिने हो, बाम दिसै ब्रजनारि हो, कौन भाँति ठाढ़े भए हो, बरनत बचन उचारि हो, श्री नंदरानि प्रथम जेहो तिन ढिंग कीरत जानी, उपनंदादिक की घरनी हो जसुमति पाछे मानी - - - - ।

प्रस्तुत पद्य में गोवर्द्धन पूजा हेतु प्रारम्भिक पृष्ठ भूमि के पश्चात् सेवा विधान का वर्णन किया गया है , यथा --

'केसर रंगहि रंग के, हो, उपरेना जु सुबास, ग्लाव वगैयन दैन कौं, हो, धरि राखे तिहि पास । सब समाज जब जैं चुकौ, हो, तब बोले नन्दलाल, बाबा जू गिरि पूजिए ,जु , सगरे बोलि गुपाल । - - - ।'

तदनन्तर 'अन्नकूट भोग' वर्णन में कवि ने विविध खाद्य पदार्थों की सूची कुछ इस प्रकार दी है,--

'मथुरा के पेरान की, हो, पंगति अधिक विशाल ।
ताही की गुजियान की, हो, पंगति मधुर रसाल '।१

---

(१) सरस्वती भंडार, कांकरौली, बंध संख्या १५।२, पुस्तक सं० २, पृ० १२० ।

रचना के प्रारम्भ में गोवर्द्धन लीला - हरिराय जी कृत लिखा हुआ है। पद के अन्त में हरिराय जी की 'हरिदास' छाप निहित है। यह रचना शोध में प्रथमबार ही उपलब्ध हुई है।

अन्त :- श्री वल्लभ चरन प्रताप ते हो , मति अनुसारहि गाय ।
श्री वल्लभ कृपा करी श्री विट्ठल निज नाथ ,
'हरिदास' कृपा करिके , हो राखे चरनन साथ ।

संग्रह ग्रन्थ में इस रचना के पश्चात् गुसाईं जी श्री विट्ठलनाथ जी की बधाई के कुछ पद हैं, ये पद गोस्वामी हरिराय जी कृत ही हैं। इन पदों में गो० हरिराय जी की 'हरिदास' छाप निहित है,--

केसर की धोती पहरे कटि केसर उपरना ओढ़े,
तिलक मुद्रा धरि बैठे मन्दिर गिरधर के।
बैठे मुसकात जात, फूले न समात गात ,
कहैं हरिदास मैं निहारे दृग भर के ।।१

लिपि अस्पष्ट तथा भाषा अशुद्ध है। रचना गोस्वामी हरिराय जी कृत ही है।

इस रचना के अतिरिक्त एक और गोवर्द्धन लीला की हस्तलिखित प्रति नाथद्वारा से प्राप्त होती है, जिसकी जिल्द पर गोस्वामी हरिराय जी कृत, लिखा हुआ है। इस हस्तलिखित प्रति में लिपिकार ने कहीं भी रचयिता का उल्लेख नहीं किया और न ही इस सम्बन्ध में अन्य संकेत ही मिलते हैं। विवरण द्रष्टव्य है :-

---

(१) यह पद श्री प्रभुदयाल मीतल के सम्पादित संग्रह में भी सन्निहित है।
-- देखिये, पद सं० ६७२ ।

गोवर्द्धन लीला । ग्रन्थ अपूर्ण । रचना के प्रारम्भिक २० छंद नहीं हैं । आकार- १०" + ६"। ११ पंक्ति प्रति पृष्ठ । प्राप्ति स्थान, नाथद्वारा ।१

प्रारम्भ:- 'भरी जलेबी अति रस आई । तिनकूं दूनी खांड पिवाई । घेवर भर सौंधिऊ के हर - - - - '।

लिपि बहुत अशुद्ध है, भाषा की दृष्टि से यह रचना गोस्वामी हरिराय जी कृत ज्ञात नहीं होती ।

अन्तिम अंश :-'--- ब्रज भर 'हरिराय', गंगा ग्वार आनंद कर मैं तीनों अपनाय । - - - - इति श्री गोवर्द्धन लीला सम्पूरणमस्तु । शुभम् भवतु कल्याणमस्तु लिषतं जो श्री बालचन्द जगन्नाथ पठनार्थ गोकुलदास, काशीदास संवतु १७७३ वर्षे वैशाख सुदि ४ शुक्रे । आत्मज पठनार्थ ।।'

इस रचना की विषयवस्तु प्रथम उल्लिखित गोवर्द्धन लीला के अनुरूप ही है । रचना संदिग्ध है ।

२- दामोदर लीला

गोस्वामी हरिराय जी कृत 'दामोदर लीला' की दो प्रतियां कांकरोली से उपलब्ध हुई हैं । शोध में यह रचना प्रथमबार ही दृष्टिगत हुई है । विवरण दृष्टव्य है ।-

---

(१) निजी पुस्तकालय, नाथद्वारा, बंध संख्या-४, पुस्तक सं० ४ ।

इस रचना की दो प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं, अपूर्ण प्रति तथा पूर्ण प्रति ।

अपूर्ण प्रति :- हस्तलिखित एक संग्रह ग्रन्थ में यह रचना समाविष्ट है । संग्रह ग्रन्थ में पत्रा ५ से यह रचना प्रारम्भ होती है । इस प्रति में दामोदर लीला के प्रारम्भिक केवल २० बंध हैं । आकार - ६।।" + ७"। १५ पंक्तियाँ प्रति पृष्ठ । प्रति प्राचीन है, किन्तु लिपिकार तथा लिपिकाल का कुछ भी उल्लेख नहीं मिलता । पत्रा ५ से पत्रा १६ तक (३२ पृष्ठों पर) यह रचना लिपिबद्ध है । लेखन सुस्पष्ट व शुद्ध है । अन्त में 'रसिक प्रीतम' छाप का प्रयोग किया गया है ।।१ यह रचना नाथद्वारा से उपलब्ध हुई है ।।२

भगवान कृष्ण की अनेक बाल क्रीड़ाओं के अनुक्रम में दामोदर लीला भी एक लोक-प्रसिद्ध लीला कही जाती है । इसे 'ऊखल लीला' एवं 'यमलार्जुन' लीला भी कहते हैं । कृष्ण को माँ यशोदा द्वारा रस्सी से बाँधे जाने पर इस लीला का नाम दामोदर लीला पड़ा ।

पूर्ण प्रति :- ग्रन्थ में 'दामोदर लीला' हरिराय जी कृत, शीर्षक दिया गया है । विवरण द्रष्टव्य है :-

दामोदर लीला । गोस्वामी हरिराय जी कृत । कुल पत्रा १८ (पृष्ठ ३६) । १० पंक्तियाँ प्रति पृष्ठ । आकार ६।।" × ५।" । लिपिकाल संवत् १८७० । लिपि सुन्दर व शुद्ध है । प्रारम्भ इस प्रकार है :-

---

(१) 'इति श्री रसिक प्रीतम कृत दामोदर लीला सम्पूर्णम्' ।
(२) सरस्वती भंडार, कांकरौली, बंध संख्या २४, पुस्तक सं० ८-ख ।

'अथ श्री दामोदर लीला रसिक राय जी कृत लिख्यते । श्री वल्लभ
पद बंदन करिकैं श्री विट्ठल सिर नाऊँ, बाल विनोद यथा मति
हरि के सुन्दर सरस सुनाऊँ, भक्तन के वत्सल करुणामय, तिनकी
अद्भुत लीला, सुनौ संत तुम सावधान हुइ श्री दामोदर लीला ।
सुन्दर सरस श्री गोकुल भीतर बसत अहीं रस भागे, जाति अनेक -
अनेकहि गोपन सब ब्रजराजहि लागे । ब्रज के बास बीच अति उत्तम
नंद भवन सुखकारी, संपति कहा कहौं कमलापति जाके अजिर विहारी,
सब सोने के सुखद धरोहर पला पिटोजा लागे, बहुत मर्कित मनि
ही रवि द्रुम खचित सभागे । आंगन सिढ़ी देहरी बेदी खचि-
खचि रतन बनाई, सरस वितान चंदोवा लागे पार तनावत नाई ।--'

गोस्वामी हरिराय जी ने परम्परागत कथानक को बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है । उक्त पृष्ठ भूमि के पश्चात् कवि ने कथा प्रसंग को एक स्वाभाविक वातावरण प्रदान करने की चेष्टा की है :-

इतने माँझ दूध कौ चरुआ चूल्हे ताप धर्यौ है ,
सो यह घर मैं उफनत देख्यौ, जान्यौ दूध जर्यौ है ।
अचि मूख्यौ लरिका कौं धरिकैं, जसुमति घर मैं दौरी,
दूध पूत जुग एकैं बरियां, राखन कौं इहिं बौरी ।

भगवान कृष्ण घर में मक्खन की हाड़ी फोड़ देते हैं, बन्दरों को मक्खन लुटाते हैं, अपने शरीर पर भी उसे मल लेते हैं, मां दूध औटाने में लगी हुई है--

तब लौं आय बीच आंगन मैं कियौ पूत कौ देख्यौ ,
फैलि रह्यौ मनिमय आंगन मैं, दूधि मँहोदिक मारी,
इतनत चितवत वाहि न देख्यौ, रोस भरी महतारी ।

संवाद सरस व सहज बन पड़े हैं :-

कहरे साँच मथनियाँ दधि की तैं काहे ते फोरी ।
सुनि मैया तू मोहि छाँड़ि कै दूध उतारन दौरी ।
लागि गयौ तेहर को चूरा, जासौं मथना फूट्यौ ।
हौं तौ तेरे डर के मार्‌यौ, आपुन ही तै रूठ्यौ ।।१

+ + + +

माखन की मटकी छीकै ते कहौ लाल किन लीनी ।
चोरी हौन हार यह मैया , परमेश्वर नै कीनीं ।।२

जब माँ यशोदा कृष्ण को धमकाती हैं, तब कृष्ण रूठ जाते हैं :-

हिलकी लै लै लाला रोवै, इतनी नाँहि सहुँगो ।
वचन मोहि कहे तू तासौं, बनहि जाय रहुँगो ।
तेरे घर मैं पाँय न देहौं, तब तू ह्याँ सुख पावौ ,
दूध दही पकवान तिहारौ, तुही अकेली खावौ ।

गोस्वामी हरिराय जी की अन्य रचनाओं से इसकी भाषा कुछ पृथक् जान पड़ती है । अन्त के वन्द में प्राप्त दोनों प्रतियों में किंचित भेद मिलता है-

अपूर्ण प्रति :- ' दामोदर जू की यह लीला रसिक दास कही है । संत जनन की चरन रेनु की तन मन और लही है । भूलिभई जो होइ कछू तो सुकवि सुधार सुलीजो, मधुर मुकुन्द नाम के रस को मन की रुचि सौं पीजो - - - ।'

---

(१) सरस्वती भंडार, कांकरोली, बंध संख्या- २४, पुस्तक सं० ८-ख, पत्रा- ६

(२) वही, पत्रा-७ ।

पूर्ण प्रति :- 'दामोदर जू की यह लीला रसिकन दास कही है ।
संत जनन की चरत रेनु की तनमन ओट लही है ।
यह दामोदर लीला हित सौं मधुर सुधारस लीजो ।
मधुर मुकुन्द नाम के रस कौं मन की ऊचि सौं पीजो ।।

इन दोनों प्रतियों में पूर्ण प्रति का उक्त पाठ अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है, क्योंकि 'भूल मई जो होइ कछू तो सुकवि सुधार सुलीजो' जैसी उक्तियां गो० हरिराय जी की किसी भी कृति में नहीं मिलतीं । अन्त में पूर्ण प्रति की पुष्पिका इस प्रकार दी है :-

'।। इति श्री हरिराय जी कृत दामोदर लीला सम्पूर्ण । यह पोथी पूर्ण भई । श्री गोकुल जी मध्ये । मिती वैसाख सुदी ।५। के दिन संवत् १८७० में पूर्ण भई'।।१

इस रचना में कुल १९० वंद हैं । रचना हरिराय जी कृत ही है ।

३- दैन्यामृत

इस रचना की कोई भी हस्तलिखित प्रति दृष्टिगत नहीं होती । अत: नागरी प्रचारिणी सभा की खोज रिपोर्ट में उपलब्ध विवरण ही यहां प्रस्तुत किया जारहा है ।

गो० हरिराय जी ने इस नाम से संस्कृत में भी एक रचना की है । व्रजभाषा में लिखित दैन्यामृत का विवरण दृष्टव्य है :-

---

(१) सरस्वती भंडार, कांकरोली, बंध सं० ७०, पुस्तक सं० १, पत्रा- १८ ।

दैन्यामृत

संख्या ३८-ए, दैन्यामृत, रचयिता - रसिक सिरोमनि (हरिराय), कागज- बाँसी, पत्र-१०, आकार ९"+ ७"पँक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुष्टुप) ३२२, पूर्ण, रूप-प्राचीन,पद्य, लिपि नागरी, प्राप्ति स्थान पं० रामकिशन दास, दाऊजी मंदिर कालीदह, वृन्दावन, मथुरा ।।१

आदि-- श्री गोपीजन वल्लभाय नम: अथ दैन्यामृत लिख्यते ।

दोहा । हीन महा जड़ जीव को कीयो कहा कछु होय,
हा नाथ, हा प्राणपति, दैन्य दान दै मोय ।
नहिं साधन, नहिं सम्पति, लखि कस करै उपाय ।
भक्तन को धन दैन्य है, फेरि गई निधि पाय ।
ऊँचो ऊँचो सब कह्यै, तू नीचो होय खोज ।
अपनो आपुन देखियैं, तब आवत है रोज ।
जो मेरी पैं देहगे तो, मेरी कहा गति होय ।
तुम अपनी अपनाइए , अपना जीनो मोय ।
सब जन सौं नीतो रहैं, ये धौं परम उपाय ।
जैसे ठौर निवान मैं, आपुही ते जल आय ।
और न कौं उत्तम गिनैं, सो सर्वोत्तम सार ।
रात दिना सोचत रहै, अपना दोष विचार ।

---

(१) खोज में उपलब्ध हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों का १६वाँ त्रै-वार्षिक - - विवरण, पृष्ठ १३५ ।

अन्त-- बार बार विनती सुनियै जू, सूरति नाथ याके दोष
गिनवे मैं रावरी न बढ़ाई हैं ।
पग पग अपराध भर्यो कौन धौं पुण्य करी, जन्म ते
बनाई है पापन की घढ़ाई है ।
पापी पाखंडी तोहू जैसे तैसे तिहारे जू हम हैं वे लोक
थोक विरह सूँ लढ़ाई है ।
अति करुणा कीरत की संत मिल साखदेत हा हा अब
कैसी होत चींटी पै चढ़ाई है ।
नहिं दैनी सो दैत हौ कहाँ लगि लिखिए लेख, अनहद
करुना रावरी विधि पै मांटी मेख ।
हा नाथ रमण प्रेष्ठ महावाहु महाप्रीत, जन्म जन्म प्रति
दीजिए मो निज पद पंकज प्रीत ।
सदा हिये मैं राखियो, दैन्य अमोलक रतन, याकौं बैरी
देह मैं करियो वहोत जतन ।
बार बार बिनती करूं सुनियो कृपा निवान, मीन हीन
कूं दीजियो दैन्य महारस दान ।
इति श्री दैन्यामृत सम्पूर्णम् ।।

विषय:- पुष्टि मार्ग के दृष्टि कोंण से दैन्य भाव द्वारा किस प्रकार और कहाँ तक भक्ति की जाती है, इसी का प्रतिपादन प्रस्तुत ग्रन्थ में किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य:- जैसा कि साथ के अन्य विवरण पत्रों में बतलाया गया है 'रसिक सिरोमणि' हरिराय जी का उपनाम है । उनका यह ग्रन्थ खोज में प्रथम बार मिला है, कविता बहुत अच्छी है, हरिराय जी का

कविता पर कितना आधिपत्य था, इस ग्रन्थ से पुष्ट हो जाता है।।१

उपर्युक्त निर्दिष्ट ग्रन्थ के प्राप्ति स्थल से अब यह ग्रन्थ नहीं मिलता, इस ग्रन्थ की अन्य हस्तलिखित प्रतियाँ भी उपलब्ध नहीं होतीं।

४- स्नेहामृत

इस ग्रन्थ की हस्तलिखित प्रति प्राप्त नहीं होती। इसका विवरण नागरी प्रचारिणी सभा की खोज रिपोर्ट में ही उपलब्ध हुआ है :-

'स्नेहामृत

संख्या ३८-सी

स्नेहामृत, रचयिता रसिक सिरोमनि (हरिराय) कागज मूंजी पत्र ३८, आकार ११"+ ६," पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) १४, परिमाण (अनुष्टुप) ७६२, पूर्ण, रूप- प्राचीन, पद्य, लिपि-नागरी, प्राप्तिस्थान पं० रामकिशन दास, दाऊजी का मन्दिर कालीदह वृन्दावन।'

आदि -- श्री कृष्णायनम: अथ श्री स्नेहामृत ग्रन्थ प्रारम्भ, 'दोहा-'

रसिक सनेही दीनता भजन अनन्यता जुष्ट।
दया वैराग उदारता, ते कहिये जन- पुष्ट।
पुष्ट सनेही, सम्पदा तहाँ नहिं नेकु विरोध,
गुणातीत पथ पग धरें पावे परम निरोध।
व्रजरतना ब्रजनाथ सूं कीनो सहज सनेह,
पुनि चौरासी जन कह्यो द्वैसत बावन तेह।

---

(१) सोलहवाँ - त्रै-वार्षिक विवरण, (ना०प्र०स०), पृष्ठ- १३६।

मुख्य अधिकारी अन्तरंग, दामोदर वर दास,
क्षण वियोग नहि सहि सकैं, श्री वल्लभ पद पास,
पूरन ना तो नेह को सर्वोत्तम भयो भाव,
लिख्यौ न काहू सौं कह्यौ, अपनो मन अनुभाव।

अन्त दोहा- लोक विषैं मन मैं भर्‌यौ, भल्यौ दृगन मैं दोष।
याकू यह रथ कुपथ है जो जुरमैं पथ पोख।
'रसिक' होय सो देखियो, हरिपद बढ़े सनेह।
वर्‌न्यौ सहज सनेह मैं रस अमल अमृत अनुपान।
संजीवन है विरही के हरि पल हैं प्रान।
हरे हरे मन हरत हो जरे जरे फिर जार।
परे ढरे ढिंग ढरत हो भले नीत परवार।
कैऊ भरे कैऊ भरत हो, ज्यौं सावन को मेह।
मोह देखिकैं डरत हो, भले निभावत नेह।
दश नगर वन तन भयो, सबैं किए सरसान।
'रसिक सिरोमणि' लाड़िलो ब्रज रसिकन की खान।

इति श्री स्नेहामृत सम्पूर्णम् शुभंभवतु ।।

विषय:- वल्लभ सम्प्रदाय के भक्ति सम्बन्धी सिद्धान्तों के अनुसार भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति और उनकी लीलाओं का वर्णन है।'१

नागरी प्रचारिणी सभा की खोज रिपोर्ट में निर्दिष्ट ग्रन्थ स्थल पर यह ग्रन्थ भी अब उपलब्ध नहीं होता। इस ग्रन्थ की अन्य प्रतियाँ नहीं मिलतीं।

५- सनेह लीला

(१) सोलहवाँ - त्रै-वार्षिक विवरण, (ना०प्र०स०), पृष्ठ- १३८।

वल्लभ सम्प्रदाय में, गोस्वामी हरिराय जी की यह एक लोकप्रिय रचना है। पुष्टि-मार्गीय नित्य-पाठ की अनेक प्रकाशित पुस्तकों में यह संकलित है।१ श्री मीतल जी द्वारा सम्पादित पद संग्रह में यह रचना उपलब्ध नहीं होती। इसकी अनेक हस्तलिखित प्रतियाँ दृष्टिगत हुई हैं।

सनेह -लीला में उद्धव प्रसंग की कथा को विवेचित किया गया है। उद्धव कृष्ण के समीप से गोपिकाओं के पास जाते हैं, तथा वहाँ गोपिकाओं एवं उद्धव में अनेक तर्क-वितर्क होते हैं।

प्रारम्भ :- एक समै ब्रजवास की, सुरति करी हरिराय ।
निजजन अपनौ जानि कैं, उद्धव लियौ बुलाय ।
कृष्ण बचन ऐसे कहे, उद्धव तुम सुन लेहु ।
नन्द जसोदा आदि कौं, जाय ब्रजहि सुख देहु ।
ब्रजवासी वल्लभ सदा, मेरे जीवन प्रान ।
तिनको निमिष न छाँड़ि हौं, मोहि नन्दराय की आन ।
मैं उनसौं ऐसैं कही, आवैंगें रिपु- जीत ।
अब तौ रे कैसे बनैं पिता मात सौं प्रीत ।
ऊधौ वे ब्रज पोषिता, जिनको मेरौ ध्यान ।
तिन्हैं जाय उपदेश देहु, पूर्ण ब्रह्म सुज्ञान ।
वागौ अपने अंग को, कीट मुकुट पहिराय ।
श्रुति-कुंडल माला दई, अपनौ विरद विहाय ।

---

(१) वैष्णवोपयोगी धोलपद- महेश मुद्रणालय, नाथद्वारा, संवत् २०१७, आदि -- ।

इस रचना में उद्धव के प्रति गोपिकाओं के उपालम्भ पूर्ण सम्वाद भी दृष्टव्य हैं-

नैंन हमारे मधुकरा आनंद कृष्ण - सरोज ।
ब्रज छाड्यौ जा दिवस ते, बैरी भयौ मनोज ।
है या भीतर दवजरे, धूंआ प्रगट नहीं होय ।
कैं जिय जानै आपुनौ, कै जिन लागी सोय ।
मधुकर अपने चोर को सब कोऊ डारैं मारि ।
मो मन - चोर जो मो मिलै, सरबस डारौं बारि ।
प्रेम बनज कीनो हु तो, नेह नफा जिय जानि ।
उद्धव अब उलटी भई, प्रान - पूंजि मैं हानि ।।१

कवि के कथन में चातुर्य है तथा कल्पना में मौलिकता है । यह रचना साहित्य के गौरव से अभिमण्डित है ।

अन्तिम अंश:- गोपी अरु उद्धव कथा भुवि पर परम पुनीत ।
तीन लोक चौदह भुवन, बन्दनीय सब गीत ।
नासत सकल कलेस कलि, अरु उपजत मन मोद ।
युगल चरन मकरन्द मन पावत परम विनोद ।
जे गावैं, सीखैं, सुनैं, मन क्रम बचन सहेत ।
रसिकराय पूरन कृपा, मन बांछित फल देत ।।२

इस रचना में कुल १२८ वंद हैं । इसके अन्तिम चरण में विभिन्न प्रति-लिपियों में कुछ पाठ-भेद मिलता है । अन्त के कुछ पाठ भेदों के आधार

---

(१) वैष्णवोपयोगी धोलपद, नाथद्वारा सं० २०१७, पृष्ठ- १५ ।
(२) वही ।

पर यह रचना अन्य व्यक्तियों के नाम से भ्रम उत्पन्न करती है, किन्तु जहाँ भी इस प्रकार की संदिग्ध पंक्तियाँ प्राप्त हुई हैं, वे प्राय: प्रक्षिप्त व त्रुटिपूर्ण प्रतीत हुई हैं।

उपरि उद्धृत पदान्त के प्रतिकूल इस प्रकार की पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं :-

१- यह लीला ब्रजवास की, गोपी कृष्ण सनेह ।
जन मोहन जो गावहीं, ते नर उत्तम देह ।।१

२- यह लीला ब्रजवास की गोपी कृष्ण सनेह ।
जे मोहन गुन गावहीं ते पामैं नर देह ।।२

३- मन मोहन जो गावहीं ते पामैं नर देह ।
रसिक राय पूरन कृपा मन बांछित फलदेत ।
+ + + +
भ्रमर गीत को जो पढ़ै, सुनै सकल चित लाय ।
इच्छा मन की पूरवै, श्रीरामकृष्ण सहाय !
इति हरिराय जी कृत सनेह लीला सम्पूर्णम् ।।३

इन सभी पाठान्तरों में 'जे मोहन गुन गावहीं' पाठ ही मूल पाठ है, किन्तु लिपिकारों की असावधानी से उसे 'जनमोहन जस गावहीं', रूप दे दिया गया है। पद के अन्त में 'रसिक' छाप गोस्वामी हरिराय जी की ही है। इसके अनन्तर अनेक हस्तलिखित प्रतियों में, अन्त में 'गोस्वामी हरिराय जी कृत' भी लिखा हुआ है ।।४

---

(१) सरस्वती भंडार, कांकरौली, प्रकाशित हि० का० २२८, पृ० २०
(२) वही, बंध संख्या ७३, पुस्तक सं० ११ लिपिकाल सं० १८६१
(३) वही, बंध संख्या ७४, पुस्तक सं० ४ लिपिकाल सं० १८९६
(४) वही, बंध संख्या १३३, पुस्तक सं० १ ।

गोस्वामी हरिराय जी की यह रचना पुष्टि-मार्गीय विद्वानों एवं वैष्णवों में पर्याप्त लोक-प्रिय रही है। रचना प्रामाणिक है।

६- कलि-चरित्र

यह रचना शोध में प्रथम बार ही प्राप्त हुई है। द्वारकादास परिख ने अपने ग्रन्थ में इसका उल्लेख किया है।१ इसके अतिरिक्त इस रचना के विषय में अन्य कहीं भी कुछ भी विवरण दृष्टिगत नहीं होता। गोस्वामी हरिराय जी की यह एक विशिष्ट रचना है। तत्कालीन युग-दृष्टि को इस काव्य में प्रकाशित किया गया है।। 'कलि-चरित्र' के दो लघु खण्ड प्राप्त होते हैं,१-'विप्रचरित्र' तथा २-'राजचरित्र'। 'विप्रचरित्र' में औरंगजेब कालीन ब्राह्मणों की हीन अवस्था का वास्तविक चित्र प्रस्तुत किया गया है। 'राजचरित्र' में राजाओं की स्वार्थपरता एवं क्रूरता की ओर इंगित किया गया है। विवरण द्रष्टव्य है :-

कलिचरित्र (रसिकराय कृत ! आकार ८"+ ६।"। १३ पंक्ति प्रति पृष्ठ। कुल पत्रा २६ (५२ पृष्ठ) । स्थान स्थान पर रसिकराय छाप का प्रयोग किया गया है। लिपि प्राचीन व पठनीय। प्रारम्भ इस प्रकार है :-

"अथ कलिचरित्र लिख्यते। सेवत चरन कमल तेरे सब, किन्नर,नर, मुनि, ज्ञानी, वेद, पुरान मध्य करुना निधि, तू ही परम वखानी। तेरी कृपा सकल प्राणिनि के कल मल कलहि कृपानी। कलि-चरित्र करिवे अव दीजै, मोहि दया अव बानी। जे चरित्र कलिजुग के इह जग देखे नाँहिन सपने ते चरित्र कलि के नाना-

---

(१) महाप्रभु हरिराय जी नूं जीवन चरित्र, (गुजराती), पृष्ठ- ११७ ।

विधि देखे लोचन अपने । तिहि तैं तिती जुगति जिय आई
लोगन को सुख दायक, तिती जुगति बरनी चित हित करि
रसिक राय कवि नायक !

चारि बरन इह भूमि लोक मधि, रचे बिरंचि पुराने,
तिहि मधि सकल बरन को दीने, तिलक विप्र कुल माने ।
तिन्हैं छुराय कृपा अपनी सौं घर घर प्रति भटकावैं ,
रसिक राय या कलि की महिमा मौपै बरनि न जावै ।।१

इस प्रकार प्रारम्भ में कवि ने ब्राह्मणों के स्वरूप को चित्रित करने का यत्न किया है । ब्राह्मणों ने जब अपना कर्म त्याग कर कृषक कर्म व सैनिक कर्म को अपना लिया था और कर्तव्यच्युत हो इधर उधर भागने लगे थे, उसीकाल का चित्र कवि ने बड़े ही सजीव ढंग से प्रस्तुत किया है,-

विप्र छिप्र तजि अपनी क्रिया लागे होन सिपाही, कांधे धरि
समसेर पुरानी, मन मैं गरब न मांही, काम परे भाजत तजि लज्जा
बानी निपट लजावै, रसिक राय या कलि की महिला मौपै
बरनी न जावै ; जिन पंडित अपनी पढ़ि विद्या सकल विज्ञ
कुल जीते, जिनकी कृपा पाइ औरे जन, नांहि रहे गुन रीते,
तिनके पुत्र कुपुत्र होइ पुनि लागे हलहि जुजावैं, रसिक राय
या कलि की महिला मौपै बरनि न जावै ।

कुछ उदाहरण राज चरित्र के भी द्रष्टव्य हैं :-

---

(१) सरस्वती भंडार, कांकरौली, बंध संख्या- ६८ पुस्तक सं० ६ !

पहले नृपति मनोरथ करि करि दान विप्र कुल दीने, सेवन
करि करि विप्र बरन को जनम सफल करि लीने, अबके नृप
आगे ही अपने विप्र-न नगर कटावैं, रसिक राय या कलि
की महिला मोपै बरनि न जावै ।।१

प्रत्येक छन्द के अन्त में 'रसिक राय' गोस्वामी हरिराय जी की छाप निहित है। इस रचना की एक मात्र प्रति कांकरौली से प्राप्त हुई है। लिपि पठनीय व शुद्ध है।

इस ग्रन्थ में कहीं भी गोस्वामी हरिराय जी का नाम रचयिता के रूप में प्राप्त नहीं होता। 'रसिकराय' छाप को देखकर ही यह सम्भावना की जाती है कि यह रचना गोस्वामी हरिराय जी की हो सकती है। गोस्वामी हरिराय जी ने अनेक रूपों में काव्य सृजन किया है। कलिचरित्र की भाषा भी अन्य रचनाओं से पृथक् जान पड़ती है। वल्लभ सम्प्रदाय के एक विशिष्ट ग्रन्थागार में इस ग्रन्थ का मिलना भी यह संकेत करता है कि रचनाकार वल्लभ-सम्प्रदाय से सम्बन्धित व्यक्ति ही हो सकता है। इस सम्भावना के आधार पर 'रसिकराय' छाप को देखते हुए इसका कर्ता गोस्वामी हरिराय जी को माना जा सकता है। कोई अन्य प्रमाण न मिलने पर ग्रन्थ संदिग्ध ही है।

उपर्युक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि गोस्वामी हरिराय जी ने सहस्राधिक पदों के अतिरिक्त पद्य में अनेक रचनाओं का सृजन किया है। इनमें प्राप्त तथा उल्लिखित रचनाएँ बारह हैं। इनमें आठ रचनाएँ श्री प्रभुदयाल जी मीतल के सम्पादित संग्रह में प्रकाशित हैं, शेष चार का विवरण दिया जा चुका है। दो ग्रन्थों का विवरण नागरी प्रचारिणी सभा, काशी की

---

(१) सरस्वती भंडार, कांकरौली, बंध संख्या- ६८, पुस्तक संख्या- ६, पत्रा-२४।

खोज रिपोर्ट से उद्धृत किया गया है । इस प्रकार यह संख्या चौदह हो जाती है । स्फुट पदों के विवरण में 'रेखता' नामक एक रचना का विवरण दिया जा चुका है । इस प्रकार यह संख्या पन्द्रह हो जाती है ।

'चौरासी कवित्त' नाम से जिस ग्रन्थ का परिचय स्फुट पदों के विवरण में दिया गया है, प्रथम बार ही उपलब्ध हुआ है । इस ग्रन्थ का कहीं भी उल्लेख नहीं किया गया ।

एक ग्रन्थ उल्लिखित -अप्राप्त रूप में भी है । इसका उल्लेख तो मिलता है किन्तु प्राप्त नहीं होता । इस ग्रन्थ का नाम 'स्याम सगाई' है । इस नाम से कोई भी रचना गोस्वामी हरिराय जी कृत दृष्टिगत नहीं होती ।

अब तक के विवरण में गोस्वामी हरिराय जी के अस्सी गद्य ग्रन्थों के अतिरिक्त पद्य में भी पन्द्रह ग्रन्थ ऐसे हैं जो प्राप्त तथा उल्लिखित दोनों अवस्थाओं में विद्यमान हैं । एक ग्रन्थ प्राप्त है, किन्तु इसका कहीं भी उल्लेख नहीं मिलता । अन्त में एक ग्रन्थ का मात्र उल्लेख ही प्राप्त होता है किन्तु ग्रन्थ अप्राप्त है । इस प्रकार गोस्वामी हरिराय जी के सहस्राधिक पदों के अतिरिक्त सत्रह पद्य ग्रन्थों का विवरण दिया गया है ।

उपर्युक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि गोस्वामी हरिराय जी बहुमुखी काव्य-प्रतिभा के धनी थे । उनके काव्य में भक्ति तथा शृंगार के विविध पक्षों को चित्रित किया गया है । गोस्वामी हरिराय जी की काव्य कृतियों में अधिकांशत: भक्ति-परक रचनाएँ हैं । जहाँ उन्होंने शृंगार - वर्णन में लेखनी उठाई है, वहाँ भी भक्ति का प्रश्रय उन्हें ग्रहण करना पड़ा है ।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि गोस्वामी हरिराय जी जितने कुशल गद्यकार थे उतने ही भावुक कवि भी थे। आध्यात्म क्षेत्र के विभिन्न कोणों पर उन्होंने अपनी लेखनी उठाई, जिससे गद्य-पद्य-मय अनेक ग्रन्थ-रत्न निस्सृत हुए, जिनके वर्ण्य विषय की चर्चा हम अगले अध्याय में करेंगे। वहाँ इन ग्रन्थ-रत्नों के यथार्थ प्रकाश का अधिक अनुभव हो सकेगा !